सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 06, नई दिल्ली । सोमवार, 17 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

कष्ट सहने पर ही हमें अनुभव होता है और दर्द हो, तभी हम सीख पाते हैं।

03 रोहतक रोड का निरीक्षण करने पहुंचे लोक निर्माण विभाग मंत्री प्रवेश वर्मा
06 सपने सीमाओं से परे, एमबीबीएस दुविधा
08 श्री आईजी गौशाला में रंगारंग गेर नृत्य व होली महोत्सव सम्पन्न

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान (NIC) केंद्र द्वारा वाहन शुल्क और कर डेटा में कथित हेरफेर

संजय बाटला

नई दिल्ली। परिवहन विभाग के डेटा को संभालने वाली टीम के बारे में एक गंभीर मामले की जानकारी प्राप्त हुई जिसके लिए आपको अवगत कराना जरूरी है। जांच में यह पाया गया है कि एप्लिकेशन में दिए गए एक पेज के माध्यम से वाहनों के शुल्क और करों में हेराफेरी की जा रही है, जिसका उपयोग प्रोजेक्ट को संभालने वाले राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्रों की डेवलपर्स टीम द्वारा वाहन शुल्क और करों और डेटाबेस में अन्य हेराफेरी को अपडेट करने के लिए किया जा रहा है। यह सब देश के आम नागरिकों का शोषण करने और संबंधित सरकारों को राजस्व हानि पहुँचाने की सांठगांठ है। *यह पेज सीधे डेटाबेस में अपडेट होता है। राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्रों की डेवलपर्स टीम बर्प सूट और जैप का उपयोग करके वेबपेज तक पहुंच कर यह सब कर रहे और वह सभी सक्षम है और यह दिखाता है कि सिस्टम कितना कमजोर है।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

नए यमुना रेल ब्रिज का पूरा हुआ निर्माण, लेगा अंग्रेजों के जमाने से खड़े लोहे के पुल की जगह

यह पुल 168 साल से यमुना के पुराने लोहे के पुल की जगह लेगा। इसके चालू होने से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से आनंद विहार के रास्ते गाजियाबाद के बीच रेल ट्रैफिक में सुधार होगा।

नई दिल्ली। वर्षों के इंतजार के बाद आखिरकार नए यमुना रेल ब्रिज का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है। मुख्य जांच संरक्षा आयुक्त (सीआरएस) के निरीक्षण के बाद इस ब्रिज से ट्रेनों का संचालन शुरू कर दिया जाएगा।

सिग्नलिंग सिस्टम का काम पूरा

यह पुल 168 साल से यमुना के पुराने लोहे के पुल की जगह लेगा। इसके चालू होने से पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से आनंद विहार के रास्ते गाजियाबाद के बीच रेल ट्रैफिक में सुधार होगा। यमुना में बाढ़ की स्थिति आने पर भी ट्रेनों का संचालन बाधित नहीं होगा। उत्तर रेलवे के अधिकारियों के अनुसार पुल का काम पूरा हो चुका है। सिग्नलिंग सिस्टम को भी पूरा कर लिया गया है। अब सिर्फ टेक्निकल और सीआरएस इंस्पेक्शन बाकी है। सीआरएस जल्द ही इस पुल का निरीक्षण करेंगे। उनसे एनओसी मिलते ही नए ब्रिज पर ट्रेनों का परिचालन शुरू कर दिया जाएगा।

दिल्ली-गाजियाबाद के बीच बेहतर होगी रेल यातायात

रेलवे ने इस वित्तीय वर्ष से पहले इस ब्रिज को शुरू करने का लक्ष्य रखा है। नए ब्रिज से दिल्ली और गाजियाबाद के बीच रेल यातायात बेहतर होने के साथ ही भीड़ कम होगी और ट्रेनों की संख्या में भी इजाफा होगा। इसके अलावा दिल्ली से यूपी के रास्ते बिहार-बंगाल की तरफ जाने वाली ट्रेनों को और अधिक रफ्तार मिल जाएगी। पुराने पुल से नया पुल करीब 30 मीटर ऊंचा है।

14 स्पैन पर खड़ा है नया पुल

इस पुल में कुल 14 स्पैन हैं, जिसमें अलग-अलग तरह के गर्डर बने हैं। आने और जाने वाला ट्रैक अलग-अलग गर्डरों पर बना है। ब्रिज का निर्माण गाजियाबाद छोर पर 1180 मीटर और दिल्ली छोर पर 135 मीटर है। दोनों छोर पर रेल अंडर ब्रिज तैयार किया गया है। ब्रिज के निर्माण में कुल 6,900 मीट्रिक टन स्टील का उपयोग हुआ है। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, 226.73 करोड़ की अनुमानित लागत है। शुरू में इसकी अनुमानित लागत 137 करोड़ रुपये थी।

दिल्ली से शाहदरा के रास्ते गाजियाबाद जाती हैं ट्रेनें

पुराने लोहे के पुल से ट्रेनें पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से शाहदरा के रास्ते गाजियाबाद जाती हैं। इस पुल पर रेल लाइन के नीचे सड़क मार्ग है। 1867 में अंग्रेजों ने इस पुल का निर्माण किया था। इसकी आयु (80 वर्ष) 1947 में ही पूरी हो चुकी है। इसके बावजूद दूसरा विकल्प नहीं होने के कारण अभी भी इस पुल से ट्रेनों की आवाजाही होती है। रेलवे की शब्दावली में 'ब्रिज नंबर 249' के नाम से पहचाना जाने वाला पुराना यमुना ब्रिज दिल्ली-गाजियाबाद सेगमेंट पर स्थित है।

हवाई अड्डे तक नॉन स्टॉप कनेक्टिविटी

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली में भाजपा सरकार बनने के बाद केंद्र और राज्य ने 14 किमी लंबा एलिवेटेड कॉरिडोर बनाने का फैसला किया है, जो रिंग रोड की भीड़ को कम करेगा और हवाई अड्डे तक नॉन स्टॉप कनेक्टिविटी देगा। दिल्ली में करीब 11 साल तक सत्ता में रहने के बाद अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी बेदखल हो चुकी है। लंबे समय बाद भाजपा की सरकार बनी है। अब केंद्र और राज्य दोनों जगहों पर एक ही पार्टी की सरकार है। ऐसे में अब दोनों सरकारें मिलकर बुलेट ट्रेन की रफ्तार से फैसले ले रही हैं। इसी क्रम में दिल्ली वालों को एक बड़ा गिफ्ट मिला है। बीते चार साल से दिल्ली की आप सरकार केंद्र सरकार से यह फैसला नहीं करवा पाई थी। इस फैसले से दिल्ली खासकर दक्षिणी दिल्ली के लोगों की बल्ले-बल्ले हो जाएगी। केंद्र और दिल्ली की सरकार ने मिलकर एक बड़ा फैसला लिया है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) आईएनए और नेल्सन मंडेला मार्ग, वसंत कुंज के बीच एक एलिवेटेड कॉरिडोर बनाएगा, जो रिंग रोड की भीड़भाड़ को कम करने के लिए चार साल पहले सोचा गया था। सूत्रों के अनुसार, इस परियोजना के लिए पैसा दिल्ली सरकार और शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा किया जाएगा। एनएचएआई नेल्सन मंडेला मार्ग और शिव मूर्ति इंटरचेंज के बीच एक सुरंग भी बनाएगा, जो इंदिरा गांधी हवाई अड्डे तक नॉन स्टॉप कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। इस कॉरिडोर के बनने से पूर्वी और दक्षिण दिल्ली से आने वाला ट्रैफिक बिना रुके हवाई अड्डे तक जा सकेगा।

14KM लंबी होगी एलिवेटेड रोड प्रस्तावित एलिवेटेड कॉरिडोर की कुल लंबई 14 किमी होगी। यह जो रिंग रोड के साथ सरकारी आवासीय और वाणिज्यिक परिसरों से गुजरेगा। जुलाई 2021 में केंद्र सरकार ने इसकी मंजूरी दी थी। सीपीडब्ल्यूडी को विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने और इसे लागू करने का काम सौंपा गया था, लेकिन परियोजना को पब्लिक इनवेस्टमेंट बोर्ड की मंजूरी नहीं मिली थी। इस महीने की शुरुआत में पीएमओ में एक बैठक में दिल्ली में सड़कों की भीड़भाड़ को कम करने से संबंधित मामलों पर चर्चा की गई, जहां शीर्ष सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के अधिकारियों ने सुझाव दिया कि एनएचआईए इस परियोजना का निर्माण कर सकता है। पहले के अनुमान के अनुसार, इस परियोजना की लागत 4,500 करोड़ रुपये थी। केंद्रीय सड़क परिवहन सचिव वी उमाशंकर ने तब एक बैठक की, जिसमें एनएचएआई, दिल्ली सरकार और राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम के अधिकारी शामिल हुए थे अब अंतिम डीपीआर के बाद लागत का निर्धारण किया जाएगा। दिल्ली पीडब्ल्यूडी के अनुमानों के अनुसार, हर दिन लगभग 1.3 लाख वाहन एम्स क्रॉसिंग से गुजरते हैं और लगभग 3.3 लाख वाहन रोजाना भीकाजी कामा फ्लाईओवर के बीच चलते हैं। इस एलिवेटेड रोड से ट्रैफिक जाम की समस्या से भी छुटकारा मिलेगा।

पर्यावरण पाठशाला : खेतों में आग से बचाव के लिए किसानों की ज़िम्मेदारी

डॉ. अंकुर शरण

खेती सिर्फ़ एक व्यवसाय नहीं, बल्कि हमारी मेहनत, परिश्रम और प्रकृति का आशीर्वाद है। लेकिन अक्सर, एक छोटी सी लापरवाही किसानों की मेहनत पर पानी फेर सकती है। गर्मियों के मौसम में और विशेष रूप से जब फसल पक कर कटाई के लिए तैयार होती है, तब ज़रा सी चिंगारी भी बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।

⚠ आग लगने के मुख्य कारण ⚠

✓ बिजली के ट्रांसफार्मर या खुले तारों से निकलने वाली चिंगारी
✓ खेतों में फैले सूखे पत्ते, घास और खरपतवार
✓ बीड़ी, सिगरेट या माचिस की लापरवाही
✓ हार्वेस्टर मशीन से निकलने वाली चिंगारी
✓ तेज़ हवा के साथ बिजली गिरने की घटनाएं

खेतों को आग से बचाने के उपाय

✓ ट्रांसफार्मर के आसपास सफाई: खेतों में लगे ट्रांसफार्मर और बिजली के पोल के पास 10x10 फीट तक साफ-सफाई बनाए रखें ताकि शॉर्ट सर्किट या स्पार्किंग से आग न लगे।

✓ फसल के चारों ओर फ़ायर लाइन: अपने खेत के चारों तरफ़ 5-6 फीट चौड़ी खाली जगह (फ़ायर लाइन) बनाएं, ताकि आग फैलने से रोकी जा सके।

✓ पानी और मिट्टी की व्यवस्था: खेतों के किनारे पर पानी के ड्रम या मिट्टी की बाल्टियां रखें, ताकि ज़रूरत पड़ने पर तुरंत आग बुझाई जा सके।

✓ सामूहिक सुरक्षा योजना: गाँव के सभी किसान एक-दूसरे के खेतों की निगरानी करें और फायर अलर्ट सिस्टम या लोकल फ़ायर ब्रिगेड से संपर्क का नंबर हमेशा अपने पास रखें।

✓ फसल कटाई के बाद अवशेष न जलाएं: खेतों में बचे फसल अवशेष (पराली) जलाने से न सिर्फ़ पर्यावरण को नुकसान होता है, बल्कि यह आग फैलने का भी बड़ा कारण बनता है। पराली को उर्वरक के रूप में इस्तेमाल करें या कृषि यंत्रों से प्रबंधन करें।

✓ फसल बीमा योजना का लाभ लें: आग या अन्य प्राकृतिक आपदाओं से बचाव के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी सरकारी योजनाओं का लाभ उठाएं ताकि नुकसान की भरपाई की जा सके।

तकनीक का उपयोग करें

☞ मोबाइल पर मौसम और बिजली विभाग के अपडेट लेते रहें।
☞ खेतों में सीसीटीवी कैमरे या सेंसर आधारित अग्निशमन उपकरण लगवाएं।
☞ आग से बचाव के लिए आधुनिक कृषि यंत्रों का सही तरीके से उपयोग करें।

मिलकर करें सुरक्षा की पहल

खेती केवल किसानों की ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज की धरोहर है। आइए, पर्यावरण पाठशाला के इस अभियान में जुड़ें और अपने खेतों, गांवों और पर्यावरण को आग से बचाने के लिए जागरूकता फैलाएं। "सुरक्षित किसान, समृद्ध भारत !"

indiangreenbuddy@gmail.com

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय:- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

सुंदर,प्रेमी और खुश मिजाज होते हैं तुला राशि के जातक:

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक(इंजी.)

नक्षत्र मंडल में जब चंद्रमा का गोचर चित्रा के दूसरे चरण से लेकर विशाखा के तीसरे चरण पर्यन्त तक होता है तब तुला राशि होती है। तुला राशि एक पुरुष जाति,चर संज्ञक,वायु तत्व वाली,पश्चिम दिशा की स्वामी,शूद्र संज्ञक,क्रूर स्वभाव वाली और दिन बली मानी गई है।

तुला राशि के लोगो पर बुध,शुक्र,शनि और मंगल ग्रह का प्रभाव देखने को मिलता है। कुंडली में तुला राशि से नाभि के नीचे के अंगो का विचार किया जाता है।

गुण और स्वभाव: तुला राशि के जातकों की छवि अत्यंत सुंदर और मनमोहक होती है। इस राशि के लोग सामान्य आकृति के घुंघराले बालों वाले,दुबले पतले शरीर वाले किंतु लंबे होते हैं। यह आदर्शवादी,

बुद्धिमान,दूरदर्शी,प्रेरणा दायक और कामुक प्रवृति के होते हैं। कभी

कभी ये असहिष्णु ,हवाई पुलाव पकाने वाले,नखरे बाजी करने वाले होते हैं। तुला राशि के लोग शांति प्रिय और खुश मिजाज स्वभाव के होते हैं। ये जीवन में प्रेम को अधिक महत्व देते हैं।

कैरियर: तुला राशि के लोग अभिनेता,सिनेमा,निर्देशक,कलाकार, सलाहकार, ब्यूटिशन,जौहरी,रत्न व्यापारी,परफ्यूम उत्पादक, कॉस्मेटिक समान व्यापारी,फल,सब्जी,किराना दुकान,वकील, मैनेजर,मध्यस्थ,रबर उद्योग,वस्त्र उद्योग,परिवहन तथा शिक्षक आदि क्षेत्रों में कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोग: तुला राशि के लोगो को फोड़ा,फुंसी,मूत्ररोग,गुर्दे को पथरी, मधुमेह,नपुसकता,त्वचा रोग,एक्जिमा आदि रोगों से जूझ सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध,शुक्र और शनिवार

भाग्यशाली रंग : सफेद,लाल और संतरी

भाग्यशाली अंक :1,2,4,7

शुभ रत्न : हीरा

उपाय: तुला राशि के जातक को शुक्रवार का व्रत तथा माता लक्ष्मी जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक शुक्रवार को भगवान शिव का अभिषेक दही से करें और कपूर से आरती करें।

ऊंचे पहाड़ों पर ही क्यों बने है अधिकतर सिद्ध मंदिर, एक वैज्ञानिक रहस्य?

क्या अपने सोचा है की हिन्दू धर्म में अधिकतर बड़े सिद्ध धर्मस्थल ऊँचे पहाडो पर ही क्यों बने हुए है ? आखिर क्या है इसका रहस्य, आखिर क्यों सभी बड़े सिद्ध मंदिर, धर्म स्थल और सिद्ध स्थान ऊँचे पहाडो पर है और क्यों इन्हें साधारण मानवो से दूर रखने का प्रयास किया गया? आखिर यह स्थल मैदानी इलाको में भी तो हो ही सकते थे ? पहाड़ो पर ही अधिकतर सिद्ध मंदिर और शक्ति पीठ होने की पड़ताल की तो इसमें कई रहस्यमयी बातें सामने आई, जिससे एक एक कर इन रहस्यों की परते खुलती चली गयी । इसी विषय के कई जानकारों से जो बाते सामने आई है वह वास्तव में चौकाने वाली है, आइये जानते है क्या कहा है सिद्धो ने इस बारे में।

1. वास्तव में यह मंदिर नहीं अपितु साधना स्थल है। चौक गए ना ? सिद्दो के अनुसार यह कोई आम स्थल नहीं है जहाँ किसी मूर्ति की आराधना होती है अपितु यह ऐसे विशेष स्थल है जहाँ उस देवी/देवता की विशेष ऊर्जा अधिक मात्रा में प्रवाहित होती है, जिस कारण साधना में जल्दी सफलता मिलती है और कालांतर में यही स्थल लोगो के बीच में लोकप्रिय हुए और लोगो ने इसे मंदिर की तरह प्रयोग किया जिस कारण साधनात्मक पद्धितियां लुप्त होती गयी।

2. शोर कोलाहल से दूर किसी भी साधना में अत्यधिक एकांत की आवश्यकता होती है और मैदानी इलाको में यह व्यवस्था नहीं है और क्योंकि पहाड़ी इलाको में जनसँख्या बहुत ही कम होती है अतः यहाँ साधना करने में सुविधा रहती है।

3. प्राक्रतिक उर्जा पहाड़ अपने आप में पिरामिड के आकर होते है जहाँ उर्जा का प्रवाह ज्यादा रहता है इसीलिए शक्ति साधको को साधनाओ में सफलता आसानी से मिलती है और जिस स्थान पर साधना सिद्ध होती है वही स्थान मंदिर की तरह पूजे जाने लगते है।

4. अनेक सिद्धों के स्थित होने का प्रभाव, ऊँचे पहाडो में कई सिद्ध भी वास करते है जिनका सम्बन्ध भी उस स्थान पर पड़ता है और कहते है न की जिधर भक्त होते है भगवान भी वहीँ वास करते है, जैसे केदारनाथ पूरी तरह से सिद्ध स्थल है जहाँ नर-नारायण ने तपस्या की थी और उसी कारण वहां मंदिर स्थापित हुआ।

5. प्रकृति के निकट प्रकृति के निकट होने और मानव जन से दूर होने के कारण पहाडो पर प्राकृतिक सफाई रहती है और प्रकृति के भी निकट रहा जा सकता है जिस कारण दैव प्रत्यक्षीकरण भी जल्दी होता है और जिधर दैव प्रत्यक्ष कर उसने वरदान लिया जाता है स्थान अपने आप मंदिर समान बन जाता है।

6. लम्बी एवं बड़ी साधनाओ के लिए उपयुक्त, वीरान और रहस्यमयी होने के कारण पहाड़ लम्बी और बड़ी साधनाओ में लिए अधिक उपयुक्त रहते है, जिधर सफलता के ज्यादा चांस भी रहते है।

7. दैव कारण शुरू से ही पहाडो को देवताओं की भ्रमण स्थली माना गया है और देवताओं का पहाडो में सूक्ष्म रूप से वास भी कहाँ गया है।

8. वरदान पुराणों में एतिहासिक रूप से वर्णित है की कई पहाडो को देव शक्तियों का निवास स्थल होने का वरदान भी प्राप्त है जिसके कारण कई पर्वत श्रृंखलाए वन्दि्नय भी है।

9. स्वास्थ्य कारक आपने देखा होगा की पहाडो पर रहने वालो का स्वास्थ्य, मैदानी इलाको में रहने वालो के मुकाबले ज्यादा मजबूत होता है और यही कारण है की ऐसे स्थानों पर अध्यात्म का विकास भी जल्दी होता है।

10. मौसम मैदानी इलाको में मौसम जल्दी जल्दी बदलता है लेकिन अधिकतर पहाड़ी स्थानों पर मौसम एक सा रहता है और यह एक सबसे बड़ी वजहों में से एक है की क्यों अधिकतर ऋषि मुनि पहाडो पर ही वास करते है, जिससे की उनका अधिकतर समय मौसम की प्रतिकूलता की तैयारी में ही नष्ट न हो जाएँ।

सनातन संस्कृति व परंपरा

सनातन संस्कृति व परंपरा के अनुसार हमारे यहां विवाह में गठबंधन करते समय वधू के पल्लू और वर के दुपट्टे में सिक्का (पैसा), पुष्प, हल्दी, दूर्वा और अक्षत, पांच चीजें बांधी जाती हैं, जिनका अपना-अपना महत्व है-:

सिक्का:- यह इस बात का प्रतीक है कि धन पर किसी एक का पूर्ण अधिकार नहीं होगा, बल्कि समान अधिकार रहेगा।

पुष्प:- प्रतीक है, प्रसन्नता और शुभकामनाओं का। दोनों सदैव हंसते-खिलखिलाते रहें। एक-दूसरे को देखकर प्रसन्न हों, एक-दूसरे की प्रशंसा करें।

हल्दी:- आरोग्य और गुरू का प्रतीक है। एक-दूसरे के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए प्रयत्नशील रहें। मन में कभी हीनता न आने दें। हल्दी छूने से रंग व सुगंध छूने वाले को चढ़ता है। अतः ज़रूरी निर्णय में आपसी परामर्श करें।

दूर्वा:- प्रतीक है कि कभी प्रेम भावना न मुरझाने देना। दूर्वा का जीवन तत्व कभी नष्ट नहीं होता। सूखी दिखने पर भी यह पानी में डालने पर हरी हो जाती है। ठीक इसी तरह दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए अटूट प्रेम और आत्मीयता बनी रहे।

अक्षत (चावल):- अन्नपूर्णा का प्रतीक है। जो अन्न कमाएं, उसे अकेले नहीं, बल्कि मिल-जुलकर खाएं और परिवार के प्रति सेवा और उत्तरदायित्व का लक्ष्य भी ध्यान में रखें।।

हमें अपनी श्रेष्ठ सनातन संस्कृति पर गर्व होना चाहिए क्योंकि हमारे यहां कल्याणकारी मंगल भावनाओं के साथ परंपराओं का निर्वहन किया जाता है।

सृष्टि सृजन का महापर्व है महाशिवरात्रि परमात्मा शिव, नंदी और भागीरथ का रहस्य

सबसे विचित्र बात तो यह है कि सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव की सवारी बूढ़े बैल अर्थात नन्दीगण को दिखाया जाता है। जो स्वयं सर्वशक्तिवान हो भला उसके लिए बैल की सवारी का क्या अर्थ है। इसका भी गहरा आध्यात्मिक महात्म्य है। परमात्मा शिव का अपना शरीर नहीं है। वह ज्योति बिंन्दु निराकार है। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच में अर्थात्पूरे कल्प के अन्त और नये कल्प के प्रारम्भ के समय परमात्मा नयी सृष्टि के सृजन के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेते हैं तथा नयी दुनिया की स्थापना के लिए सर्व आत्माओं को काम, क्रोध, लोभ, मोह छोड़ कर दैवी गुणों की धारणा की शिक्षा देते हैं। यह नन्दी गण बूढ़े बैल तो मात्र प्रतीक है परन्तु इसका अर्थ यह है कि परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा के बूढ़े तन का उपयोग सृष्टि को नया बनाने में करते हैं इसलिए शास्त्रों में वर्णित है कि परमात्मा बूढ़े बैल अर्थात नन्दी की सवारी करते हैं।

परमात्मा की इस सवारी को 'भागीरथ' भी कहते हैं। भागीरथ अर्थात 'भाग्यशाली रथ' जिसका उपयोग स्वयं परमात्मा के अवतरण के लिए होता है। इनसे भाग्यशाली और कौन कहा जा सकता है। इस समय परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा करा रहे हैं।

वर्तमान समय में शिवरात्रि की सार्थकता आज चारों तरफ अज्ञानता, अत्याचार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, हिंसा, व्यभिचार, अश्लीलता का बोलबाला है। मानवीयता दम तोड़ रही है। पूरी की पूरी दुनिया विनाश के मुहाने पर खड़ी है। इससे और ज्यादा धर्म ग्लानि और क्या हो सकती है। पूरी सृष्टि में भय का माहौल है। सभी मनुष्यात्मायें शांति और सुख की तलाश में दौड़ रही हैं। यह समूची सृष्टि के बदलाव का संकेत है। ऐसे में स्वयं परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर नये युग, नयी दुनिया की स्थापना का कार्य करा रहे हैं। अब समय की मांग है कि परमात्मा द्वारा दिये जा रहे महान कार्य में स्वयं को भागीदार बनायें। परमात्मा से मिलन मनाकर सुख-शान्ति का वर्सा प्राप्त करें। यह कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का समय है जिसमें परमात्मा का अवतरण हुआ है। इस सत्य को पहचान अपने जीवन को श्रेष्ठ बनायें। यही हमारी सच्ची-सच्ची शिवरात्रि होगी।

मनुष्य सबसे अधिक मृत्यु से भयभीत होता है। उसके प्रत्येक भय का अंतिम कारण अपनी या अपनों की मृत्यु ही होती है।

शव भय का प्रतीक है और शिव अभय का। उस भय से मुक्ति पा लेना ही शिव है। शिव किसी शरीर/रूपाकार मात्र का नाम नहीं है, शिव वैराग्य की उस चरम अवस्था का नाम है जब व्यक्ति मृत्यु की पीड़ा, भय और अवसाद से मुक्त हो जाता है। शिव होने का अर्थ है वैराग्य की उस ऊँचाई पर पहुँच जाना, जब किसी की मृत्यु कष्ट न दे, बल्कि उसे भी जीवन का एक आवश्यक/अनिवार्य हिस्सा मान कर, उसे पर्व की तरह समझा जाये। शिव जब शरीर में भभूत लपेट कर नाच उठते हैं, तो समस्त भयों / भौतिक गुणों-अवगुणों से मुक्ति का पथ-प्रदर्शन करते हैं, यही शिवत्व है।

श्रीलक्ष्मण मन्दिर खजुराहो

पंचायतन शैली का यह सांघार प्रसाद, विष्णु को समर्पित है। बलुवे पत्थर से निर्मित, भव्यः मनोहारी और पूर्ण विकसित खजुराहो शैली के मंदिरों में यह प्राचीनतम है। 98' लंबे और 85' चौड़े मंदिर के अधिष्ठान की जगती के चारों कोनों पर चार खूंटरा मंदिर बने हुए हैं। इसके ठीक सामने विष्णु के वाहन गरुड़ के लिए एक मंदिर था। गरुड़ की प्रतिमा अब लुप्त हो गयी है। वर्तमान में इस छोटे से मंदिर को देवी मंदिर के नाम से जाना जाता है। लक्ष्मण मंदिर से ही प्राप्त एक अभिलेख से पता चलता है कि चन्देल वंश की सातवीं पीढ़ी में हुए यशोवर्मण (लक्षवर्मा) ने अपनी मृत्यु से पहले खजुराहो में बैकुंठ विष्णु का एक भव्य मंदिर बनवाया था। इससे यह पता चलता है कि यह मंदिर 930- 950 के मध्य बना होगा, क्योंकि राजा लक्षवर्मा ने 954 में मृत्यु पायी थी। इसके शिल्प और वास्तु की विलक्षणताओं से भी यही तिथि उपयुक्त प्रतीत होती है। यह अलग बात है कि यह मंदिर विष्णु के बैकुंठ रूप को समर्पित है, लेकिन नामांकरण मंदिर निर्माता यशोवर्मा के उपनाम लक्षवर्मा के आधार पर हुआ है। शिल्प और वास्तु की दृष्टि से लक्ष्मण मंदिर खजुराहो के परिष्कृत मंदिरों में सर्वोत्कृष्ट है। इसके अर्द्धमंडप, मंडप और महामंडप की छतें स्तुपाकार हैं, जिसमें शिखरों का अभाव है। इस मंदिर- छतों की विशेषताएँ सबसे अलग है। कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :- इसके मंडप और महामंडप की छतों के पीढ़े खपरों की छाजन के समान है। महामंडप की छत के पीढ़ो के सिरों का अलंकरण अंजलिबद्ध नागों की लघु आकृतियों से किया गया है। मंडप की छत पर लटकी हुई पत्रावली के साथ कलश का किरिट है। इस मंदिर के मंडप और महामंडप की छतें स्तूपाकार है। मंदिर के महामंडप में स्तंभों के ऊपर अलंवन बाहुओं के रूप में अप्सराएँ शिल्प कला की अनुपम कृतियाँ हैं। इस मंदिर की मूर्तियों की तरंगायित शोभा गुप्ताशैली से प्रभावित है। मंदिर के कुछ स्तंभों पर बेलबूटों का उत्कृष्ट अलंकन है। मंदिर के मकर तोरण में योद्धाओं को बड़ी कुशलता से अंकित किया गया है। खजुराहो के मंदिरों से अलग, इस देव प्रासाद की कुछ दिग्पाल प्रतिमाएँ द्विभुजी है और गर्भगृह के द्वार उत्तीर्ण कमलपात्रों से अलंकृत किया गया है। इस मंदिर के प्रवेश द्वार के सिरदल एक दूसरे के ऊपर दो स्थूल सज्जापट्टियाँ हैं। निचली सज्जापट्टी के केन्द्र में लक्ष्मी की प्रतिमा है। इसके दोनों सिरों के एक ओर ब्राह्मण तथा दूसरी ओर शिव की प्रतिमा अंकित की गयी है। इसमें राहू की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ स्थापित हैं। द्वार शाखाओं पर विष्णु के विभिन्न अवतारों का अंकन हुआ है। गर्भगृह में विष्णु की त्रिमुख मूर्ति प्रतिष्ठित है। मंदिर के जंघा में अन्य मंदिरों की तरह एक- दूसरे के समानांतर मूर्तियों दो बंध है। इनमें देवी- देवताओं, शार्दूल और सुर- सुंदरियों की चित्ताकर्षक तथा लुभावनी मूर्तियाँ हैं। मंदिर की जगती पर मनोरंजक और गतिशील दृश्य अंकित किया है। इन दृश्यों में आखेट, युद्ध के दृश्य, हाथी, घोड़ा और पैदल सैनिकों के जुलूस, अनेक परिवारिक दृश्यों का अंकन मिलता है।

'समर्थन' और 'विरोध' केवल 'मत' और 'विचारों' का होना चाहिए व्यक्ति विशेष का नहीं

जीवन में कुछ भी स्थाई नही है इसलिए स्वयं को अधिक तनावग्रस्त न करें क्योंकि परिस्थितियां चाहे कितनी भी खराब हों बदलेगी जरूर। जिन्दगी में मौका और धोखा देने वाले दोनों मिलेंगे जो मौका दे उसे कभी धोखा मत दो और जो धोखा दे उसे कभी मौका मत दो। अनावश्यक विवादों पर मौन हो जाना कमजोरी का नहीं बल्कि मज़बूत स्वनियंत्रण का प्रतीक है। क्रोध आने पर चिल्लाने के लिए कोई ताकत नहीं चाहिए। मगर क्रोध आने पर चुप रहने के लिए बहुत ताकत चाहिए।

सीताराम सीताराम सीताराम कहिए जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहि

भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी

चतुर्थी व्रत बहुत मंगलकारी माना जाता है। यह भगवान गणेश की पूजा के लिए समर्पित है। चतुर्थी एक महीने में दो बार कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष में आती है। विनायक चतुर्थी शुक्ल पक्ष के दौरान और संकष्टी चतुर्थी कृष्ण पक्ष के दौरान आती है। हर संकष्टी चतुर्थी का अपना अलग नाम और महत्व है। इस बार भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी चैत्र माह के कृष्ण पक्ष यानी 17 मार्च 2025 को मनाई जाएगी। कहते हैं कि इस दिन भगवान गणेश की विधिपूर्वक पूजा करने से सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती है।

भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी कब है ? हिंदू पंचांग के अनुसार, चैत्र महीने के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि की शुरुआत 17 मार्च को रात 07 बजकर 33 मिनट पर होगी। वहीं इसकी समाप्ति 18 मार्च को रात 10 बजकर 09 मिनट पर होगी। इस दिन चंद्रोदय के समय पूजा का विधान है। ऐसे में 17 मार्च को भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी मनाई जाएगी।

पूजा विधि सुबह जल्दी उठें और पवित्र स्नान करें। अपने घर और पूजा कक्ष को अच्छी तरह साफ करें। एक चौकी लें उसपर भगवान गणेश की मूर्ति स्थापित करें।

देसी घी का दीपक जलाएं, पीले फूलों की माला अर्पित करें।

तिलक लगाएं, मोदक या मोतीचूर के लड्डू का भोग लगाएं फिर दूर्वा घास अर्पित करें। गणेश जी के इस मंत्र "ॐ भालचंद्राय नमः" का 108 बार जाप करें।

भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी व्रत कथा का पाठ करें। आखिरी में भव्य आरती करें।

भगवान गणेश का आशीर्वाद लें और जीवन से सभी कष्टों को दूर करने की प्रार्थना करें। पूजा पूरी होने के बाद घर व अन्य लोगों में प्रसाद बांटें।

भालचंद्र संकष्टी चतुर्थी के दिन इन बातों का रखें ध्यान इस दिन सच्चे मन से भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करें।

अन्न और धन का मंदिर या गरीब लोगों में दान करें। व्रत से जुड़े नियम का पालन करें। गणेश चालीसा और मंत्रों का जप करें।

वैष्णो देवी की 3 पिंडियों का रहस्य , जानिए इसके पीछे छिपे पौराणिक कहानी

भारत के खूबसूरत जम्मू और कश्मीर राज्य में उधमपुर ज़िले में कटरा से 12 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है 'माता वैष्णो देवी मंदिर'। जिस पहाड़ी पर यह मंदिर बना है उस पहाड़ी को ही वैष्णो देवी पहाड़ी के नाम से जाना जाता है। सुंदर वादियों में बसे इस मंदिर तक पहुंचने की यात्रा काफी कठिन है लेकिन कहते हैं 'पहाड़ों वाली माता' के एक बुलावे पर उसके भक्त आस्था और विश्वास की शक्ति के साथ इस यात्रा को सफल करके दिखाते हैं। माना जाता है यहां आने वाले निर्बलों को बल, नेत्रहीनों को नेत्र, विद्याहीनों को विद्या, धनहीनों को धन और संतानहीनों को संतान का वरदान प्रदान करती है पहाड़ों वाली माता। माता के इस चमत्कारी प्रभाव के साथ इस धार्मिक स्थल की प्रत्येक बात कुछ कहती है। ना केवल यह स्थल,आदिशक्ति से जुड़ी पौराणिक कथा, इस मंदिर की संरचना का कारण एवं मंदिर में रखी तीन पिंडियां सभी का रहस्य अति रोचक है। माता से जुड़ी एक पौराणिक कथा बहुत प्रसिद्ध है जो माता के एक भक्त श्रीधर से जुड़ी है। इस कथा के अनुसार वर्तमान कटरा क़स्बे से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित हंसाली गांव में मां वैष्णवी के परम भक्त श्रीधर रहते थे, जो कि निःसंतान थे। संतान ना होने का दुख उन्हें पल-पल सताता था। इसलिए एक दिन नवरात्रि पूजन के लिए कुंवारी कन्याओं को बुलवाया। अपने भक्त को आशीर्वाद देने के लिए मां वैष्णो भी कन्या वेश में उन्हीं के बीच आ बैठीं। पूजन के बाद सभी कन्याएं तो चली गईं पर मां वैष्णों देवी वहीं रहीं और श्रीधर से बोलीं, "सबको अपने घर भंडारे का निमंत्रण दे आओ। श्रीधर पहले तो कुछ दुविधा में पड़ गए। एक गरीब इंसान इतने बड़े गांव को भोजन कैसे खिला सकता था। लेकिन

कन्या के आश्वासन पर उसने आसपास के गांवों में भंडारे का संदेश पहुंचा दिया। साथ ही वापस आते समय बीच रास्ते में श्रीधर ने गुरु गोरखनाथ व उनके शिष्य बाबा भैरवनाथ को भी भोजन का निमंत्रण दे दिया। श्रीधर के इस निमंत्रण से सभी गांव वाले अचंभित थे, वे समझ नहीं पा रहे थे कि वह कौन सी कन्या है जो इतने सारे लोगों को भोजन करवाना चाहती है? लेकिन निमंत्रण के अनुसार सभी एक-एक करके श्रीधर के घर में एकत्रित हुए। तब कन्या के स्वरूप में वहां मौजूद मां वैष्णो देवी ने एक विचित्र पात्र से सभी को भोजन परोसना शुरू किया। भोजन परोसते हुए जब वह कन्या बाबा भैरवनाथ के पास गई तो उसने कन्या से वैष्णव खाने की जगह मांस भक्षण और मदिरापान मांगा। लेकिन यह तो संभव नहीं था, फलस्वरूप कन्या रूपी देवी ने उसे समझाया कि यह ब्राह्मण के यहां का भोजन है, इसमें मांसाहार नहीं किया जाता। किन्तु भैरवनाथ तो हठ करके बैठ गया और कहने लगा कि वह तो मांसाहार भोजन ही खाएगा। लाख मनाने के बाद भी वे ना माने। बाद में जब भैरवनाथ ने उस कन्या को पकडना चाहा, तब मां ने उसके कपट को जान लिया और तुरंत ही वे वायु रूप में बदलकर त्रिकूटा पर्वत की ओर उड़ चलीं। भैरवनाथ भी उनके पीछे गया। कहते हैं जब मां पहाड़ी की एक गुफा के पास पहुंचीं तो उन्होंने हनुमानजी को बुलाया और उनसे कहा कि मैं इस गुफा में नौ माह तक तप करूंगी, तब तक आप भैरवनाथ के साथ खेलें। आज्ञानुसार इस गुफा के बाहर माता की रक्षा के लिए हनुमानजी ने भैरवनाथ के साथ नौ माह खेले। आज के समय में इस पवित्र गुफा को 'अर्धक्वाँरी' के नाम से जाना जाता है। कहते हैं उस दौरान हनुमानजी को प्यास लगी तब माता ने उनके आग्रह पर धनुष से पहाड़ पर बाण चलाकर एक जलधारा निकाली और उस जल में अपने केश धोए। आज यह पवित्र जलधारा 'बाणगंगा' के नाम से जानी जाती है। जब भी भक्त माता के दर्शन के लिए आते हैं तो इस जलधारा में स्नान अवश्य करते हैं। जलधारा के जल को अमृत माना जाता है। कथा के अनुसार हनुमानजी ने गुफा के बाहर भैरवनाथ से युद्ध किया लेकिन जब वे निढाल होने लगे तब माता वैष्णवी ने महाकाली का रूप लेकर भैरवनाथ का संहार कर दिया। भैरवनाथ का सिर कटकर भवन से 8 कि. मी. दूर त्रिकूट पर्वत की भैरव घाटी में गिरा। उस स्थान को भैरोनाथ के मंदिर के नाम से जाना जाता है। कहते हैं क्षमा मांगने पर माता ने भैरवनाथ को ऊंचा स्थान प्रदान किया और कहा कि 'जो कोई भी मेरे दर्शन करने इन खूबसूरत वादियों में आएगा, वह तत्पश्चात तुम्हारे दर्शन भी जरूर करेगा अन्यथा उसकी यात्रा पूरी नहीं कहलाएगी। यही कारण है कि आज भी लोग माता के दर्शन के बाद बाबा भैरवनाथ के मंदिर जरूर जाते हैं। मान्यतानुसार भैरवनाथ को मोक्ष दान देने के बाद वैष्णो देवी ने तीन पिंड (सिर) सहित एक चट्टान का आकार ग्रहण किया और सदा के लिए ध्यानमग्न हो गईं। इस बीच पंडित श्रीधर भी अधीर हो गए। उन्हें सपने में त्रिकुटा पर्वत दिखाई दिया और साथ ही माता की तीन पिंडियां भी, जिनकी खोज करते हुए वह पहाड़ी पर जा पहुंचे। पिंडियां मिलने पर उन्होंने सारी ज़िंदगी विधिपूर्वक उन 'पिंडों' की पूजा की। उनसे प्रसन्न होकर देवी उनके सामने प्रकट हुईं और उन्हें आशीर्वाद दिया। तब से श्रीधर और उनके वंशज ही देवी मां वैष्णो देवी की पूजा करते आ रहे हैं। माता के इन तीन पिंडों का चमत्कारी प्रभाव भी रोचक है। यह आदिशक्ति के तीन रूप माने जाते हैं - पहली पिंडी मां महासरस्वती की है, जो ज्ञान की देवी हैं; दूसरी पिंडी मां महालक्ष्मी की है, जो धन-वैभव की देवी हैं और तीसरी पिंडी मां महाकाली को समर्पित है, जो शक्ति का रूप मानी जाती हैं। इन तीन पिंडों का मनुष्य के जीवन से गहरा रिश्ता है। जीवन को सफल बनाने के लिए विद्या, धन और बल तीनों ही जरूरी होते हैं, इसलिए इन्हें हासिल करने के लिए भक्त कठोर परिश्रम कर, पहाड़ियों की यात्रा पूर्ण करता हुआ माता के दरबार में पहुंचता है। जो जितने उत्साह से इस यात्रा को पूरा करता है, माता का आशीर्वाद उतना ही उस पर बढ़ता चला जाता हैं।

रोहतक रोड का निरीक्षण करने पहुंचे लोक निर्माण विभाग मंत्री प्रवेश वर्मा

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। सीएम रेखा गुप्ता ने कहा, "हमने गाद निकालने की जिम्मेदारी सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण विभाग को दी है। हमें सुनिश्चित करना है कि बारिश के मौसम में जलभराव न हो। काम युद्ध स्तर पर किया जा रहा है। हम विधायकों से नालों, सीवेज की सफाई के बारे में किए जा रहे कामों के बारे में लिखित में पूछेंगे।"

वहीं, रोहतक रोड का निरीक्षण करने पहुंचे लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) मंत्री प्रवेश वर्मा ने शनिवार को अधिकारियों को 115 करोड़ रुपये की ड्रेनेज परियोजना का काम समय पर पूरा करने के निर्देश दिए।

इलाके में ड्रेनेज का काम शुरू हो चुका

निरीक्षण के दौरान प्रवेश वर्मा ने सड़क की खस्ता हालत पर चिंता जताते हुए कहा कि रोहतक रोड की हालत बेहद खराब है और पिछले दिनों जनप्रतिनिधियों ने भी स्थानीय लोगों की समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि इलाके में ड्रेनेज का काम शुरू हो चुका है और पूरी सड़क को राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को सौंप दिया गया है।

आवश्यक स्वीकृतियों की प्रक्रिया जल्द पूरी

हरियाणा को दिल्ली से जोड़ने वाला यह एक महत्वपूर्ण मार्ग है और यह पुनर्विकास परियोजना पीरागढ़ी चौक से लेकर टिकरी बॉर्डर तक कुल 18 किलोमीटर के क्षेत्र को कवर करेगी। परवेश वर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे सभी आवश्यक स्वीकृतियों की प्रक्रिया जल्द पूरी करें ताकि परियोजना में अनावश्यक देरी न हो।

ड्रेनेज परियोजना का काम तय

उन्होंने कहा कि अनुमति में देरी से परियोजना की लागत बढ़ जाती है, इसलिए काम को तेजी से पूरा करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। प्रवेश वर्मा ने आश्वासन दिया कि रोहतक रोड और ड्रेनेज परियोजना का काम तय समय सीमा के भीतर पूरा कर लिया जाएगा, जिससे दिल्ली और हरियाणा के बीच यातायात में आसानी होगी। मंत्री ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता बनाए रखने पर भी जोर दिया।

उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि "हम ऐसी सड़कें और ड्रेनेज सिस्टम बना रहे हैं जो सालों तक टिकेंगे। अगर निर्माण की गुणवत्ता में कोई कमी पाई गई तो ठेकेदार को ब्लैक लिस्टेड किया जाएगा और संबंधित अधिकारियों को निलंबित किया जाएगा।"

खेदपूर्ण है की दिल्ली में इमानदारी का ढोल फटने के बाद अब अरविंद केजरीवाल पंजाब में भी वो ही सब कहानी दोहरा रहे हैं : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता,/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की धीरे धीरे साफ हो रहा है की दिल्ली से नाकारे जाने के बाद अरविंद केजरीवाल को अब पंजाब की राजनीति से भी बाहर होने का डर सता रहा है और इसलिए वह अब पंजाब में डेरा डालने की तैयारी कर रहे हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली में दर्जनों घोटालों में घिरे अरविंद केजरीवाल 5 फरवरी 2025 को चुनाव के आख़िरी क्षण तक अपनी इमानदारी का ढोल पीटते रहे पर 10 साल में उनके भ्रष्टाचार को समझ चुके दिल्ली वालों ने उनकी विदाई सुनिश्चित कर दी।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की खेदपूर्ण है की दिल्ली में इमानदारी का ढोल फटने के बाद अब अरविंद केजरीवाल पंजाब में भी वो ही सब कहानी दोहरा रहे हैं।

सचदेवा ने कहा है की आज अरविंद केजरीवाल एवं पंजाब के मुख्य मंत्री सरदर भगवंत मान जब मीडिया से नशे एवं भ्रष्टाचार पर बोल रहे थे तो जान रहे थे की सुनने वाले उन पर हंस रहे हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की केजरीवाल जब पंजाब के लोगों से आज फिर नशा एवं भ्रष्टाचार दूर करने का वादा कर रहे थे तो उस समय पंजाब के लोग 2021 के केजरीवाल एवं भगवंत मान के वो भाषण याद कर रहे थे जब दोनों पंजाब के लोगों से सत्ता में आने के 6 माह में पंजाब को नशा मुक्त करने का वादा करते थे पर आज 3 साल बाद फिर समय मांग रहे हैं।

केजरीवाल को आज पंजाब को शीध्र भ्रष्टाचार मुक्त करने का वादा करते देख पंजाब एवं दिल्ली की ही नही देश भर की जनता हत्प्रभ रह गई क्योंकि गत 3 साल से केजरीवाल तो सारे देश में घूम घूम कर दिल्ली एवं पंजाब में इमानदार सरकार चलाने का दावा करते रहे हैं।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा है की केजरीवाल समझ लें की दिल्ली विधानसभा चुनाव में जनता ने जो सजा खुद उन्हे हरा कर दी वो ही सजा 2027 में पंजाब की जनता सरदार भगवंत मान को देगी और उन्हे हराकर पूरे देश को 'आप' की आपदा से मुक्त करेगी।

दिल्ली में आगामी सप्ताह से प्रारम्भ होगा संगठन पर्व : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली भाजपा की संगठनात्मक पुनर्गठन की प्रक्रिया जिसे हम संगठन पर्व के रूप में देखते हैं वह आगामी सप्ताह से प्रारम्भ होगी।

इस हेतू राष्ट्रीय चुनाव अधिकारी ने दिल्ली के लिए महेंद्र नागपाल को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया है और साथ ही दो सह चुनाव अधिकारी डा. योगेश आत्रेय एवं विजय सोलंकी को भी नियुक्त किया है।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की भाजपा सामूहिक नेतृत्व से चलने वाली पार्टी है पर इसी के हम पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र भी सुनिश्चित करते हुए हर कार्यकर्ता को संगठनात्मक संरचना से जुड़ने का अवसर देते हैं।

सचदेवा ने कहा की संगठनात्मक संरचना प्रक्रिया के अंतर्गत बूथ समिति, मंडल समिति, जिला समिति से होते हुए प्रदेश समिति तक का चुनाव अवसर दिया जायेगा पर साथ ही जहां कार्यकर्ता चाहेंगे वहां समन्वय से भी समिति गठन हो सकेगा।

श्री हरमंदिर साहिब में मत्था टेक कर श्री गुरु साहिब के चरणों में सबकी खुशहाली, सुख-समृद्धि और उन्नति की प्रार्थना की- केजरीवाल

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली/पंजाब, आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने 10 दिन की विपश्यना के बाद रविवार को अपनी पत्नी सुनीता केजरीवाल के साथ अमृतसर पहुंचे और पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकार को तीन साल पूरे करने पर सचखंड श्री हरमंदिर साहिब में मत्था टेक कर उनका आशीर्वाद लिया। इस दौरान उनके साथ पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान भी अपने परिवार के साथ मौजूद रहे। अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर यह जानकारी साझा करते हुए कहा कि 10 दिन की विपश्यना साधना के बाद परिवार सहित अमृतसर पहुंचा। श्री हरमंदिर साहिब में मत्था टेका और गुरु महाराज जी के चरणों में सबकी खुशहाली, सुख-समृद्धि और उन्नति की प्रार्थना की।

मीडिया से बात करते हुए अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज आम आदमी पार्टी की पंजाब सरकार को तीन साल पूरे हो गए। 16 मार्च 2022 को सरदार भगवंत मान ने पंजाब के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली थी। आज हम श्री गुरुजी महाराज के दरबार में आकर उनका आशीर्वाद लिए कि तीन साल में उन्होंने हमारा मार्गदर्शन किया। हमें शक्ति दी कि हम लोगों की सेवा करते रहें ओर गुरुजी महाराज के बताए हुए रास्ते पर चलें। हमें गरीबों की सेवा करनी है। जिनके पास कुछ नहीं हैं, उनकी सेवा करनी है। लोगों को न्याय दिलाना है।

अरविंद केजरीवाल ने कहा कि आज पंजाब में सबसे बड़ी समस्या नशे और भ्रष्टाचार की है। नशे और भ्रष्टाचार दोनों के खिलाफ अब पंजाब के लोगों ने युद्ध छेड़ दिया है। एक साथ पंजाब के तीन करोड़ लोग मिलकर नशे वालों और भ्रष्टाचारियों के खिलाफ युद्ध छेड़ें हुए हैं। यह न्याय की लड़ाई है। हम श्री गुरुजी महाराज से आशीर्वाद लेकर आए हैं कि गुरुजी महाराज हमें रास्ता दिखाएं और हमें शक्ति दें कि इसी तरह हम लोगों की आगे भी सेवा करते रहें। हम राज नहीं चला रहे हैं, बल्कि लोगों की सेवा कर रहे हैं।

भगवंत मान ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने जो गारंटियां दी है और जिस सोच के साथ आम आदमी पार्टी बनाई थी, उसी सोच को कायम रखते हुए आम आदमी पार्टी की सरकार पंजाब में काम कर रही है। हमारी सरकार पूरी योजना बद्ध तरीके से नशा के विरुद्ध युद्ध चल रहा है। इसके साथ ही तहसील से लेकर कहीं पर भी अगर भ्रष्टाचार हो रहा है तो उसके खिलाफ भी युद्ध चल रहा है। हमारी सरकार लगातार युवाओं को सरकारी नौकरियां दे रही हैं। अभी तक 55 हजार से अधिक नौकरियां दे चुके हैं। बिजली, पानी समेत प्रकृति ने पंजाब को जो भी दिया है, उसका सही से इस्तेमाल करना है।

सीएम भगवंत मान ने एक्स पर कहा कि आज गुरु नगरी श्री अमृतसर साहिब में राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल के साथ सचखंड श्री हरमंदिर साहिब में माथा टेकने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरु साहिब के चरणों में शीश झुकाया और पंजाब तथा पंजाबियों के कल्याण के लिए प्रार्थना की। साथ ही, पंजाब में आम लोगों की सरकार के 3 साल पूरे होने पर परमात्मा का शुक्रिया अदा किया और गुरु साहिब के आगे यह कामना की कि इसी तरह नेक नीयत और ईमानदारी से लोगों के हित में फैसले लेते रहें।

प्रिय यंगिस्तान,

रंगों का यह खूबसूरत त्योहार हमारे दरवाजे पर दस्तक दे चुका है। होली सिर्फ रंगों से खेलकर मनाने का नाम नहीं, बल्कि रिश्तों में घुली मिठास, खुशियों का संचार और दिल खोलकर जीने का पर्व है। बचपन में जिस होली का इंतजार महीनों पहले से रहता था, क्या वही उत्साह अब भी हमारे भीतर है?

आज के दौर में हम सोशल मीडिया और डिजिटल दुनिया में इतने उलझ गए हैं कि त्योहारों की असली रौनक कहीं फीकी पड़ती जा रही है। होली के रंग पहले जहां चेहरे पर होते थे, अब केवल इंस्टाग्राम स्टोरीज़ और व्हाट्सएप स्टिकर्स तक सीमित हो गए हैं। लेकिन क्या होली का असली आनंद वर्चुअल दुनिया में संभव है?

युवा साथियों, त्योहारों का असली मतलब यही है कि हम अपनी व्यस्त जिंदगी से थोड़ा ब्रेक लें, अपनों के साथ समय बिताएं, खिलखिलाकर हंसें और जिंदगी के असली रंगों को महसूस करें। वैज्ञानिक रूप से भी यह साबित हो चुका है कि जब हम खुलकर हंसते हैं, दोस्तों के साथ समय बिताते हैं और खुशियों में शामिल होते हैं, तो हमारे दिमाग में ऐसे हार्मोन सक्रिय होते हैं जो तनाव को कम करते हैं और मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाते हैं।

यंगिस्तान, त्योहारों का असली मतलब सिर्फ एक दिन की खुशी नहीं, बल्कि जिंदगी के हर दिन को रंगीन और यादगार बनाना है। इस बार होली सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए भी मनाएं जो किसी कारणवश खुशियों से दूर हैं।

होली के असली रंगों में रंगें और डिजिटल दुनिया से बाहर आकर वास्तविक जीवन के रंगों को अपनाएं। जिंदगी हर पल रंगीन हो, खुशियों से भरी हो और मानसिक रूप से स्वस्थ हो – यही हमारी सच्ची होली होगी।

आपका,
अंकुर

महिला पुरस्कारों की गरिमा और निष्पक्षता पर उठते प्रश्न

प्रियंका सौरभ

हाल ही हरियाणा में महिला दिवस पर विवादित महिला का मुख्यमंत्री से सम्मान मामले ने गहरे प्रश्न सबके सामने रख दिए है। कई वर्षों से, महिला पुरस्कार मान्यता के चमकदार प्रतीक के रूप में खड़े हैं, जो उन क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों को उजागर करते हैं जहाँ उन्हें अक्सर दरकिनार कर दिया जाता है। ये सम्मान सिर्फ़ समावेशन के लिए एक प्रेरणा से कहीं ज़्यादा है; इनका उद्देश्य ऐसे समाज में उत्कृष्ट उपलब्धियों को सम्मानित करना है जो अक्सर महिलाओं के योगदान को अनदेखा करता था। हालाँकि, राजनीतिक प्रभावों और बदलते सांस्कृतिक दृष्टिकोणों से चुनौती के कारण इन पुरस्कारों की अखंडता अब जोखिम में है। महिला पुरस्कारों का भविष्य समाज की निष्पक्षता, मान्यता और समावेशिता के बीच संतुलन खोजने की क्षमता पर निर्भर करता है। ऐसे में ये महत्त्वपूर्ण है कि हम आगे चलकर महिला उपलब्धियों का सम्मान कैसे करते हैं।

महिला पुरस्कारों ने ऐतिहासिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों में महिला उपलब्धियों को स्वीकार करने और सम्मानित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। चाहे साहित्य, विज्ञान, खेल या फ़िल्मि हो, इन पुरस्कारों ने उन क्षेत्रों में आवश्यक मान्यता प्रदान की है जहाँ महिलाओं को अक्सर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हालाँकि, हमारे तेज़ी से बदलते सामाजिक और राजनीतिक माहौल में, इन पुरस्कारों का महत्त्व और आवश्यकता जांच के दायरे में आ रही है। अतीत में, महिला पुरस्कार उन क्षेत्रों में उत्कृष्टता की कड़ी मेहनत से स्वीकारोक्ति का प्रतिनिधित्व करते थे, जहाँ अक्सर महिला प्रतिभा को अनदेखा किया जाता था। वे सिर्फ़ समावेश के प्रतीक नहीं थे, बल्कि लचीलेपन, दृढ़ संकल्प और अग्रणी सफलता के प्रतीक थे। हालाँकि, आज, इन पुरस्कारों की अखंडता खोने का जोखिम है- महिलाओं की उपलब्धियों में गिरावट के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि उनकी मान्यता का मूल अर्थ धुंधला, राजनीतिकरण या पूरी तरह से खारिज हो रहा है।

ऐसे समय में जब समावेशिता को अपनाने का दावा किया जाता है, महिला पुरस्कारों का अनूठा उद्देश्य उल्टा जोखिम में है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि समानता के उद्देश्य वाले समाज में लिंग-विशिष्ट पुरस्कार अब मौजूद नहीं होने चाहिए। लेकिन क्या सच्ची समानता उन मंचों को ख़त्म करने से आती है जो कभी महिलाओं की आवाज़ को बुलंद करते थे? समान अवसर बनाने के बजाय, हम एक चिंताजनक प्रवृत्ति देख रहे हैं: महिलाओं के योगदान को सम्मानित करने के लिए डिज़ाइन किए गए पुरस्कारों का मिश्रण, पुनर्उद्देश्य या पूर्ण रूप से हटाना। आज के सांस्कृतिक परिवेश में, जहाँ प्रतिनिधित्व को अक्सर प्राथमिकता दी जाती है, कुछ पुरस्कारों ने सच्ची उपलब्धियों से ध्यान हटाकर केवल दिखावे पर ध्यान केंद्रित किया है।

> हमारे तेज़ी से बदलते सामाजिक और राजनीतिक माहौल में, महिला पुरस्कारों का महत्त्व और आवश्यकता जांच के दायरे में आ रही है। हाल ही हरियाणा में महिला दिवस पर विवादित महिला का मुख्यमंत्री से सम्मान मामले ने गहरे प्रश्न सबके सामने रख दिए है। आज के सांस्कृतिक परिवेश में, जहाँ प्रतिनिधित्व को अक्सर प्राथमिकता दी जाती है, कुछ पुरस्कारों ने सच्ची उपलब्धियों से ध्यान हटाकर केवल दिखावे पर ध्यान केंद्रित किया है। महिला पुरस्कारों को पुराने प्रतीक या दिखावटीपन के उपकरण नहीं बनने चाहिए। उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की विशिष्ट चुनौतियों और सफलताओं पर प्रकाश डालना जारी रखना चाहिए। महिलाओं के पुरस्कारों के लिए, संस्थानों को इन विशिष्ट सम्मानों की प्रतिष्ठा बढ़ाने का लक्ष्य रखना चाहिए। महिलाओं की उपलब्धियाँ समर्पित स्वीकृति की हकदार हैं-एक बाद की सोच के रूप में नहीं, बल्कि उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए एक उचित श्रद्धांजलि के रूप में।

वास्तविक योग्यता का जश्न मनाने के बजाय, चयन समितियाँ राजनीतिक शुद्धता के साथ संरेखित विकल्प चुनने के लिए बाध्य महसूस कर रही हैं, जो पुरस्कारों की अखंडता से समझौता कर सकती हैं।

यदि किसी महिला को उसकी असाधारण क्षमताओं के लिए नहीं बल्कि इसलिए सम्मानित किया जाता है क्योंकि वह किसी विशिष्ट कथा में फिट बैठती है, तो क्या वह मान्यता वास्तव में समान महत्त्व रखती है? महिला पुरस्कारों को पुराने प्रतीक या दिखावटीपन के उपकरण नहीं बनने चाहिए। उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की विशिष्ट चुनौतियों और सफलताओं पर प्रकाश डालना जारी रखना चाहिए। इसका उत्तर इन पुरस्कारों के महत्त्व को बढ़ाने में है- यह सुनिश्चित करना कि वे केवल एक प्रतीकात्मक इशारे के बजाय सच्ची उत्कृष्टता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि हम वास्तव में महिलाओं का जश्न मनाना चाहते हैं, तो उनके पुरस्कार केवल औपचारिकता नहीं होने चाहिए। उन्हें प्रतिभा, लचीलेपन और महत्त्वपूर्ण योगदान की सही स्वीकृति के रूप में काम करना चाहिए। इसके अलावा, पुरस्कारों के बढ़ते राजनीतिकरण ने योग्यता-आधारित मान्यता की स्पष्टता को धुंधला कर दिया है।

कुछ पुरस्कार वास्तविक उत्कृष्टता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय प्रतिनिधित्व, विविधता कोटा और प्रदर्शनकारी सक्रियता के बारे में चर्चाओं में फंस गए हैं। जब विजेताओं का चयन मुख्य रूप से उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के बजाय अन्य कारकों के आधार पर किया जाता है, तो इससे पुरस्कारों की विश्वसनीयता कम हो जाती है। महिलाओं को ऐसे सम्मान की आवश्यकता है जो उनके कौशल और प्रभाव को दर्शाता हो, न कि केवल सांकेतिक इशारे। इन पुरस्कारों को प्रासंगिक और सम्मानित बनाए रखने के लिए, यह आवश्यक है कि वे सख्त चयन मानदंडों का पालन करें जो केवल प्रतीकात्मक कार्यों के बजाय सच्ची उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संगठनों को इस बारे में खुला होना चाहिए कि वे अपने सम्मानित व्यक्तियों का चयन कैसे करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि मान्यता बाहरी प्रभावों के बजाय योग्यता पर आधारित हो। इसके अतिरिक्त, महिलाओं के पुरस्कारों के लिए, संस्थानों को इन विशिष्ट सम्मानों की प्रतिष्ठा बढ़ाने का लक्ष्य रखना चाहिए।

महिलाओं की उपलब्धियाँ समर्पित स्वीकृति की हकदार हैं-एक बाद की सोच के रूप में नहीं, बल्कि उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए एक उचित श्रद्धांजलि के रूप में। ऐसे समय में जब हमें प्रगति का जश्न मनाना चाहिए और उसकी रक्षा करनी चाहिए, महिला पुरस्कारों के लिए घटता सम्मान परेशान करने वाला है। यदि हम वास्तव में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रभाव की सराहना करते हैं, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि उनकी मान्यता सार्थक, विश्वसनीय हो तथा समाज में उनके योगदान की सही मायनों में प्रतिनिधित्व करती हो।

उत्तराखंड में 52 मदरसों पर ताला : जमीयत उलेमा-ए-हिंद के केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल का दौरा

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली। जमीयत उलेमा-ए-हिंद के एक केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल ने महासचिव मौलाना मोहम्मद हकीमुद्दीन कासमी के नेतृत्व में देहरादून का दौरा किया और उत्तराखंड में बंद किए गए मदरसों की स्थिति का जायजा लिया। प्रतिनिधिमंडल ने प्रभावित मदरसों के ज़िम्मेदारों से मुलाकात कर उनकी समस्याओं और कानूनी पहलुओं को समझने का प्रयास किया।

इस दौरान प्रतिनिधिमंडल ने देहरादून में मदरसा अनवरिया हयातुल उलूम और मदरसा अबू बकर सिद्दीक़, छोटा भारूवाला का दौरा किया, जो पूरी तरह सील हैं और जिनके मुख्य द्वारों पर सरकारी ताले लगे हुए हैं। मदरसों के ज़िम्मेदारों ने प्रतिनिधिमंडल को अपनी समस्याओं से अवगत कराया। इसी बीच जमीयत उलेमा-ए-हिंद के प्रतिनिधियों ने मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष से भी मुलाकात की और पूरी स्थिति को समझने का प्रयास किया।

प्रतिनिधिमंडल ने मदरसों के ज़िम्मेदारों को आश्वासन दिया कि जमीयत हरसंभव कानूनी और संवैधानिक माध्यमों से उनके अधिकारों की रक्षा करेगी। प्रतिनिधिमंडल ने इस बात पर जोर दिया कि मदरसों के शैक्षिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए तत्काल कदम उठाने की आवश्यकता है। जमीयत उलेमा-ए-हिंद इस विषय पर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर रही है, जिसके आधार पर जमीयत के अध्यक्ष मौलाना महमूद असद मदनी के निर्देशानुसार आगामी कार्ययोजना तय की जाएगी।

प्रतिनिधिमंडल के प्रमुख मौलाना मोहम्मद हकीमुद्दीन कासमी ने कहा कि धार्मिक मदरसों को भारतीय संविधान की धाराओं के तहत पूर्ण सुरक्षा प्राप्त है। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने भी इस संबंध में बाल अधिकार आयोग के अध्यक्ष के खिलाफ दायर याचिका पर अंतरिम रोक लगाई थी, जिसमें कहा गया था कि किसी भी धार्मिक मदरसे को बंद नहीं किया जाए। इसके बावजूद उत्तराखंड में मामूली बहानों के आधार पर मदरसों पर ताले लगाना चिंता का विषय है। सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि इस मामले में मदरसों के ज़िम्मेदारों को कोई लिखित नोटिस भी नहीं दिया गया।

उन्होंने आगे कहा कि सरकारों का कर्तव्य कानून लागू करना होता है, न कि लोगों को परेशान करना और उनके अधिकारों का हनन करना। इसलिए उत्तराखंड सरकार को इस कदम से पीछे हटना चाहिए।

इस प्रतिनिधिमंडल में जमीयत उलेमा-ए-हिंद के केंद्रीय कार्यालय से महासचिव के अलावा मौलाना मुफ्ती जाकिर हुसैन कासमी, हाफिज महमूद और स्थानीय इकाई से मौलाना नसीबुद्दीन (अध्यक्ष, जमीयत उलेमा देहरादून), मौलाना गुलशेर अहमद (उपाध्यक्ष), खज़ांची प्रधान अब्दुल रज़्ज़ाक, मौलाना सुफियान, मौलाना अब्दुल कुद्दूस, कारी अबुल फज़ल, मौलाना तसलीम, मुफ्ती खुशनूद, मास्टर अब्दुल सत्तार, हाफिज फरमान, कारी साजिद आदि शामिल थे।

नोएडा एयरपोर्ट के फ्लाइंग जोन में आ रही थी 30 साल पुरानी पानी की टंकी, सर्वे के बाद कर दिया गया ध्वस्त

परिवहन विशेष न्यूज

जेवर एयरपोर्ट के फ्लाइंग जोन को बाधा मुक्त कराने के लिए 30 साल पुरानी पानी की टंकी को ध्वस्त कर दिया गया। यह टंकी दयानतपुर गांव में स्थित थी और रनवे के पास होने के कारण एयरपोर्ट के आसपास के वायु क्षेत्र में बाधा उत्पन्न कर रही थी। जल निगम ने टेंडर प्रक्रिया के तहत रविवार को इस टंकी को सुरक्षित तरीके से ध्वस्त करा दिया।

जेवर। नोएडा एयरपोर्ट जेवर के फ्लाइंग जोन बाधा मुक्त कराने के लिए नागरिक विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) के आब्सटेकल लिमिटेशन सरफेस सर्वे (ओएलएस) कराया गया था। जिसमें जेवर के दयानतपुर गांव में लगभग 30 साल से बंद पड़ी पानी की टंकी बाधक बनी हुई थी।

नायल ने जल निगम को इस टंकी को हटाने के लिए कहा गया था। जल निगम ने टंकी को हटाने की टेंडर प्रक्रिया अपनाते हुए रविवार को ध्वस्त करा दिया गया। पानी की टंकी की ऊंचाई लगभग 27 मीटर से अधिक थी और रनवे के पास ही दयानतपुर गांव में बनी थी इसलिए एयरपोर्ट के आसपास के वायु क्षेत्र को बाधा मुक्त करने के लिए इसे हटाना अतिआवश्यक था।

हटाने के लिए जल निगम को सौंपी थी जिम्मेदारी

नियाल के नोडल अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि नोएडा एयरपोर्ट से नियमित उड़ान शुरू करने से पहले डीजीसीए ने ताजा ओएलएस सर्वे कराया था। इस सर्वे में सबकुछ ठीक मिला लेकिन दयानतपुर गांव में बनी पानी की टंकी बाधक बनी हुई थी। एयरपोर्ट से व्यावसायिक उड़ान शुरू करने से पहले इसे हटाने के लिए जल निगम को जिम्मेदारी सौंपी थी।

एजेंसी सुरक्षित तरीके से ध्वस्तीकरण में थी जुटी

उन्होंने बताया कि ओएलएस सर्वे हवाई अड्डे के आस-पास के वायु क्षेत्र को बाधाओं से मुक्त करने के लिए किया जाता है, जिससे हवाई जहाजों का सुरक्षित संचालन संभव हो सके। पानी की टंकी को ध्वस्त करने के लिए दयानतपुर गांव में जल निगम की तरफ से पहुंची एजेंसी इसे सुरक्षित तरीके से ध्वस्तीकरण में जुटी थी।

11 लाख रुपये की धनराशि जल निगम को दी

एजेंसी ने आसपास बने निर्माण को किसी तरह का नुकसान न हो इसके लिए पहले से प्लान तैयार किया था। रविवार को टंकी के पीलर को कमजोर करने के बाद उसे पूरी तरह से जमीजोद कर दिया गया। पानी की टंकी के ध्वस्तीकरण कराने के लिए नियाल ने 11 लाख रूपये की धनराशि जल निगम को दी है।

डीजीसीए क्यों कराता है ओएलएस सर्वे

आब्सटेकल लिमिटेशन सरफेस सर्वे हवाई अडडे के आसपास जहां एयरक्राफ्ट चक्कर लगाते है उस वायु क्षेत्र में किसी तरह की बाधा तो नहीं है। एयरपोर्ट के आसपास कोई मोबाइल टावर, ईंट भट्टे की चिमनी, कोई ऊंची इमारत पानी की टंकी या ढ़ाचा तो मौजूद नहीं है। इन सब की जांच के लिए ओएलएस सर्वे किया जाता है।

दयानतपुर गांव में लगभग 30 वर्ष पुरानी बंद पड़ी पानी की टंकी जो एयरपोर्ट के प्लाइंग जोन में बाधा बनी हुई थी। रविवार को इस टंकी को ध्वस्त करा दिया गया। ध्वस्तीकरण में निकले मलवे का भी जल्द निस्तारण एजेंसी के द्वारा करा दिया जाएगा। - संजय कुमार अधिसाशी

कानपुर में दक्षिण में शिवराम बरकरार, उत्तर से अनिल और ग्रामीण से उपेंद्र जिला अध्यक्ष

सुनील बाजपेई

कानपुर। रविवार को यहां लंबे इंतजार के बाद जिलाध्यक्षों की घोषणा कर दी गई। इसमें अकेले शिवराम सिंह ही कानपुर दक्षिण जिला अध्यक्ष के रूप में दोबारा रिपीट किया गए हैं। जबकि उत्तर और कानपुर ग्रामीण के जिला अध्यक्ष को हटाते हुए उनके स्थान पर अनिल दीक्षित को कानपुर उत्तर और ग्रामीण से घाटमपुर विधानसभा से पूर्व विधायक रहे उपेंद्र पासवान को अध्यक्ष बनाया गया है।

जिला अध्यक्षों के रूप में यह महत्वपूर्ण घोषणा प्रदेश नेतृत्व ने पूर्व सांसद कामता कर्दम के मोबाइल पर व्हाट्सएप संदेश भेज कर की। जिसके बाद केशव नगर स्थित कानपुर बुंदेलखंड क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यकर्ताओं का हुजूम उमड़ पड़ा। भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रदेश

नेतृत्व का आभार जताते हुए जमकर नारेबाजी की। बताया गया कि क्षेत्रीय कार्यालय में हर जिले से 110-110 पार्टी पदाधिकारियों की मौजूदगी में नामों की घोषणा की जाएगी। क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने बताया कि चुनाव पर्यवेक्षकों के व्हाट्सएप पर बीच बैठक में नामों की लिस्ट भेजी जाएगी। इस बैठक में तीनों जिलों के चुनाव पर्यवेक्षक व पूर्व संगठन मंत्री जयप्रकाश चतुर्वेदी तो शिरकत करेंगे।

सपने जो सितारों तक गए: कल्पना चावला की जयंती

[एक सपना जो अंतरिक्ष तक पहुँचा : कल्पना चावला की अनंत प्रेरणा]

कल्पना चावला का नाम सुनते ही मन में एक ऐसी तस्वीर उभरती है—एक साधारण लड़की, जिसने अपने सपनों को पंख दिए और अंतरिक्ष की अनंत ऊँचाइयों तक उड़ान भरी। हर साल 17 मार्च को उनकी जयंती पर जब हम उन्हें याद करते हैं, तो यह सिर्फ एक तारीख नहीं रह जाती—यह बन जाता है एक प्रेरणा का उत्सव, एक जज़्बे का सम्मान, जो हमें कहता है कि सीमाएँ तोड़ना ही इंसान का असली हक है। करनाल की संकरी गलियों से लेकर नासा के अंतरिक्ष शटल तक का उनका सफर कोई साधारण कहानी नहीं है; यह एक ऐसी दास्तान है, जो हर उस दिल को छूती है, जो सपने देखने की हिम्मत रखता है।

बचपन में जब कल्पना आसमान में उड़ते हवाई जहाजों को देखती थीं, तो उनकी आँखों में सिर्फ कौतूहल नहीं था, बल्कि एक जुनून था—उस अनंत नीले विस्तार को नापने का जुनून। हरियाणा के करनाल में 17 मार्च 1962 को जन्मी इस लड़की के लिए समाज ने कई रेखाएँ खींच रखी थीं। लड़कियों को घर की चौखट तक सीमित रखने वाली परंपराएँ, शिक्षा और करियर में अवसरों की कमी—ये सब उनके सामने थे। लेकिन कल्पना ने इन रेखाओं को मिटाने का फैसला किया। उनके परिवार ने भी उनकी इस आग को हवा दी। करनाल के टैगोर बाल निकेतन स्कूल में पढ़ते हुए उनकी रुचि विज्ञान और गणित की ओर बढ़ी, और यहीं से उनके सपनों ने एक ठोस आकार लेना शुरू किया।

फिर आया वह पल, जब उन्होंने पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज, चंडीगढ़ में एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में दाखिला लिया। उस दौर में इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्र में लड़कियों का होना अपने आप में एक क्रांति था। लेकिन कल्पना के लिए यह सिर्फ शुरुआत थी। उनके सपने उस कॉलेज की दीवारों से भी आगे थे—वह सितारों को छूना चाहती थीं। इसके लिए उन्होंने अमेरिका का रुख किया। टेक्सास यूनिवर्सिटी से मास्टर्स और कोलोराडो यूनिवर्सिटी से पीएचडी हासिल करने के बाद उनकी नज़र नासा पर थी। यहाँ तक पहुँचने में न जाने कितनी रातें किताबों के साथ गुज़रीं, कितने दिन मेहनत में डूबे रहे। लेकिन हर कदम पर वह अपने सपने के करीब बढ़ती गईं।

1994 में जब वह नासा में शामिल हुईं, तो यह उनके जीवन का एक नया अध्याय था। अंतरिक्ष यात्री बनने का प्रशिक्षण आसान नहीं था—शारीरिक, मानसिक और तकनीकी चुनौतियों से भरा हुआ। लेकिन कल्पना ने हर परीक्षा को पार किया। और फिर आया वह ऐतिहासिक दिन—19 नवंबर 1997। स्पेस शटल कोलंबिया अंतरिक्ष में उड़ा, और उसके साथ उड़ीं कल्पना चावला। यह मिशन STS-87 था, जिसमें वह पहली भारतीय मूल की महिला अंतरिक्ष यात्री बनीं। 16 दिनों तक अंतरिक्ष में रहकर उन्होंने 252 बार पृथ्वी की परिक्रमा की, 10.4 मिलियन मील की दूरी तय की, और कई वैज्ञानिक प्रयोगों को अंजाम दिया। अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखते हुए उन्होंने कहा था, ₹यह ग्रह कितना नन्हा और नाजुक है।₹ उनकी यह बात आज भी हमें हमारी धरती की कीमत समझाती है।

लेकिन उनकी कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। 2003 में वह दोबारा अंतरिक्ष के लिए निकलीं—मिशन STS-107। इस बार उनका उत्साह और भी गहरा था। 80 से अधिक प्रयोगों के साथ वह अंतरिक्ष विज्ञान में नई खोजों का हिस्सा बनीं। मिशन सफल रहा, लेकिन जब कोलंबिया 1 फरवरी 2003 को पृथ्वी पर लौट रहा था, तब एक तकनीकी खराबी ने सब कुछ बदल दिया। शटल वायुमंडल में टुकड़े-टुकड़े हो गया, और उसमें सवार सातों अंतरिक्ष यात्री, जिनमें कल्पना भी थीं, दुनिया को अलविदा कह गए। यह खबर भारत के लिए एक गहरा सदमा थी। करनाल की वह बेटी, जिसने सितारों को छुआ, अब एक तारे की तरह हमेशा के लिए चमकने चली गई।

यह हादसा दुखद था, लेकिन क्या कल्पना सचमुच चली गईं? नहीं। वह आज भी हमारे बीच हैं—हर उस सपने में, जो हिम्मत के साथ देखा जाता है। नासा ने उनके नाम पर सैटेलाइट और मिशन शुरू किए। भारत में उनके नाम पर स्कूल, कॉलेज, छात्रवृत्तियाँ हैं। लेकिन उनकी असली पहचान वह जज़्बा है, जो उन्होंने हर दिल में छोड़ा। उनकी वह बात— ₹मैं सिर्फ पृथ्वी से नहीं हूँ, मैं पूरे ब्रह्मांड की हूँ₹—हमारे लिए एक मंत्र है। यह हमें बताती है कि हमारी सोच की कोई सीमा नहीं, हमारा आसमान अनंत है।

कल्पना की जयंती पर उनकी यह कहानी हमें झकझोरती है। वह हमें पूछती हैं—तुम अपने सपनों के लिए कितना लड़ सकते हो? वह हमें याद दिलाती हैं कि एक छोटे से शहर की लड़की अगर सितारों तक पहुँच सकती है, तो हम क्यों नहीं? आज जब भारत चंद्रयान, मंगलयान और गगनयान जैसे मिशनों के साथ अंतरिक्ष में अपनी जगह बना रहा है, कल्पना की यह उड़ान और भी मायने रखती है। वह हमें सिखाती हैं कि सपने वही सच होते हैं, जिनके पीछे मेहनत और हौसला होता है।

उनकी ज़िंदगी एक किताब है, जिसका हर पन्ना हमें कुछ सिखाता है। वह हमें बताती हैं कि नाकामयाबी से डरने की ज़रूरत नहीं, बल्कि उसे एक सीढ़ी बनाना चाहिए। वह हमें सिखाती हैं कि लैंगिक भेदभाव, आर्थिक तंगी या सामाजिक बंधन सिर्फ बहाने हैं—असली ताकत तो इरादों में होती है। उनकी यह यात्रा हर उस इंसान के लिए एक नज़ीर है, जो अपने हालात से हारा हुआ महसूस करता है।

कल्पना चावला की जयंती पर यह प्रण करें कि हम भी अपने सपनों को उड़ान देंगे। चाहे रास्ते में कितने ही तूफान आएँ, हम रुकेंगे नहीं। कल्पना चावला एक नाम नहीं, एक एहसास हैं—यह एहसास कि उड़ान हर उस शख्स की किस्मत में होती है, जो अपने पंखों पर भरोसा करता है। उनकी यह कहानी हमें बार-बार पुकारती है—उठो, सपने देखो, और उन्हें सच करने के लिए निकल पड़ो। क्योंकि सितारे दूर नहीं, बस एक हौसले की उड़ान दूर हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

ऑटो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड़े ट्राला से टकराया, एक की मौत, दो गंभीर रूप से घायल

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के इकोटेक 1 कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत रविवार दोपहर को एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ। जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा भाटी गोलचक्कर से सिरसा गोलचक्कर की ओर जाने वाले मार्ग पर हुआ, जब एक ऑटो अनियंत्रित होकर सड़क किनारे खड़े ट्राला से टकरा गया।

कोतवाली पुलिस के अनुसार, ऑटो तेज रफ्तार में था और चालक ने नियंत्रण खो दिया। जिससे वह खड़े ट्राला के साइड में जा टकराया। इस दुर्घटना में ऑटो में सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों की पहचान दो सगे भाई अनुज, दीपक और अरुण के रूप में हुई है। तीनों ही निवासी सलेमपुर गुर्जर के रहने वाले थे। स्थानीय लोगों ने तुरंत पुलिस और एंबुलेंस को सूचना दी, जिसके बाद घायलों को इलाज के लिए पास के एक अस्पताल भेजा गया। इलाज के दौरान अनुज की मौत हो गई। जबकि दीपक और अरुण का इलाज जारी है।

ऑटो में सुअर के 10 बच्चे भी मौजूद थे। हालांकि, उन्हें कोई गंभीर नुकसान नहीं हुआ। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर दोनों वाहनों को कब्जे में ले लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। कोतवाली प्रभारी का कहना है कि प्रथम दृष्टया यह मामला तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने का लग रहा है। घटना के सटीक कारणों की जांच के लिए सीसीटीवी की मदद ली जा रही है। शिकायत मिलने पर केस दर्ज कर आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

प्रसिद्धि की बैसाखी बनता साहित्य में चौर्यकर्म

हरियाणा के एक लेखक द्वारा राज्य गान के रूप में एक गीत के चयन को लेकर हाल ही में एक बहस छिड़ी है, जिस पर साहित्यिक चोरी का आरोप लगाया गया है। अन्य लेखकों ने इस मामले पर अपनी चिंता व्यक्त की है और इसे राज्य के मुख्यमंत्री के ध्यान में लाया है। इस स्थिति ने साहित्यिक चोरी के साथ-साथ आज साहित्य के सामने आने वाले अवसरों और चुनौतियों के बारे में नए सिरे से बातचीत शुरू कर दी है। साहित्यिक चोरी और कॉपी-पेस्ट का मुद्दा हिंदी साहित्य में भी बढ़ रहा है, खासकर डिजिटल युग में, जहां लेख, कविताएं और कहानियां ऑनलाइन आसानी से उपलब्ध हैं। किसी अन्य लेखक के काम को बिना उचित श्रेय दिए या केवल मामूली बदलाव करके कॉपी करना साहित्यिक चोरी का एक स्पष्ट उदाहरण है। यह प्रवृत्ति न केवल लेखकों के अधिकारों का उल्लंघन करती है बल्कि मौलिकता और रचनात्मकता को भी कमजोर करती है।

डॉ. सत्यवान सौरभ

साहित्यिक चोरी साहित्यिक क्षेत्र में एक बड़ी चुनौती बन गई है, जहाँ एक लेखक के विचारों, शब्दों या रचनाओं पर दूसरे लेखक द्वारा उचित स्वीकृति के बिना दावा किया जाता है। यह कृत्य न केवल साहित्यिक नैतिकता का उल्लंघन करता है बल्कि सच्चे लेखक की मौलिकता और रचनात्मकता को भी कमज़ोर करता है। कॉपी-पेस्ट करने का मुद्दा हिंदी साहित्य में तेज़ी से प्रचलित हो रहा है, खासकर इस डिजिटल युग में, जहाँ लेख, कविताएँ और कहानियाँ ऑनलाइन आसानी से उपलब्ध हैं। साहित्यिक चोरी में किसी और के साहित्य को बिना श्रेय दिए लेना या उसमें मामूली बदलाव करके उसे अपना बताकर पेश करना शामिल है। यह व्यवहार मूल लेखकों के अधिकारों का उल्लंघन करता है और रचनात्मकता और मौलिकता को दबाता है। कुछ व्यक्ति इस हद तक चले जाते हैं कि वे दूसरों के साहित्य को अपना बता देते हैं। साहित्यिक चोरी के एक रूप में कहानी के पात्रों को बदलना और उसे मूल रचना के रूप में विपणन करना शामिल है। इस कुकृत्य में ऐसे लोग भी हैं जो स्थापित लेखकों की प्रसिद्ध कृतियों को अपनी कृति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तथा अक्सर साहित्यिक क्षेत्र में मान्यता और प्रसिद्धि पाने की कोशिश करते हैं।

साहित्यिक चोरी तब होती है जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे लेखक के शब्दों को बिना अनुमति या उचित श्रेय दिए अपने शब्दों के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें वे स्थितियाँ भी शामिल हैं जहाँ कोई लेखक बिना उचित उद्धरण के अपने पहले से प्रकाशित साहित्यिक काम का पुनः उपयोग करता है। इसके अतिरिक्त, यदि कोई व्यक्ति मूल विचारों और संरचना को बरकरार रखते हुए किसी दूसरे की सामग्री में मामूली बदलाव करता है, तो उसे भी साहित्यिक चोरी माना जाता है। यह समस्या विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रचलित है, और दुर्भाग्य से, यह आज भी जारी है। साहित्यिक चोरी के कई रूप हैं, और यहाँ तक कि दोहराव को भी रचनात्मक चोरी के रूप में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, कई हिंदी लेखक होली या दिवाली जैसे त्योहारों के दौरान विभिन्न प्रकाशनों में अपनी रचनाएँ पुनः प्रकाशित करते हैं। एक मजबूत समीक्षा संस्कृति की कमी ने साहित्यिक चोरी को साहित्य का एक परेशान करने वाला पहलू बना दिया है। आजकल, कोई भी किसी रचना को उसे बिना किसी जाँच के प्रकाशित करवा सकता है,

जिससे ऐसी स्थिति बन जाती है जहाँ मूल लेखक ठगे रह जाते हैं। 'निजी' पाठ्यक्रमों के लिए प्रसिद्ध लेखकों की कृतियाँ लेना और उन्हें अपने नाम से प्रकाशित करना आम बात हो गई है। इस व्यवहार को खत्म करने के लिए केवल आलोचना ही अपर्याप्त लगती है। साहित्यिक चोरी सिर्फ़ नए लेखकों या प्रसिद्धि चाहने वालों की ही बैसाखी नहीं है; यहाँ तक कि स्थापित हिंदी लेखक भी दूसरों की रचनाओं में थोड़ा-बहुत बदलाव करके उन्हें अपना बता देते हैं। साहित्यिक चर्चाओं में साहित्यिक चोरी के कई उदाहरण सामने आए हैं, जिनमें कुछ लेखकों पर प्रसिद्ध पुस्तकों के अंशों को अपनी रचनाओं में शामिल करने का आरोप लगाया गया है, जिससे अंततः उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचा है।

किसी अन्य लेखक के काम या विचारों का उपयोग करते समय, उचित श्रेय देना आवश्यक है। अपने स्वयं के विचारों और शैली को व्यक्त करके मौलिक लेखन को अपनाएँ, यह सुनिश्चित करें कि हिंदी साहित्य में नए दृष्टिकोण और रचनात्मकता पनपे। दूसरों के काम की अनजाने में नकल करने से बचें। हिंदी लेखकों को अपनी बौद्धिक संपदा की रक्षा के लिए अपनी रचनाओं के लिए कॉपीराइट सुरक्षित करना चाहिए। साहित्यिक नैतिकता को बनाए रखें, और लेखकों और पाठकों दोनों को मौलिकता की वकालत करते हुए साहित्यिक चोरी के खिलाफ एकजुट होना चाहिए। साहित्यिक चोरी के खिलाफ लड़ाई में आलोचक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अफसोस की बात है कि प्रकाशन उद्योग में कई संपादक साहित्य की बारीकियों को पूरी तरह से नहीं समझ पाते हैं। ऐतिहासिक संदर्भ की समझ की यह कमी इस मुद्दे की विडंबना को और बढ़ा देती है। मौलिक साहित्यिक कृतियों का प्रभावी ढंग से मूल्यांकन करने के लिए, स्तंभों या पत्रिकाओं के संपादक के रूप में काम करने वाले किसी भी व्यक्ति के पास साहित्य में मजबूत आधार और ज्ञान होना चाहिए। हिंदी साहित्य में साहित्यिक चोरी और कॉपी-पेस्ट की बढ़ती समस्या चिंताजनक है, लेकिन इससे निपटने के लिए प्रभावी उपाय किए जा सकते हैं। साहित्य की विशिष्टता को बनाए रखने और लेखकों के अधिकारों की रक्षा के लिए जागरूकता को बढ़ावा देना और नैतिक मानकों का पालन करना आवश्यक है। साहित्यिक कृतियों में मौलिकता सुनिश्चित करके हम हिंदी साहित्य के उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। साहित्यिक चोरी लेखकों की ईमानदारी को कमजोर करती है और साहित्यिक रचनाओं की प्रामाणिकता को कम करती है। साहित्यिक दुनिया में नवाचार को बढ़ावा देने और स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए मौलिकता को संरक्षित करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, सभी लेखकों को नैतिक प्रथाओं को बनाए रखते हुए अपने काम को रचनात्मक और मौलिक बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

साइबर ठगों को बैंक खाता व सिमकार्ड उपलब्ध कराने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

गुरुग्राम। महाकुंभ में टैक्सी बुकिंग के नाम पर ठगी करने के मामले में साइबर अपराध थाना दक्षिण की पुलिस टीम ने दो आरोपियों को बीते बृहस्पतिवार को सदरपुर सेक्टर-45, नोएडा से गिरफ्तार किया है।

आरोपियों ने साइबर ठगों को एक हजार रुपये में सिम कार्ड और 10 हजार रुपये में बैंक खाता बेचा था। 10 फरवरी को एक व्यक्ति ने साइबर अपराध थाना दक्षिण में दी शिकायत में बताया कि वह अपने दोस्तों व जानकारों के साथ प्रयागराज में महाकुंभ स्नान करने जाने की योजना बना रहे थे। उन्होंने इंटरनेट पर नंबर सर्च करके एक कंपनी के माध्यम से टैक्सी बुक की थी। नंबर पर बात होने के बाद उनसे 24 हजार रुपये का ऑनलाइन भुगतान करा लिया था, लेकिन टैक्सी नहीं भेजी। इस कारण वे न तो प्रयागराज जा सके और न ही उनके रुपये वापस मिले। किसी जालसाज ने उसके साथ महाकुंभ के लिए टैक्सी बुकिंग के नाम पर 24 हजार रुपये की ठगी कर ली। शिकायत के आधार पर पुलिस ने मामला दर्ज करके छानबीन शुरू की।

सहायक पुलिस आयुक्त (साइबर अपराध) प्रियांशु दीवान ने बताया कि साइबर अपराध थाना दक्षिण की पुलिस टीम ने मामले में जांच करते हुए सदरपुर सेक्टर-45, नोएडा से दो आरोपी गिरफ्तार किए हैं। आरोपियों की पहचान राज व राजा निवासी सदरपुर कॉलोनी सेक्टर-45 नोएडा, उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है। पुलिस जांच में पता चला कि मामले में ठगी गई राशि आरोपी राज के बैंक खाते में आई थी और ठगी की वारदात को अंजाम देने के लिए प्रयोग किया गया कॉलिंग नंबर (सिम कार्ड) आरोपी राजा के नाम से था। इन दोनों आरोपियों ने एक हजार रुपये में सिम कार्ड और 10 हजार रुपये में बैंक खाता किसी अन्य आरोपी को बेचा था। पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है ताकि साइबर ठगी के अन्य आरोपियों के बारे में जानकारी मिल सके।

दो कारों में भिड़ंत, एयर बैग खुलने से बचे दंपती

गुरुग्राम। सेक्टर-4 पुलिस चौकी क्षेत्र में टाटा हैरियर कार में ब्रेजा ने सामने से टक्कर मार दी। वहीं, एक स्विफ्ट कार भी ब्रेजा के पीछे टकरा गई। टाटा हैरियर कार के एयर बैग खुलने से उसमें सवार दंपती घायल होने से बच गए, जबकि ब्रेजा कार में सवार महिला के सिर में चोट लगी है।

कार चालक की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। सेक्टर-5 निवासी सुनील कुमार ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि बीते बृहस्पतिवार की शाम लगभग 4.15 बजे अपनी कार टाटा हैरियर से सेक्टर-4 स्थित राधा-कृष्ण मंदिर छोड़ने गया था। जब सुनील कुमार अपनी पत्नी को मंदिर के सामने उतारने ही वाला था, इसी दौरान सामने से तेज रफ्तार में एक ब्रेजा कार व एक स्विफ्ट कार आ रही थी। ब्रेजा कार ने सुनील कुमार की टाटा हैरियर कार को सामने से टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही सुनील कुमार की कार के एयर बैग खुल गए। सुनील कुमार ने बताया कि दोनों कारें काफी तेज रफ्तार से आ रही थीं।

मर्सिडीज बेंज लॉन्च करने जा रही नई कार, होगी स्पोर्ट्स और लक्जरी के परफेक्ट कॉम्बिनेशन

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय बाजार में 17 मार्च को मर्सिडीज-बेंज अपनी नई कार लॉन्च करने वाली है। जिसका नाम Mercedes-Maybach SL 680 Monogram Series है। यह कार कई लग्जरी इंटीरियर और एक शानदार एक्सटीरियर्स के साथ आने वाली है। वहीं यह सिर्फ 4 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है। आइए इसके बारे में विस्तार से जानते हैं।

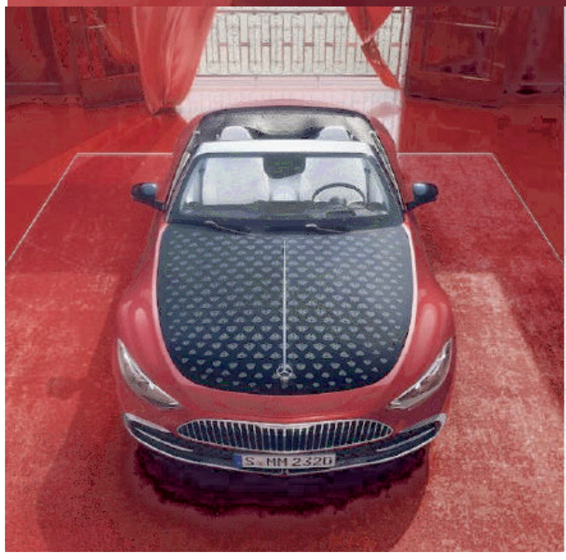

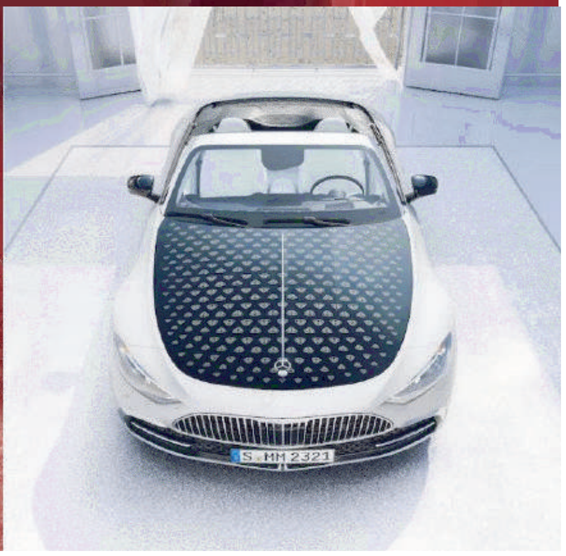

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में नई कार लॉन्च करने वाली है। यह स्पोर्ट्स और लक्जरी के परफेक्ट कॉम्बिनेशन के साथ आने वाली है। यह कोई और नहीं ग्लोबल बाजार में लॉन्च हो चुकी Mercedes-Maybach SL 680 Monogram Series है। इसे कंपनी अब भारत में लॉन्च करने वाली है। आइए इसके लॉन्च होने से पहले उसकी 5 अहम बातों के बारे में जानते हैं, जो इसे बाकियों से अलग बनाते हैं।

1. डिजाइन

Mercedes-Maybach SL 680 Monogram Series को दो कलर ऑप्शन सफेद और लाल में लाया जा रहा है। इसके फ्रंट में प्रीमियम Maybach ग्रिल और बम्पर दिया गया है, जो इसे दमदार और शानदार लुक देते हैं। वहीं, यह लाल और काले ड्यूल-टोन कलर में यह स्पोर्ट्स कार और भी एक्सक्लूसिव लगती है। इसमें स्लीक और शार्प LED हेडलाइट्स दी गई है।

इसके साइड प्रोफाइल में 21 इंच के बड़े एलॉय व्हील्स को दिया गया है, जो Maybach कारों पर देखे गए डिजाइन के समान है। इसके पीछे की तरफ स्पोर्टी डिजाइन में LED टेल लाइट्स और क्रोम एलिमेंट्स के साथ डिफ्यूजर का इस्तेमाल किया गया है।

2. इंटीरियर और फीचर्स

इसमें स्पोर्टी इंटीरियर दिया गया है, जिसमें AMG के स्पेसिफिक एलिमेंट्स होते हैं। इसके स्टीयरिंग व्हील और अपहोल्स्ट्री में Maybach के साथ डिजाइन दिया गया है, जो इस स्पोर्ट्सकार में एक अनोखा लुक देते हैं।

इसमें 11.9 इंच की वर्टिकल इंफोटेनमेंट स्क्रीन और 12.3 इंच की डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले दी गई है। इसमें प्रीमियम सॉफ्ट टच लेदर मटीरियल्स से सजे इसके इंटीरियर में मल्टी-कलर एम्बिएंट लाइटिंग और पावर सीट्स जैसे फीचर्स को शामिल किया गया है।

3. पावरट्रेन

Mercedes-Maybach SL 680 Monogram Series में 4-लीटर का ट्विन-टर्बो V8 इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 585 PS की पावर और 800 Nm का टॉर्क करता है। कंपनी की तरफ से दावा किया जा रहा है कि यह सिर्फ 4 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है। इसके इंजन को 9-स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

4. कीमत

Mercedes-Maybach SL 680 Monogram Series की एक्स-शोरूम कीमत करीब 3 करोड़ रुपये तक होने की उम्मीद है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला, Porsche 911, Lotus Emira, और Audi RS e-tron GT जैसी गाड़ियों से देखने के लिए मिलेगा।

5. स्पोर्ट्स और लग्जरी

इसे स्पोर्ट्स और लक्जरी कॉम्बिनेशन के साथ लेकर आया जा रहा है। यह लग्जरी इंटीरियर और एक शानदार एक्सटीरियर्स के साथ लॉन्च होगी। यह स्पोर्टीनेस और टॉप-नॉच लग्जरी का बेहतरीन कॉम्बिनेशन को पेश करती है। वहीं, यह लग्जरी इंटीरियर और दमदार पावरट्रेन के साथ एक बेहतरीन कार साबित हो सकती है।

गाड़ी का इंजन ऑयल भी होता है एक्सपायर, समय रहते कर दें चेंज वरना लग जाएगा हजारों का चूना

परिवहन विशेष न्यूज

गाड़ी के इंजन ऑयल को नियमित रूप से बदलवाना उसके कार्यक्षमता को बनाए रखने और उसकी लाइफ को बढ़ाने में मददगार होता है। समय पर इंजन ऑयल को बदलवाने पर उसकी भारी मरम्मत लगने वाले खर्च से भी बचा सकता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि इंजन ऑयल कब बदलना चाहिए?

नई दिल्ली। आप कार, मोटरसाइकिल, स्कूटर या कोई भी मोटर वाहन चलाते हैं, तो आपको इसके इंजन में पड़ने वाले इंजन ऑयल (Engine Oil) के बारे में जरूर पता होगा। यह न केवल इंजन के पाट्र्स को चिकनाई देता है, बल्कि यह इंजन के गर्म होने से बचाता है। यह कार के इंजन को लंबे समय तक चलाने में भी मदद करता है। कभी आपने सोचा है कि बाकी दूसरी चीजों की तरह इंजन ऑयल भी एक्सपायर होता है या फिर नहीं। हम यहां पर आपको इसके बारे में ही बता रहे हैं, साथ ही बता रहे हैं कि इंजन ऑयल कब बदलवाना जरूरी है और इसे न बदलने न पर क्या नुकसान हो सकता है।

क्या Engine Oil भी एक्सपायर होता है?

बहुत से लोगों को इसके बारे में नहीं पता होगा कि Engine Oil की भी एक तय उम्र सीमा होती है। इंजन ऑयल भी एक समय के बाद एक्सपायर हो जाते हैं। इंजन ऑयल की उम्र 2 से 5 साल के बीच होती है। इससे ज्यादा इसका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए, नहीं तो इंजन पर बुरा असर पड़ सकता है। वहीं, जब आप इंजन ऑयल को बदलवा रहे हो और नया इंजन ऑयल डलवा रहे हो, तो उस दौरान उसके उत्पादन और उपयोग की अंतिम तिथि की जरूर जांच करें। वहीं, ज्यादा पुराना ऑयल खरीदने से बचें। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, गाड़ी के इंजन ऑयल को हर 5,000 से 7,500 किलोमीटर पर बदलवाना चाहिए। हालांकि, यह गाड़ी के मॉडल और ड्राइविंग परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

कैसे पहचाने एक्सपायर Engine Oil?

गाड़ी के इंजन ऑयल को कब बदलना चाहिए, यह जानना बहुत जरूरी होता है। यह जानने के लिए आपको कुछ जानकारी के बारे में पता करना होगा कि इंजन ऑयल किस स्थिति में है। इसके लिए आपको कुछ ऑयल को इंजन से बाहर निकालना होगा। अगर आपको यह हल्के रंग के दिखने बजाय काला दिखता है और उससे बदबू आ रही है, तो समझ जाइए कि गाड़ी के इंजन ऑयल को बदलने का समय आ गया है। वहीं, अगर गाड़ी बहुत ज्यादा धुआं दे रही हो, तो यह भी इंजन ऑयल को बदलने का संकेत होता है।

खराब इंजन ऑयल का इंजन पर असर

अगर सही समय पर इंजन ऑयल को नहीं बदला जाए तो इसका असर इंजन पर बुरा पड़ता है। खराब ऑयल की वजह से इंजन में घर्षण बढ़ता है, जिससे इंजन के पाट्र्स पर ज्यादा गर्म होने लगते हैं। इसके इंजन के अंदर की कोलिंग पर दबाव बढ़ जाता है। इससे इंजन के पाट्र्स की लाइफ घट सकती है। लंबे समय तक पुराने ऑयल का इस्तेमाल करने से इंजन की पूरी प्रणाली भी खराब हो सकता है, जिसकी मरम्मत करवाने में आपको हजारों रुपये खर्च करना पड़ सकता है।

क्या आपको भी होती है कार पार्किंग में दिक्कत? बिना डैमेज किए ऐसे करें गाड़ी पार्क

परिवहन विशेष न्यूज

बहुत से लोगों को कार पार्क करने में कई तरह के परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अगर वहीं कार को किसी तंग जगह पर पार्क करना पड़े तो यह बड़ी चुनौती बन जाती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार को सही से पार्क करने के बारे में बता रहे हैं जिससे आपकी कार को किसी तरह का नुकसान न हो।

नई दिल्ली। कम पार्किंग स्पेस में कार पार्क करना कई ड्राइवर्स के लिए बड़ी चुनौती होती है। ऐसी जगहों पर कार को पार्क करने के दौरान नुकसान होने का डर हमेशा रहता है। इस दौरान न केवल खुद की गाड़ी के डैमेज होने का डर रहता है, बल्कि दूसरों की गाड़ी के भी डैमेज होने का डर बना रहता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार पार्क करने के कुछ ऐसे तरीकों के बारे में बता रहे हैं, जिनकी मदद से आप तंग पार्किंग में कार को नुकसान से बचाने में मदद कर सकते हैं।

1. पार्किंग स्पेस का चुनाव

जब आप किसी भी कार पार्किंग में प्रवेश करें, तो आपको कोने वाली पार्किंग स्पेस या पिलर्स के पास वाली जगह का चुनाव करें। ऐसी जगह पर आपको पार्किंग के लिए ज्यादा जगह मिलता है। यहां पर आपके कार के दरवाजे खुलने पर दूसरी कारों से टकराने का खतरा बहुत कम होता है। इसके अलावा, आप अपनी कार को छोटे वाहनों के पास भी पार्क कर सकते हैं।

2. पार्किंग सेंसर्स और कैमरा का इस्तेमाल

हाल के समय में आने वाली तकरीबन सभी गाड़ियों में पार्किंग सेंसर्स और कैमरा फीचर्स देखने के लिए मिलता है। इनकी मदद से आपको कार को पार्क करने में काफी मदद मिलती है। इनकी मदद से आप कार और आस-पास की चीजों के बीच की दूरी का अनुमान सही से लगा सकते हैं।

3. डोर एज गाड्र्स का इस्तेमाल करें

डोर एज गाड्र्स एक साधारण लेकिन काफी उपयोगी एक्सेसरीज है। इन्हें कार के दरवाजों के किनारों पर चिपकाया जाता है और जब दरवाजे तंग स्पेस में खुलते हैं, तो यह दरवाजों पर खरोंचों को लगने से बचाते हैं।

4. सटीक पार्किंग की प्रैक्टिस करें

कार को सटीक पार्क करना एक कौशल होता है, जिसे बार-बार अभ्यास करके बेहतर बनाया जा सकता है। वहीं, पार्किंग के दौरान पार्क करने वाली जगह पर की गई पेंट की रेखाओं या पास की कारों का ध्यान रखें।

5. प्रोटेक्टिव कार कवर का इस्तेमाल करें

अगर अक्सर अपनी कार को तंग पार्किंग स्पेस में पार्क करते हैं, तो आप अपनी कार को पार्क करने के बाद उसे प्रोटेक्टिव कार कवर से जरूर ढक दें। इससे आप अपनी कार को दूसरी कारों या बाकी चीजों से होने वाले नुकसान से बचा सकते हैं।

बीवाईडी एटटू 3 वर्सेज एमजी जेडएस ईवी : फीचर्स, ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर

परिवहन विशेष न्यूज

हम यहां पर आपको MG ZS EV और BYD Atto 3 का दोनों की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि दोनों दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) में से कौन डाइमेंशन फीचर्स ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर है। आइए इनके बारे में जानते हैं।

नई दिल्ली। कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs में कई ऑटोमेकर अपनी गाड़ियां पेश करती है। इसमें MG ZS EV और BYD Atto 3 भी आती है। वहीं, हाल में Atto 3 को कई अपडेट्स भी मिले हैं, जिसकी वजह से इसकी ZS EV के साथ उसकी प्रतिद्वंद्विता फिर से बढ़ गई है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि डाइमेंशन, फीचर्स, ड्राइविंग रेंज और कीमत के मामले में कौन बेहतर है।

1. डाइमेंशन (Dimensions)

पैरामीटर
BYD Atto 3
MG ZS EV
लंबाई
4455 mm (+132 mm)
4323 mm
चौड़ाई
1875 mm (+66 mm)
1809 mm
ऊंचाई
1615 mm (-34 mm)
1649 mm
व्हीलबेस
2720 mm (+135 mm)
2585 mm

अपडेटेड BYD Atto 3, MG ZS EV से बड़ी है। इसका व्हीलबेस 135mm लंबा है, जिसकी वजह से इसमें ज्यादा जगह मिलता है। इसके अलावा, चौड़ाई ज्यादा होने पर तेज गति में इसकी स्थिरता भी बेहतर बनी रहती है। हालांकि, ZS EV, Atto 3 से 35 mm ज्यादा ऊंची है।

2. फीचर्स (Features)

उपकरण
BYD Atto 3
MG ZS EV
DRLs के साथ LED हेडलैंप्स
हां
हां
व्हील साइज
18-इंच अलॉय व्हील
17-इंच अलॉय व्हील
इंफोटेनमेंट
12.8-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
10.1-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम
डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले
हां, 5-इंच
हां, 7-इंच
एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले
हां
हां
पॉवर्ड फ्रंट सीट पंक्ति
हां
हां, केवल ड्राइवर के लिए
सीट वेंटिलेशन
हां
नहीं
सनरूफ
हां, पैनोरमिक
हां, पैनोरमिक
ऑटोमेटिक क्लाइमेंट कंट्रोल
हां
हां
वायरलेस फ़ोन चार्जिंग
हां
हां
साउंड सिस्टम
8-स्पीकर Dirac HD साउंड सिस्टम
6-पीकर हरमन कार्डन साउंड सिस्टम
ऐंबीएंट लाइटिंग
हां
नहीं
कनेक्टेड कार तकनीक
हां
हां
NFC--आधारित डिजिटल कार्ड चाबी
हां
हां, स्मार्टफोन में एकीकृत
एयरबैग्स
7
6
ADAS फीचर्स
हां
हां
टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम
हां
हां
360 डिग्री कैमरा
हां, आगे और पीछे पार्किंग सेंसर के साथ
हां

दोनों ही कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs कई प्रीमियम और एडवांस फीचर्स के साथ आती है, लेकिन BYD Atto 3 में ZS EV से ज्यादा फीचर्स मिलते हैं। Atto 3 में बड़ा अलॉय व्हील्स, बड़ा इंफोटेनमेंट सिस्टम और बेहतर साउंड सिस्टम दिया गया है। वहीं, इसमें एक एक्स्ट्रा एयरबैग भी मिलता है। हालांकि, दोनों SUVs में लेवल-2 ADAS और 360-डिग्री कैमरा सिस्टम जैसे बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स मिलते हैं।

3. ड्राइविंग रेंज और बैटरी (Driving Range and Battery)

पैरामीटर
BYD Atto 3
MG ZS EV
बैटरी पैक
50 kWh
60 kWh
50.3 kWh
पावर
204 PS
204 PS
177 PS
टॉर्क
310 Nm
310 Nm
280 Nm
ड्राइविंग रेंज
468 km
521 km
461 km

BYD Atto 3 को दो बैटरी पैक 50 kWh और 60 kWh के साथ पेश किया जाता है। हालांकि, पहला बैटरी पैक ZS EV के 50.3 kWh बैटरी पैक समान है, जो बेहतर पावर आउटपुट और ज्यादा रेंज देने का दावा कंपनी करती है। इसके अलावा, दोनों कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) में कॉम्पैक्ट इलेक्ट्रिक SUVs (2025 BYD Atto 3 vs MG ZS EV) का सपोर्ट मिलता है, जिसकी मदद से इसे एक घंटे में 0 से 80 प्रतिशत तक चार्ज किया जा सकता है।

4. कीमत (Price)

BYD Atto 3
MG ZS EV
कीमत (एक्स-शोरूम)
24.99 लाख से लेकर 33.99 लाख रुपये तक
BaaS: 14 लाख रुपये से 20.75 लाख रुपये + बैटरी किराये की सेवा के लिए 4.5 रुपये प्रति किमी
स्टैंडर्ड कीमत: 26.84 लाख रुपये तक (टॉप-स्पेक)

MG ZS EV, BYD Atto 3 को करीब 11 लाख रुपये से कम कीमत में पेश करती है। वहीं, MG के बैटरी-एज-ए-सर्विस प्रोग्राम के तहत भी पेश किया जाता है। इसके तहत आपको पूरी गाड़ी का भुगतान नहीं करना पड़ता है, बल्कि बैटरी के लिए प्रति किलोमीटर 4.5 रुपये का किराया लिया जाता है। वहीं, अगर आप पूरी गाड़ी की भी कीमत देते हैं, तो ZS EV और Atto 3 के बीच कीमत का अंतर लगभग 7 लाख रुपये का रहता है। इन दोनों का भारतीय बाजार में Hyundai Creta Electric, Tata Curvv EV और Mahindra BE 6 से देखने के लिए मिलता है।

सपने सीमाओं से परे, एमबीबीएस दुविधा

विजय गर्ग

एनईईटी (राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश द्वार) में 720 में से 605 स्कोर करने के बाद, उन्होंने खुद को एक कठिन चौराहे पर पाया। उनका स्कोर, हालांकि सराहनीय है, भारत में एक सरकारी चिकित्सा सीट को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं था। वैकल्पिक निजी मेडिकल कॉलेजों ने अपने परिवार की वित्तीय पहुंच से बहुत परे, अत्यधिक ट्यूशन फीस की मांग की।

भारत आईआईएमएस, जेआईपीएमईआर और अन्य शीर्ष सरकारी मेडिकल कॉलेजों जैसे प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों का घर है जो विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करते हैं और दुनिया के कुछ बेहतरीन डॉक्टरों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। फिर भी, हर साल, हजारों भारतीय छात्र अपने सपनों को प्राप्त करने के लिए विदेशों में अपने एमबीबीएस डिग्री का पीछा करते हैं, हालांकि इस खोज में सफल होने के लिए कई संघर्ष करते हैं। इसी तरह अमित की कहानी है, जो कि मलोट का एक 18 वर्षीय है, जिसने हमेशा डॉक्टर बनने का सपना देखा था। चिकित्सा क्षेत्र में एक दूर के रिश्तेदार से प्रेरित होकर, वह उसी पथ का पालन करने के लिए दृढ़ था। हालांकि, एनईईटी (राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश द्वार) में 720 में से 605 स्कोर करने के बाद, उन्होंने खुद को एक कठिन चौराहे पर पाया। उनका स्कोर, हालांकि सराहनीय है, भारत में एक सरकारी चिकित्सा सीट को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त नहीं था। वैकल्पिक निजी मेडिकल कॉलेजों ने अपने परिवार की वित्तीय पहुंच से बहुत परे, अत्यधिक ट्यूशन फीस की मांग की। अविभाजित, अमित ने विदेशों में विकल्पों का पता लगाया और ऋण की मदद से एक प्रतिष्ठित मेडिकल कॉलेज में प्रवेश प्राप्त किया। जैसे ही वह अपने आजीवन सपने का पीछा करने लगा था, भाग्य ने एक दुखद मोड़ लिया। अपने छात्रावास और कॉलेज के बीच आने के दौरान, वह एक घातक दुर्घटना के साथ मिला, जिससे उनके होनहार भविष्य को कम कर दिया गया। उनके असामयिक निधन ने उनके परिवार को चकनाचूर कर दिया, जिससे उन्हें अकल्पनीय दुःख हो गया। अमित की तरह, हजारों भारतीय छात्रों को हर साल एक ही दुविधा का सामना करना पड़ता है। जबकि सरकारी मेडिकल कॉलेज एक सस्ती कीमत पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हैं, उनके पास बेहद सीमित सीटें हैं। नतीजतन, जो छात्र एक सरकारी सीट को सुरक्षित करने में विफल रहते हैं, उन्हें निजी मेडिकल कॉलेजों के लिए चुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। नतीजतन, कई रूस, चीन, यूक्रेन, फिलीपींस और कजाकिस्तान जैसे देशों में अवसर चाहते हैं, जहां चिकित्सा शिक्षा काफी अधिक सस्ती है। यह बढ़ती प्रवृत्ति एक महत्वपूर्ण सवाल उठाती है: भारतीय छात्रों को अवसरों के लिए अपनी मातृभूमि से परे कब तक देखना चाहिए, और इस दबाव के मुद्दे को संबोधित करने के लिए क्या किया जा सकता है? आँकड़े चौंका देने वाले हैं। 2024 में, 23 लाख से अधिक छात्र एनईईटी के लिए दिखाई दिए, जो लगभग 1 लाख एमबीबीएस सीटों के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। इनमें से, केवल लगभग 50,000 सीटें सरकारी कॉलेजों में उपलब्ध थीं, जिससे प्रवेश अत्यधिक प्रतिस्पर्धी हो गया। जो लोग याद करते हैं, उनके लिए निजी संस्थान एकमात्र विकल्प बने हुए हैं। हालांकि, भारत में एक निजी मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की डिग्री की लागत ₹ 50 लाख से ₹ 1.5 करोड़ तक है, जो अधिकांश मध्यम वर्ग के परिवारों के लिए अप्रभावी राशि है। इसके विपरीत, रूस या यूक्रेन जैसे देशों में विदेशों में अध्ययन करने की लागत 20-30 लाख है, जिसमें ट्यूशन और रहने वाले खर्च शामिल हैं, जिससे यह अधिक व्यवहार्य विकल्प है। रूस, यूक्रेन, चीन और फिलीपींस जैसे देश भारतीय छात्रों को सस्ती और गुणवत्ता वाली चिकित्सा शिक्षा प्रदान करते हैं। ये विश्वविद्यालय भारत के निजी संस्थानों की तुलना में अंग्रेजी-मध्यम पाठ्यक्रम, उन्नत बुनियादी ढांचा और कम ट्यूशन फीस प्रदान करते हैं। जबकि एनईईटी योग्यता भारतीय छात्रों के लिए अनिवार्य है जो भारत में अभ्यास करना चाहते हैं, कई विदेशी विश्वविद्यालय कम स्कोर वाले छात्रों को स्वीकार करते हैं, जिससे उन्हें अपनी चिकित्सा आकांक्षाओं को प्राप्त करने का दूसरा मौका मिला। "विदेश में अध्ययन करते समय एक विकल्प प्रदान करता है, यह भाषा बाधाओं, मान्यता के मुद्दों और लाइसेंसिंग परीक्षा कठिनाइयों जैसी चुनौतियों को प्रस्तुत करता है। इसे हल करने के लिए, भारत को अपनी चिकित्सा शिक्षा बुनियादी ढांचे को मजबूत करना चाहिए, निजी कॉलेज की फीस को विनियमित करना चाहिए, और छात्रों को लौटाने के लिए बेहतर समर्थन प्रदान करना चाहिए।तभी आकांक्षी डॉक्टर भारत की सीमाओं के भीतर अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं, जिससे अन्यत्र अवसरों की आवश्यकता कम हो जाती है।" इसके अतिरिक्त, कंसल्टेंसी एजेंसियां आक्रामक रूप से विदेशी चिकित्सा संस्थानों का विपणन करती हैं, एक सुचारू प्रवेश प्रक्रिया और सस्ती शिक्षा का वादा करती हैं, जिससे विदेश में अध्ययन की प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया जाता है। हालांकि, विदेशों में चिकित्सा शिक्षा का पीछा करना अपनी चुनौतियों के साथ आता है। एक प्रमुख बाधा भाषा बाधा है, गैर-अंग्रेजी बोलने वाले देशों में छात्र अक्सर स्थानीय भाषा में महारत हासिल करने के लिए संघर्ष करते हैं, जो नैदानिक प्रशिक्षण के दौरान प्रभावी रोगी बातचीत के लिए महत्वपूर्ण है। चीन, रूस और यूक्रेन जैसे देशों को विदेशी छात्रों को प्रभावी ढंग से रोगियों के साथ संवाद करने के लिए अपनी मूल भाषाओं को सीखने के लिए आवश्यकता होती है। विदेश में एमबीबीएस पूरा करने के बाद एक और महत्वपूर्ण चुनौती उत्पन्न होती है, भारतीय छात्रों को भारत में अभ्यास करने के लिए विदेशी चिकित्सा स्नातक परीक्षा (एफएमजीई) को पारित करना होगा। एफएमजीई के पास एक कुख्यात कम पास दर है, केवल 10-20% छात्रों ने इसे अपने पहले प्रयास में साफ किया, जिससे उनके पेशेवर भविष्य में अनिश्चितता हो गई। इन चुनौतियों के बावजूद, विदेशी चिकित्सा शिक्षा की सामर्थ्य भारतीय छात्रों को आकर्षित करने के लिए जारी है। इस प्रवृत्ति के दूरगामी निहितार्थ हैं, न केवल भारत की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली को प्रभावित करते हैं, बल्कि मस्तिष्क की नाली में भी योगदान देते हैं, क्योंकि कई छात्र बेहतर कैरियर की संभावनाओं के कारण विदेश में बसने का विकल्प चुनते हैं। जबकि कुछ अपनी डिग्री पूरी करने के बाद भारत लौटते हैं, वैश्विक जोखिम और उन्नत तकनीकों को लाते हैं, कुशल पेशेवरों का नुकसान एक चिंता का विषय है। सार्वजनिक मेडिकल कॉलेजों के विस्तार के माध्यम से किफायती चिकित्सा सीटों की संख्या बढ़ाकर इन प्रणालीगत मुद्दों को संबोधित करने के लिए सरकार के लिए घंटे की आवश्यकता है। शुल्क संरचना को विनियमित करना, दोनों सरकारी और निजी चिकित्सा संस्थानों के लिए भी चिकित्सा शिक्षा को अधिक सुलभ बना सकते हैं। उचित शुल्क संरचनाओं को लागू करने और सीटों की उपलब्धता बढ़ाने से, कम छात्र विदेश में शिक्षा की तलाश करने के लिए मजबूर महसूस करेंगे। अंत में, विदेशों में एमबीबीएस का पीछा करने वाले भारतीय छात्रों की बढ़ती प्रवृत्ति भारत में गहन प्रतिस्पर्धा, उच्च लागत और सीमित सीटों का प्रत्यक्ष परिणाम है। विदेश में अध्ययन करते समय एक विकल्प प्रदान करता है, यह भाषा बाधाओं, मान्यता के मुद्दों और लाइसेंसिंग परीक्षा कठिनाइयों जैसी चुनौतियों को प्रस्तुत करता है। इसे हल करने के लिए, भारत को अपनी चिकित्सा शिक्षा बुनियादी ढांचे को मजबूत करना चाहिए, निजी कॉलेज की फीस को विनियमित करना चाहिए, और छात्रों को लौटाने के लिए बेहतर समर्थन प्रदान करना चाहिए। तभी आकांक्षी डॉक्टर भारत की सीमाओं के भीतर अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं, जिससे अन्यत्र अवसरों की तलाश करने की आवश्यकता कम हो सकती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

शिक्षा में मूक संकट: शिक्षक बर्नआउट

विजय गर्ग

शिक्षक सिर्फ शिक्षकों से अधिक हैं। वे संरक्षक, प्रेरक और रोल मॉडल हैं जो अपने छात्रों के जीवन को गहराई से आकार देते हैं। शिक्षकों की क्षमता को प्रेरित करने, अनुकूलित करने और स्थायी प्रभाव बनाने की क्षमता उन्हें अद्वितीय बनाती है। हालांकि, क्या दुख यह है कि शिक्षा की तेजी से गति वाली प्रकृति ने शिक्षकों को शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक रूप से थका दिया है। आज, शिक्षक बर्नआउट वास्तविक है, और यह एक बढ़ता हुआ संकट है जो न केवल शिक्षकों बल्कि छात्रों को भी प्रभावित करता है और शिक्षा की समग्र गुणवत्ता भी। बर्नआउट, जो पुराने तनाव, थकावट और प्रेरणा के नुकसान की विशेषता है, ने कई कुशल शिक्षकों को पेशे को छोड़ने के लिए प्रेरित किया है। अत्यधिक कार्यभार जैसे कई कारक, समर्थन संसाधनों की कमी, जिसमें शिक्षक अपने अनुबंधित घंटों से परे काम करते हैं, ग्रेडिंग असाइनमेंट, पाठ योजना तैयार करते हैं, बैठकों में भाग लेते हैं और प्रशासनिक कार्यों को संभालते हैं, साथ ही सीमित समय के साथ उच्च स्तर पर लगातार प्रदर्शन करने की उम्मीद में तनाव को बढ़ा दिया गया है। कई शिक्षक, विशेष रूप से अंडरफंडेड स्कूलों में, भीड़भाड़ वाली कक्षाओं, शिक्षण सामग्री की कमी और अपर्याप्त सहायक कर्मचारियों जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिसने शिक्षकों को वैकल्पिक समाधान खोजने के लिए मजबूर किया है, अक्सर अपने समय और धन की कीमत पर। शिक्षण भावनात्मक रूप से मांग करने वाली नौकरी है। आज, सिर्फ शिक्षण के अलावा एक शिक्षक को अकादमिक और व्यक्तिगत रूप से छात्रों का समर्थन करना पड़ता है, अक्सर संरक्षक, परामर्शदाताओं और देखभाल करने वालों के रूप में कार्य करते हैं। यहां तक कि उन्हें छात्र आघात, व्यवहार संबंधी मुद्दों और शैक्षणिक संघर्षों से भी निपटना होगा, जो कई अध्ययनों के अनुसार, एक महत्वपूर्ण भावनात्मक टोल ले चुके हैं। अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि कई देशों में, शिक्षकों को समान शिक्षा के स्तर वाले अन्य पेशेवरों की तुलना में कम किया जाता है। इसने वित्तीय तनाव पैदा कर दिया है और असंतोष और थकावट में योगदान दिया है। अपने मांग के कार्यक्रम के कारण, कई शिक्षक अपने और अपने परिवारों के लिए समय खोजने के लिए संघर्ष करते हैं। एक कार्य-जीवन संतुलन को बनाए रखने में असमर्थता ने पुरानी थकान में योगदान दिया है और नौकरी की संतुष्टि में कमी आई है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक बर्नआउट हो गया है। शिक्षक बर्नआउट के गंभीर परिणाम हैं, न केवल शिक्षकों के लिए, बल्कि समग्र रूप से शिक्षा प्रणाली के लिए भी। यह काफी निश्चित है कि एक बार जब व्यक्ति पुराने तनाव को विकसित करता है, तो यह शारीरिक स्वास्थ्य के मुद्दों जैसे कि सिरदर्द, उच्च रक्तचाप और अनिद्रा को जन्म देगा। इतना ही नहीं, यह चिंता, अवसाद और भावनात्मक थकावट के जोखिम को भी बढ़ाएगा। ऐसे शिक्षक एक ही समय में अपने शिक्षण में उत्साह, धैर्य और रचनात्मकता के समान स्तर को बनाए रखने के लिए संघर्ष करेंगे, छात्र सगाई और सीखने के परिणामों को प्रभावित करेंगे। आज, कई समर्पित शिक्षक बर्नआउट के कारण इस महान पेशे को छोड़ रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक की कमी और अनुभवी पेशेवरों का नुकसान हुआ है। नतीजतन, स्कूलों को कम अनुभवी शिक्षकों को काम पर रखने के लिए मजबूर किया जाता है, जो शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को प्रभावित करता है। जब शिक्षक बर्नआउट का अनुभव करते हैं, तो छात्र कम समर्थित और प्रेरित महसूस करते हैं। एक विघटित या भावनात्मक रूप से सूखा शिक्षक एक नकारात्मक सीखने का माहौल बना सकता है, जो छात्र के प्रदर्शन और कल्याण को प्रभावित करता है। यह कई स्तरों पर प्रणालीगत परिवर्तनों के माध्यम से शिक्षक बर्नआउट को संबोधित करने के लिए उच्च समय है, एक स्वस्थ शिक्षण वातावरण बनाने के लिए स्कूलों, सरकारों और समाज से कार्रवाई की आवश्यकता है। प्रबंधनीय शेड्यूल को लागू करके, प्रशासनिक सहायता प्रदान करने और अनावश्यक कागजी कार्रवाई को कम करने से कार्यभार को कम करना मदद कर सकता हैतनाव

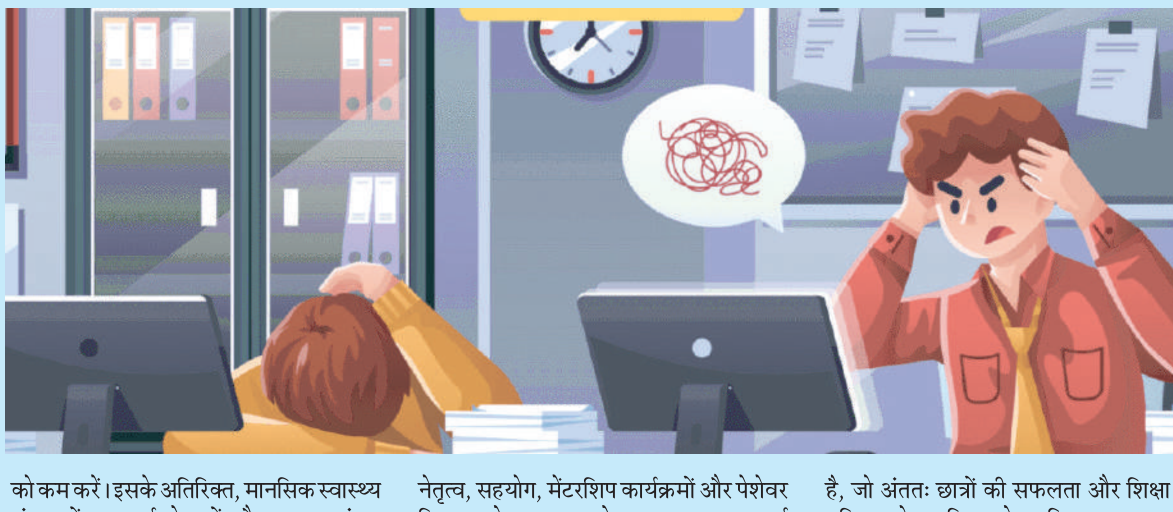

को कम करें। इसके अतिरिक्त, मानसिक स्वास्थ्य संसाधनों, परामर्श सेवाओं और तनाव प्रबंधन कार्यक्रमों की पेशकश करना भावनात्मक चुनौतियों का सामना करने में शिक्षकों का समर्थन कर सकता है। वेतन बढ़ाना, वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना और शिक्षकों के प्रयासों को मान्यता देना, नौकरी की संतुष्टि को बढ़ा सकता है और वित्तीय तनाव को कम कर सकता है। निष्कर्ष इन सबसे ऊपर, घंटे के संचार को सीमित करके कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देना, पर्याप्त ब्रेक सुनिश्चित करना और लचीले शेड्यूल की पेशकश करना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, मजबूत नेतृत्व, सहयोग, मेंटरशिप कार्यक्रमों और पेशेवर विकास के माध्यम से एक सहायक कार्य वातावरण को बढ़ावा देना शिक्षकों को मूल्यवान महसूस कर सकता है। अंत में, अत्यधिक मानकीकृत परीक्षण को कम करके शिक्षकों को अधिक स्वायत्तता प्रदान करना और उन्हें आकर्षक डिजाइन करने की अनुमति देना, छात्र-केंद्रित पाठ प्रेरणा और पूर्ति को बढ़ावा दे सकते हैं। इस बात से कोई इनकार नहीं है कि शिक्षक बर्नआउट एक गंभीर मुद्दा है जो तत्काल ध्यान देने की मांग करता है। उचित हस्तक्षेप के बिना, शिक्षा प्रणाली भावुक और कुशल शिक्षकों को खोने का जोखिम उठाती है, जो अंततः छात्रों की सफलता और शिक्षा के भविष्य को प्रभावित करेगा। शिक्षक कल्याण में निवेश करना केवल अपने जीवन में सुधार करने के बारे में नहीं है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करने के बारे में है। निष्कर्ष निकालने के लिए, शिक्षक शिक्षा की रीढ़ हैं। फिर भी, पेशे की बढ़ती मांगों ने कई शिक्षकों को शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक रूप से सूखा दिया है। शिक्षकों की समाज के प्रति बड़ी जिम्मेदारी है। यदि वे भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक रूप से फिट हैं, तो वे एक राष्ट्र बनाने के लिए जो कुछ भी ले सकते हैं उसे वितरित कर सकते हैं

भूलते भागते क्षण

विजय गर्ग

एक छोटे से पार्क में दस-बारह साल के पांच-सात बच्चे खेल रहे थे। आज के समय में जब हर बच्चा मोबाइल में घुसा हुआ है, ऐसे समय में इन बच्चों को पार्क सुखद आश्चर्य था। आधुनिक जीवनशैली में घुले और रच-बस गए लोग सोच सकते हैं कि इसमें सुखद आश्चर्य वाली कौन-सी बात है! बच्चे तो पार्क में खेलते ही हैं। मगर सुखद आश्चर्य इस बात का था कि बच्चे एक पेड़ के नीचे कांच की गोलियों से खेल रहे थे। यह खेल एक प्रकार से हमारा देसी खेल है। आमतौर पर उत्तर भारत के गांव-कस्बों में नवंबर से मार्च तक और अन्य महीनों के दौरान भी सुविधानुसार बच्चे बड़े चाव से कांच की गोलियां खेलते हैं। बच्चों को इस प्रकार खेलता देख हममें से कइयों को अपना बचपन याद आना स्वाभाविक ही है और जब बचपन याद आए तो बचपन के खेल भी याद आएंगे।

कांच की गोलियों के साथ-साथ 'सितौलिया' या 'पिट्टू' बहुत सारे वैसे बच्चों का प्रिय खेल होता था, जो आज बड़े हो गए हैं और आधुनिक वीडियो गेम को ही खेल मानते होंगे। यह एक ऐसा खेल है जो भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नामों से खेला जाता है। सात पत्थरों को बड़ी मेहनत से तराश कर गोल पिट्टू बनाए जाते। फिर कपड़े की एक गेंद तैयार कर पांच-सात मित्रों के साथ खेला जाता। एक के ऊपर एक पिट्टू जमा कर गेंद से पिट्टू गिराई जाती। दिमाग और शारीरिक चपलता का अद्भुत मिश्रण था यह खेल। उस समय के लोग 'छुपम छुपाई' या — आइस-पाइस' को कैसे भूल सकते है? दिन में तो खेलते ही थे, लेकिन अक्सर संध्या के मद्धिम अंधेरे में इस खेल का आनंद अलग ही होता था। जब सारे मित्र निर्धारित क्षेत्र में छिप जाते और कोई एक उन्हें ढूंढ़ता। साथियों को ढूंढ़ने और 'धप्पा' करने में जो आनंद और सुख की अनुभूति होती थी, उसको शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। वह तो बस खेलने वाला ही जान सकता है।

एक खेल में एक साथी अपने एक पैर को उठाकर एक पैर से चलकर या दौड़कर अपने साथियों में से किसी एक को पकड़ने की कोशिश करता था। बाकी साथी दांए-बांए होकर, दौड़कर न केवल अपने आपको बचाते, बल्कि पकड़ने वाले बच्चे को छेड़ते। उसके सिर पर या पीठ पर हल्की-फुल्की चपत लगाते। 'धरणी डंका', जिसमें एक पेड़ के नीचे गोला बनाकर एक छोटे से डंडे को पैर के नीचे से फेंका जाता था। एक साथी जब तक डंडा उठाकर लाता, तब तक बाकी साथी पेड़ पर चढ़ जाते। डंडा उठाकर लाने वाला डंडे को गोले में रखकर पेड़ पर चढ़कर किसी साथी को पकड़ने या छूने की कोशिश करता। बाकी बच्चे पेड़ से कूदकर डंडा उठाकर फिर फेंकने की कोशिश करते। बड़ा ही मजेदार खेल था।

इनके अतिरिक्त पोसम पा, हरा समंदर गोपीचंदर, घोड़ा जमाल खाई, पकड़म पकड़ाई, गुल्ली-डंडा, गुट्टे, भर-चर, स्टापू या पहलक - दुहलक, कापी में क्रास-जीरो, खाने बनाना, अंत्याक्षरी आदि कितने ही ऐसे खेल थे जो हमारी दिनचर्या के अनिवार्य अंग थे। अंत्याक्षरी कभी गीतों की, तो कभी दोहों-पदों की, कभी अंग्रेजी की वर्तनी की तो कभी गांव, शहर और देश के नामों की होती। अच्छी बात यह थी कि ये सारे ऐसे खेल थे, जिनमें लड़के- लड़कियों के बीच भेदभाव नहीं था। सभी मिलकर ये खेल खेलते।

उन खेलों की विशेषता यह थी कि इनसे शरीर के साथ-साथ दिमागी कसरत भी खूब होती। सामान्य ज्ञान भी खूब बढ़ता। इनके अतिरिक्त खो-खो, कबड्डी, फुटबाल, किक्रेट आदि भी साथ-साथ चलता रहता। फिर क्रिकेट की ऐसी आंधी आई जिसमें सभी खेल लगभग उड़ते दिखाई दिए। रही-सही कसर टीवी और वीडियो गेम ने पूरी कर दी। आगे चलकर इंटरनेट और मोबाइल ने सब कुछ को ग्रास लिया। हम लाख दावा करें हमारी शिक्षा प्रणाली में सुधार का, लेकिन पिछले पंद्रह से बीस सालों में पढ़ाई-लिखाई का जबरदस्त तनाव और दबाव भी बच्चे झेल रहे हैं और यह कम होने के स्थान पर बढ़ ही रहा है। अगर आज की बात करें तो टीवी, इंटरनेट, मोबाइल और पढ़ाई-लिखाई के दबाव ने मिलकर बच्चों से उनका बचपन छीन लिया है।

कहानी: बहू का काम

विजय गर्ग

ऑफिस से आने के बाद मैंने अभी घर में प्रवेश किया ही था कि देखा तो सामने सोफे पर सासू मां और ननद दिक्षा मुंह फुला कर बैठी हुई थी, जबकि पति समर का चेहरा भी गुस्से में तिल मिला रहा था। और तीनों ही मुझे घूर रहे थे। जैसे पता नहीं मैं क्या कर दिया हो।

पर किया तो सचमुच मैंने ही था। मुझे मन ही मन समझ में आ गया कि आखिर आग लग ही गई, जो कि मैं सचमुच लगाना चाहती थी।

लेकिन इतनी जल्दी आग लगेगी, इसका अंदाजा मुझे नहीं था। अभी एक घंटे पहले ही तो मैंने अपना काम किया था। और उसका असर इतनी तेज हुआ। मुझे तो यकीन नहीं हो रहा था।

खैर, मैं अपनी तरफ से कोई बात शुरू नहीं करना चाहती थी। मैं तो चाहती थी कि शुरुआत ये लोग खुद करें। इसलिए बिना कुछ कहे अभी मैं कमरे में जा ही रही थी कि सासू मां ने मुझे रोक दिया,

" कहां जा रही है? पहले हमें जवाब देकर जा "

मैंने अपने कदम वही रोक दिए और उनकी तरफ पलट कर देखा। और फिर अनजान बनते हुए कहा,

" क्या हुआ मम्मी जी? कोई बात हो गई है क्या? आज आप बड़ी गुस्से में लग रही हो "

मेरी बात सुनकर सासू मां और ज्यादा चिढ़ गई। और फिर गुस्से में बोली,

" आहा! देखो तो इसे। कैसे अनजान बन रही है। जैसे कुछ हुआ ही ना हो। सारी दुनिया में हमारी बुराई करती फिर रही है और कह रही है कि आखिर क्या हुआ। सारी दुनिया भर में ढिंढोरा पिटते फिर रही है कि हम इसकी कमाई खाते हैं। हमारा घर का खर्चा ही इसके पैसों से चलता है। सारी दुनिया में हमारी जग हंसाई करती फिर रही है "

उनकी बात सुनकर मैंने हैरान होते हुए कहा,

" पर मम्मी जी, मैंने तो किसी से कुछ भी नहीं कहा। भला आपको किसने क्या कह दिया "

" अच्छा! भाभी आपने अभी एक घंटे पहले बुआ जी से फोन करके नहीं कहा कि इस घर की ईएमआई आपकी सैलरी से जाती है। यहां तक कि कई बार मम्मी की दवाई भी आपके पैसों से आती है। घर के खर्चों में आप भी अपनी सैलरी से हिस्सा देती हो "

ननद दिक्षा ने तमतमाते हुए कहा।

इससे पहले कि मैं ननद को जवाब देती, तभी पति समर भी बीच में तमक कर बोले,

" अरे, मैं भी कमाता हूं। इस घर में बराबर पैसा खर्च करता हूं। लेकिन एहसान नहीं जताता हूं कि मैंने इतना कुछ किया है। सच ही कहा है किसी ने। एक आदमी अपनी पूरी कमाई घर में लगा दे तो ये उसकी जिम्मेदारी है। वो इसका ढिंढोरा भी नहीं पिटता। लेकिन एक बहू अगर थोड़े से भी पैसे खर्च कर दे तो एहसान हो जाता है। और फिर वो सबको बताती और फिरती है "

समर की बात सुनकर मैंने कहा,

" पर मैंने तो बुआ जी से सिर्फ इतना ही कहा था कि मेरी सैलरी का कुछ हिस्सा मैं घर में खर्च करती हूं। तो इसमें गलत क्या है? अब करती हूं तो करती हूं। झूठ तो कुछ भी नहीं बोला था मैंने। और वैसे भी फोन मैंने नहीं किया था। बुआ जी ने हाल-चाल पूछने के लिए फोन किया था तो बातों ही बातों में ये बात बोली थी मैंने "

मैंने इतने आराम से कहा कि सामने वाला इंसान और ज्यादा गुस्से में हो गया,

" अच्छा! ये गलत नहीं है? ये महारानी सब को कहती फिर रही है कि ये हमारे खर्चे उठाती है। जैसे इसके आने से पहले हमारे घर में तो खर्चे नहीं होते थे। और ऊपर से अब भोली बन रही है। घर सबका है। सब मिलकर अपना अपना योगदान देते हैं घर के खर्चों को पूरा करने में। तो एहसान जताने की जरूरत क्या है "

सासू मां हाथ नचाते हुए बोली।

" अच्छा मम्मी जी। आपको मेरा कहना बुरा लग रहा है? तो फिर एक बात बताइए। जब मैं कमाने जाती हूं तो घर का सारा काम करके जाती हूं। उससे मुझे कोई समस्या नहीं है। लेकिन जब कोई काम घर में रह जाता है। और वो घर के छोटे-मोटे काम आप लोग कर देते हो। तो फिर आप लोग मुझ पर एहसान क्यों जताते हो। और फिर सबको कहते फिरते हो कि ये काम हमने किया, वो काम हमने किया। बहु तो काम छोड़ कर चली गई। जब घर सबका है तो काम की जिम्मेदारी भी सबकी है। फिर मुझ पर ऐसा एहसान क्यों। क्या ये गलत नहीं है?"

मेरे ऐसा कहते ही तीनों एक दूसरे की शक्ल देखने लगे। पर मैंने बोलना जारी रखा,

" क्या कह रहे थे आप? एक आदमी अपनी कमाई पूरी घर में लगा देता है लेकिन उसका ढिंढोरा नहीं पिटता। लेकिन अगर पत्नी के काम में थोड़ी सी मदद कर देता है तो उसका ढिंढोरा हर तरफ पीट देता है। तो फिर उसे तो बुरा मानना ही नहीं चाहिए जब पत्नी ये कहती है कि मैं भी कमा कर घर में खर्च करती हूं। मैंने तो एक बार कहा उसमें आप लोग चिढ़ गए। सोचो आप लोग तो अक्सर मेरे बारे में इस तरह की बातें करते हो। मुझे कैसा लगता होगा"

अब तीनों बिल्कुल चुप थे। उन लोगों को ऐसे ही छोड़कर मैं अपने कमरे में आ गई।

अक्सर यही होता था मेरे साथ। मेरी जॉब भी सुबह 9:00 से 5:00 की थी लेकिन ऑफिस जाने से पहले सुबह जल्दी उठकर मैं घर का सारा काम करके जाती थी। जिस समय मैं काम कर रही होती थी, उस समय घर में कोई भी किसी काम को हाथ तक नहीं लगाता था। मतलब सारा काम मेरी जिम्मेदारी थी।

लेकिन हूं तो इंसान ही। कई बार कुछ काम रह जाते थे। ऑफिस टाइम पर पहुंचना होता था। इस कारण उन काम को मैं छोड़ देती थी।

लेकिन समस्या उसके बाद शुरु होती थी। सासू मां और ननद पीछे से वो काम कर तो देती थी, लेकिन उसके बाद आस पड़ोस में, मौसी सास, मामी सास सबको जरूर बोल देती थी। और फिर वो लोग जब मुझसे मिलती तो मुझसे दस सवाल करती।

" अरे तुम्हारी सास की आराम करने की उम्र है। उन्होंने तो अपने टाइम पर बहुत काम कर लिया। अब तो उन्हें आराम दो। बहू के होते हुए वो घर का काम करें अच्छा लगता है क्या। अगर नौकरी करने का इतना ही शौक है तो घर का पूरा काम करके जाया करो। आखिर वो काम भी तुम्हारी पहली जिम्मेदारी है"

सुनकर बुरा तो लगता है लेकिन क्या ही कहती। ये लोग तो बेचारे बन जाते थे और मैं अत्याचारी। जब इस बारे में समर से बात करती तो समर उल्टा मुझे ही डांट देते,

" इतना ही बुरा लगता है तो घर के काम करके जाया करो। क्यों काम छोड़ कर जाती हो"

सासू मां से कहती तो वो और चिढ़ जाती,

" अब तुम काम छोड़ जाती हो तो मुझे तो करना ही पड़ता है। जो सच है वही तो कह रही हूं। अगर लोगों के सामने इतना शर्मिंदगी लगती है तो सुबह जल्दी उठकर काम कर लिया करो"

अब कैसे समझाऊं? सुबह पांच बजे तो उठती हूं। और कितना जल्दी उठूं? इंसान हूं, कोई मशीन थोड़ी ना हो कि काम में ही लगी रहूं। आखिर मशीन को भी आराम चाहिए होता है। अब आज की ही बात लो। सुबह मैं रसोई में काम में लगी हुई थी। सबके लिए खाना और नाश्ता बना लेने के बाद रसोई को साफ कर सबको नाश्ता करने के लिए बोलकर मैं ऑफिस के लिए तैयार होने अपने कमरे में चली गई। जब तैयार होकर अपना टिफिन लेने वापस रसोई में आई तो तुम मेरे पैर वही ठिठक गए। देखा रसोई फैली पड़ी थी।

मुझे ऐसे खड़ी देखकर सासु मां ने कहा,

" हमें पोहे नहीं खाना। आज मेरी और दीक्षा की उपमा खाने की इच्छा हो रही थी। तो सोचा अच्छे से सब्जियां डालकर उपमा ही बना लूं "

अरे उपमा बनाना था तो शौक से बनाती। पर पहले पोहे क्यों बनवाएं। अब बनवाए जो बनवाए लेकिन कम से कम रसोई तो साफ कर देती। मैंने मन ही मन सोचा। पर मेरा टाइम हो चुका था। तो रसोई को ऐसे ही छोड़कर मैं अपना टिफिन लेकर ऑफिस के लिए रवाना हो गयी।

मुझे पता था कि इस बारे में भी बातें जरूर होगी। और मेरा अंदाजा बिल्कुल सही निकला, जब कुछ देर पहले बुआ सास का फोन आया। मेरे फोन उठाते ही उन्होंने कहा,

" अरे बहू, कैसी हो तुम? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है?"

" हां बुआ जी, मेरी तबीयत तो बिल्कुल ठीक है। आप ऐसा क्यों पूछ रही है "

मैंने उल्टा उनसे ही सवाल किया।

" वो दरअसल मैंने आज फोन लगाया था। तब भाभी कह रही थी कि तुम आज भी अपना घर का काम छोड़ कर आ गई थी। और तुम्हारी मम्मी जी अकेले काम कर रही थी तो मुझे लगा कि तुम्हारी तबीयत तो खराब नहीं है। इसलिए तुम्हारे हाल-चाल पूछने के लिए फोन लगाया था "

सुनकर मुझे बुरा लगा। सोचा कि क्या जवाब दूं। पर ये तो हमेशा का ही था। तभी बुआ जी ने कहा,

" देखो बहु, तुम कमा रही हो। पैसा सेव कर रही हो। अच्छी बात है। लेकिन कम से कम उनकी उम्र का भी तो ख्याल रखो। आखिर लोग बहु लाते किस लिए है कि बुढ़ापे में उनका सहारा हो जाए"

सचमुच ऐसा लगा कि वाकई मैं तो बहुत ही बड़ी अत्याचारी हूं। सारा काम करने के बावजूद अगर सिर्फ रसोई साफ नहीं की। तो उसे साफ कर वो बेचारी बन गई। पता नहीं आज मुझे क्या हुआ। हर बार परिवार की इज्जत का सोच कर चुप रह जाती थी। लेकिन ये लोग तो मेरे सिर पर ही चढ़कर नाचने लगे थे। मैंने बुआ जी से कहा,

" बुआ जी कहां पैसे सेव कर पाती हूं मैं। आप तो घर की हो। आपको तो पता ही है कि विराट की इनकम से घर खर्च, दीक्षा की पढ़ाई, कोचिंग का खर्चा, कार की ईएमआई चली जाती है। बचता ही क्या है उनके पास। फिर मकान लोन लेकर हम लोगों ने बनाया था। तो उसकी किस्त के सारे पैसे मैं ही तो देती हूं। फिर मम्मी जी की दवाई के खर्चे भी मुझे ही करने पड़ते हैं। दीक्षा की शादी के लिए अलग से आर डी भी करवा रखी है तो हर महीने उसके पैसे भी कटते हैं। सेविंग तो नाम मात्र की ही होती है"

इसके आगे तो बुआ जी ने कुछ नहीं कहा। बस हाल-चाल पूछ कर फोन रख दिया। पर मुझे अब पक्का पता था कि वो अब घर पर फोन लगाएगी और इस बारे में अपनी भाभी से बात जरूर करेगी।

और मेरा अंदाजा सही भी निकला। और उसके बाद ही ये सारा हंगामा हुआ। फिर उसके बाद सब लोग मुंह खुल कर ही रहे। तीन-चार दिन तक तो किसी ने मुझसे बात भी नहीं की। कोई बात नहीं। ना करें। मुझे क्या फर्क पड़ता है। आखिर कब तक बर्दाश्त करती रहती।

जब उन लोगों ने देखा कि ये तो आप माफी भी नहीं मांग रही तो अपने आप ही सब लोग नॉर्मल हो गए। पर उसके बाद अब कोई मुझे काम का एहसान नहीं जताता। आखिर पता था कि जैसे ही काम का एहसान जताएंगे, वैसे ही मैं भी बोलना शुरू कर दूंगी। आखिर जबान तो मेरी भी अब खुल चुकी थी।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

घर में रखा जा सकता है केवल इतना ही सोना , जानें क्या कहता है नियम

परिवहन विशेष न्यूज

हमारे देश में सोना सिर्फ निवेश का जरिया नहीं है बल्कि इससे लोगों की भावनाएं जुड़ी हुई होती है। लोग ज्यादातर शादी या किसी त्योहार के समय ही सोना खरीदना पसंद करते हैं। क्या आप जानते हैं कि कितना सोने को फिजिकल फॉर्म में घर में रखा जा सकता है ? आइए सोने से संबंधित सभी जरूरी बातें जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में सोना खरीदना काफी शुभ माना जाता है। वहीं ज्यादातर लोग शादी या किसी शुभ अवसर पर ही सोना खरीदना पसंद करते है। इसके साथ ही भारतीय महिलाएं सोने के आभूषण पहनना काफी पसंद करती है। वही लोग अपने बच्चों की शादी के लिए पहले से ही सोना खरीद कर घर में रखते हैं। लेकिन आप एक लिमिट तक ही सोना फिजिकल फॉर्म में रख सकते हैं।

अगर आप इस लिमिट से ज्यादा सोना घर में रखते हैं, तो आपको इनकम टैक्स विभाग को जवाब देना होगा। इसलिए सोना खरीदने से पहले इससे जुड़े नियम चेक कर लें।

Gold limit: घर में कितना सोना रखा जा सकता है ?

सेंट्रल बोर्ड ऑफ डायरेक्ट टैक्सेज (CBDT) के अनुसार कुछ चीजों की खरीद पर कोई टैक्स नहीं लगता है। इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक विरासत में मिला पैसा, एक लिमिट तक सोना खरीद या स्टोर और एग्रीकल्चर में कोई टैक्स नहीं देना होता है।

इसलिए अगर आप घर में एक लिमिट तक सोना स्टोर करते हैं, तो कोई भी आपकी ऑफिशियल तलाशी नहीं ले पाएगा।

अविवाहित महिलाएं- अविवाहित महिलाएं घर में 250 ग्राम ही सोना रख सकती है।

अविवाहित पुरुष- अविवाहित पुरुष को केवल 100 ग्राम सोना रखने की अनुमति दी गई है।

विवाहित महिलाएं- विवाहित महिलाएं 500 ग्राम सोना तक ही रख सकती है।

विवाहित पुरुष- वहीं विवाहित पुरुष घर में 100 ग्राम सोना ही रख सकती है।

GST On Gold: कितना देना होगा टैक्स ?

अगर आप सोना बेचने जाते हैं, तो आपको सोने से हुई कमाई पर सरकार को टैक्स देना पड़ता है। CBDT के सर्कुलर के हिसाब से अगर आप सोना खरीद इसे 3 साल में बेचते है, तो शॉर्ट टर्म कैपिटल गेन टैक्स (Short-Term Capital Gain Tax) देना होगा। इसके साथ ही अगर आप 3 साल से ज्यादा समय के बाद सोना बेचते है, तो आपको लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन टैक्स (Long-Term Capital Gain Tax) देना होगा।

Gold Rate Today: आज क्या रहा सोने का भाव ?

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक आज 14 मार्च, होली के अवसर पर सोने के दाम में बढ़त दर्ज की गई। आज 24 कैरेट सोने का दाम 600 रुपये प्रति ग्राम बढ़ा है। 14 मार्च को 24 कैरेट सोने का दाम 8876.3 रुपये प्रति ग्राम रहा। वहीं 22 कैरेट सोने का दाम 8138.3 रुपये प्रति 10 ग्राम है। 22 कैरेट सोने के दाम में आज 550 रुपये की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

ये पांच डॉक्यूमेंट्स है सबसे जरूरी, यहां जानें योजना से जुड़ी सभी बातें

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के इस बार के विधानसभा चुनाव में बीजेपी पार्टी विजय रही। बीजेपी ने दिल्ली में सत्ता में आने के बाद महिला समृद्धि योजना की घोषणा की। ये घोषणा दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने अंतरराष्ट्रीय दिवस के दिन की थी। इस योजना के तहत महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये की आर्थिक सहायता दी जाएगी।

नई दिल्ली। इस साल दिल्ली के विधानसभा चुनाव में बीजेपी विजय रही। सत्ता में आने के बाद बीजेपी ने महिला सम्मान समृद्धि योजना की घोषणा की। ये घोषणा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर की गई थी। इस योजना का उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना है। इस योजना के तहत महिलाओं को 2500 रुपये की आर्थिक मदद दी जाएगी। इसके लिए सरकार ने 5100 करोड़ रुपये भी आवंटित कर दिए है।

अगर आप भी इस योजना में अप्लाई करने का प्लान बना रहे हैं, तो इससे पहले जान लें कि कौन-से डॉक्यूमेंट्स जरूरी है। अगर आपके पास इनमें से कोई डॉक्यूमेंट नहीं होता है, तो अप्लाई करने में दिक्कत आ सकती है।

ये डॉक्यूमेंट होना है जरूरी

दिल्ली में महिला सम्मान समृद्धि योजना की शुरुआत हो चुकी है। सबसे पहले आपको इस योजना का लाभ उठाने के लिए दिल्ली का निवासी होना जरूरी है। इस योजना के लिए आवेदनकर्ता के पास आधार कार्ड, वोटर आईडी कार्ड और निवास प्रमाण पत्र का होना जरूरी है। ये डॉक्यूमेंट्स अप्लाई करते वक्त मांगे जा सकते हैं।

वहीं अगर किसी महिला के परिवार की आय एक साल में 3 लाख रुपये से ज्यादा है, तो वे इस योजना का लाभ नहीं उठा पाएगी। इसके अलावा महिला की उम्र 18 साल से 60 साल की होनी चाहिए। इसके साथ ही इनकम प्रूफ देने के लिए आय प्रमाण पत्र की आवश्यकता भी होगी। वहीं बीपीएल राशन कार्ड भी लगेगा।

ये महिलाएं नहीं उठा पाएंगी फायदा

इस बारे में मिली जानकारी के मुताबिक इस स्कीम का फायदा वो महिलाएं नहीं उठा पाएंगी, जो नौकरीपेशा है या सरकार को टैक्स जमा करती है। क्योंकि इस स्कीम का उद्देश्य उन महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत बनाना है, जिनकी कोई इनकम नहीं है।

इस स्कीम में अप्लाई करने के लिए दिल्ली सरकार एक ऑनलाइन पोर्टल डिवेलप करने जा रही है। इस पोर्टल पर महिलाएं आसानी से रजिस्ट्रेशन करा सकती है। जिसके बाद सभी आवेदन को वेरीफाई किया जाएगा। आवदेन करते समय, ऊपर बताए गए डॉक्यूमेंट्स मांगे जा सकते हैं।

वहीं इस स्कीम से दिल्ली में रहने वाले कई महिलाओं को फायदा होने वाला है।

आरटीआई से खुलासा: फर्जी दस्तावेजों के आधार पर पाई सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन की नौकरी:- विनोद कुमार

फतेहाबाद/टोहाना 16, मार्च

सरकारी नौकरियों में फर्जीवाड़े के किस्से अक्सर सामने आते रहते हैं, जिनमें न्यायालय के आदेश पर कार्यवाही भी होती है। उसके बावजूद भी सरकारी नौकरियों में फर्जीवाड़ा रुकने का नाम नहीं ले रहा। मामला रोजगार विभाग से जुड़ा हुआ है, जहां एक आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार ने रोजगार निदेशालय हरियाणा के मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में एम.ए. मनोविज्ञान के फर्जी प्रमाण पत्र के आधार पर नौकरी पाने वाली आरोपी महिला श्रीमती सुनील कुमारी का फर्जीवाड़ा उजागर किया है। आरटीआई कार्यकर्ता ने माननीय मुख्यमंत्री, माननीय गृहमंत्री, माननीय प्रधानमंत्री, महामहिम राज्यपाल, महामहिम राष्ट्रपति, से यह भी मांग की हैं कि 2014 में हुई इस भर्ती की उच्च स्तरीय जांच करा कर भर्ती में हुई धांधली में शामिल लोगों और इस फर्जीवाड़े में शामिल उनके सहयोगियों पर धोखाधड़ी का मामला दर्ज करते हुए कार्यवाही करें। राज्य सरकार से मांग की है कि 2014 में हुई सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन की भर्ती की निष्पक्ष जांच करवाई जाए और दोषी पाए जाने वाले अधिकारियों के खिलाफ रिकवरी के साथ-साथ एफआईआर भी दर्ज करवाई जाए।

सरकारी नौकरियों में मिलने वाले वेतन भत्तों व सुविधाओं के मोह के कारण आम वर्ग किसी भी तरीके से सरकारी नौकरी हथियाना चाहता है। आमवर्ग के इसी सपने को पूरा करने के लिए हर फील्ड में दलालों का बड़ा वर्ग सक्रिय है, जिसके कारण आए दिन सरकारी भर्तियों में घोटाले सामने आते रहते हैं। विभिन्न सरकारों और न्यायालयों की सक्रियता के कारण फर्जी डिग्री और अन्य भ्रष्ट कारणों से मिली नौकरियों पर कारवाई की जाने पर भी इस तरह के फर्जीवाड़े रुकने का नाम नहीं ले रहे। सरकारी नौकरी की चाह रखने वाले और दलाल मिलकर फिर से नए तरीके ढूंढ कर सक्षम लोगों को मिलने वाली सरकारी नौकरियों पर हाथ साफ कर जाते हैं।

आरोपी महिला अधिकारी को आयुक्त एवं सचिव हरियाणा सरकार रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा किया जा चुका है निलंबित

फर्जी मार्कशीट के आधार पर नौकरी हासिल करने के मामले में आरोपी महिला श्रीमती सुनील कुमारी सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन को इंक्वायरी रिपोर्ट के आधार पर डिपार्टमेंट की ओर से को आयुक्त एवं सचिव हरियाणा सरकार रोजगार विभाग हरियाणा द्वारा पत्र क्रमांक ए-15(184) 471-75 दिनांक:- 04.01.2023 के तहत निलम्बित किया जा चुका है तथा हरियाणा सिविल सेवा (दण्ड तथा अपील) नियम, 2016 के अंतर्गत नियम-7 अधीन चार्जशीट जारी की जा चुकी है तथा शिकायत पर नियमानुसार अभीष्ट कार्यवाही प्रशस्त की जा चुकी है।

सिक्किम राज्य की सरकार ने भी लिखित में सबूत दिया की आरोपी महिला अधिकारी सुनील कुमारी का एम.ए. मनोविज्ञान का प्रमाण पत्र वैद्य/वास्तविक नहीं है:-

ईस्टर्न इंस्टीट्यूट फॉर इंटीग्रेटेड लर्निंग इन मैनेजमेंट यूनिवर्सिटी, (ईआईआईएलएम यूनिवर्सिटी) जोरेथांग, जिला नामची, सिक्किम, भारत का प्रस्तुत शैक्षिक प्रमाण-पत्रों (मास्टर ऑफ आर्ट्स (मनोविज्ञान) की फोटोकॉपी) सिक्किम सरकार, उच्च शिक्षा निदेशालय, शिक्षा विभाग, ताशीलिंग सचिवालयः गंगटोक, सिक्किम से उनके पत्र संदर्भ क्रमांक 27/डीआईआर/एचई/ईडीएन/ईआईआईएलएमयू दिनांक 22.05.2023 संदर्भ आपके पत्र क्रमांक 75/ ईडीएन/ सीपीग्राम्ज /जीओएस, दिनांक 06.05.2023 के माध्यम से एक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है कि सुनील कुमारी की संलग्न मार्कशीट कॉपी, जिसका नामांकन क्रमांक ईआईआईएलएमयू /09/ एफ 10330 है वैध/वास्तविक नहीं है तथा संदर्भ क्रमांक 186/डीआईआर/एचई/ईडीएन/ईआईआईएलएमयू दिनांक 05.01.2024 संदर्भ आपके पत्र क्रमांक 28/ ईडीएन/ सीपीग्राम्ज / जीओएस, दिनांक 05.01.2024, उपरोक्त विषय पर, यह आपकी जानकारी के लिए है कि मास्टर ऑफ आर्ट्स (मनोविज्ञान) ईआईआईएलएम विश्वविद्यालय, सिक्किम के लिए यूजीसी द्वारा मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम नहीं है। इसलिए सुनील कुमारी की संलग्न मार्कशीट कॉपी, जिसका नामांकन क्रमांक ईआईआईएलएमयू /09/ एफ 10330 है वास्तविक नहीं है।

आरोप साबित होने के बावजूद भी उच्च अधिकारी एक आरोपी महिला अधिकारी को बचाने का कर रहे है भरपूर प्रयास

आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार ने आरोप लगाया कि प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार युवा सशक्तिकरण एवं उद्यमिता तथा निदेशक रोजगार निदेशालय हरियाणा के उच्च अधिकारी कार्यवाही करने की बजाय कुंडली मारे बैठे हुए है और एक आरोपी महिला अधिकारी को बचाने का भरपूर प्रयास कर रहे है। शिकायत का संज्ञान लेते हुए सक्षम प्राधिकारी द्वारा सुनील कुमारी सहायक रोज़गार अधिकारी को हरियाणा सिविल सेवा नियम 2016 के अंतर्गत नियम 7 अधीन आरोप पत्र जारी किया जा चुका है। हरियाणा सिविल सेवा नियम 2016 के अंतर्गत नियम 7 के पैरा (बी) अधीन जारी आरोप पत्र आरटीआई एक्ट 2005 के सेक्शन 8(1)(जे) के अनुसार तृतीय पार्टी सूचना बनती है जो की किसी अन्य को देय नहीं बनती है। सीएम विंडो पोर्टल पर आरोप पत्र अपलोड करने पर वह शिकायतकर्ता विनोद कुमार को मिल जाएगी जोकि उचित नहीं है। अतः शिकायत को दफ्तर दाखिल करने का कष्ट करे।

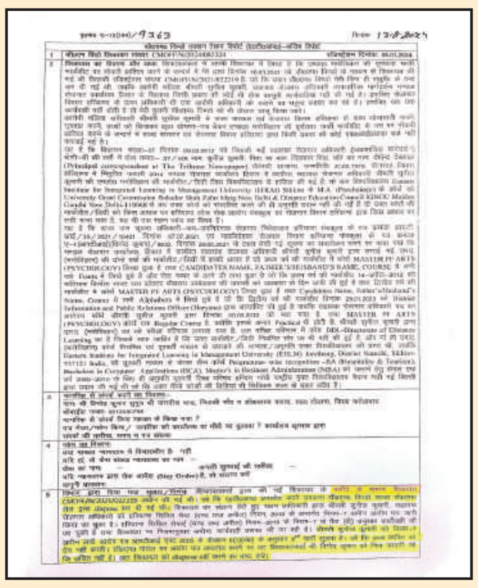

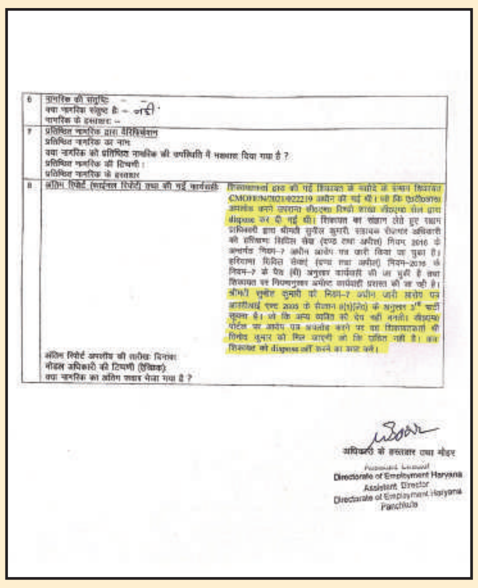

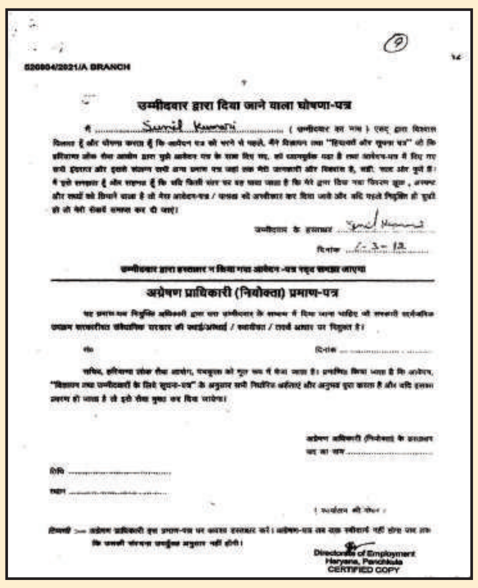

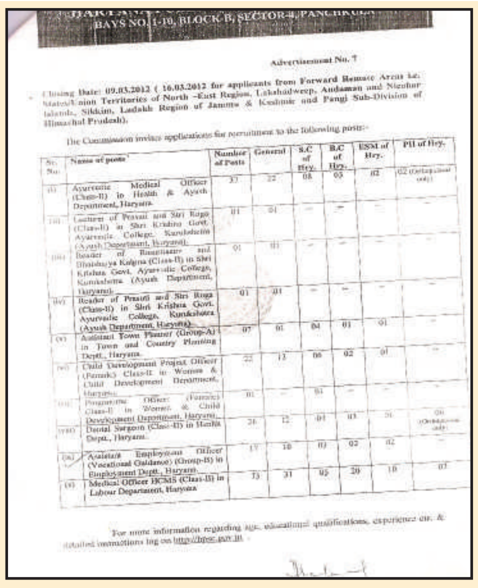

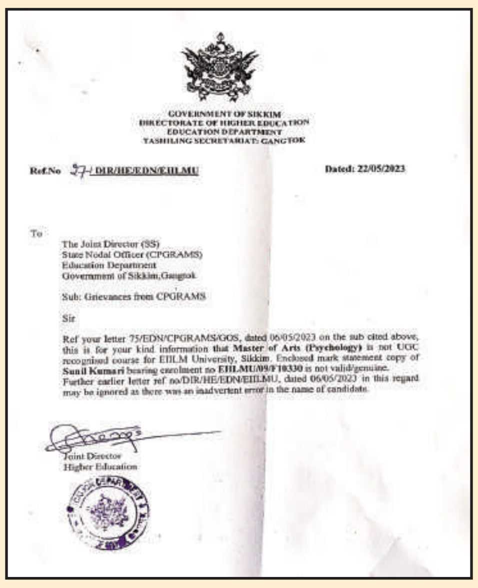

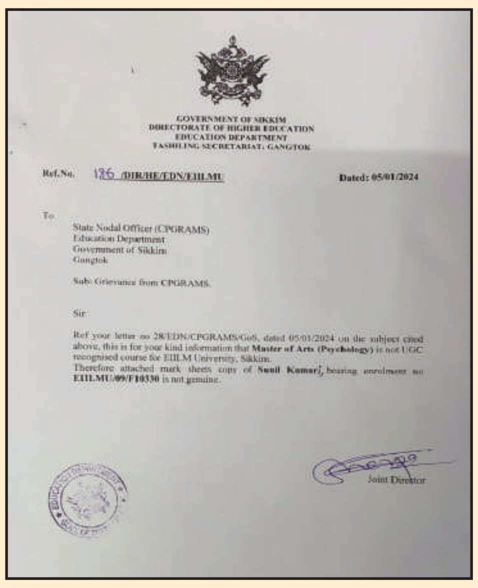

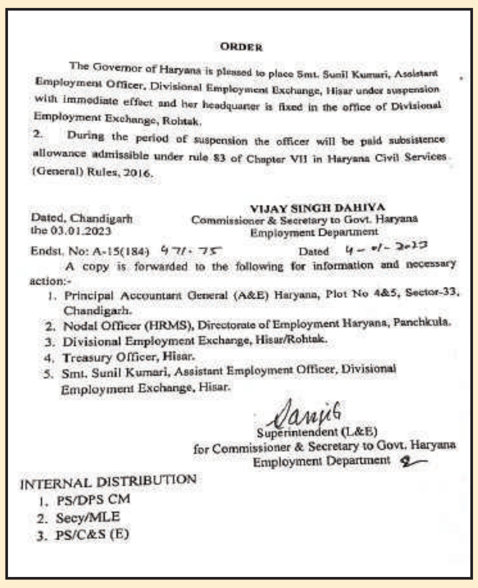

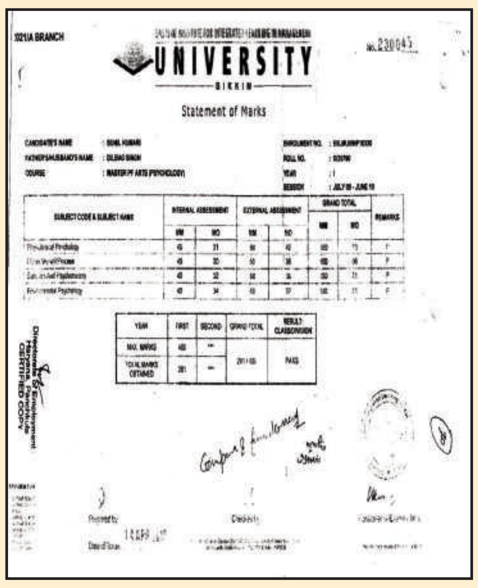

ORDER

The Governor of Haryana is pleased to place Smt. Sunil Kumari, Assistant Employment Officer, Divisional Employment Exchange, Hisar under suspension with immediate effect and her headquarter is fixed in the office of Divisional Employment Exchange, Rohtak.

2. During the period of suspension the officer will be paid subsistence allowance admissible under rule 83 of Chapter VII in Haryana Civil Services (General) Rules, 2016.

Dated, Chandigarh the 03.01.2023

VIJAY SINGH DAHIYA
Commissioner & Secretary to Govt. Haryana
Employment Department

Endst. No: A-15(184) 471-75 Dated 4-01-2023

A copy is forwarded to the following for information and necessary action:-

1. Principal Accountant General (A&E) Haryana, Plot No 4&5, Sector-33, Chandigarh.
2. Nodal Officer (HRMS), Directorate of Employment Haryana, Panchkula.
3. Divisional Employment Exchange, Hisar/Rohtak.
4. Treasury Officer, Hisar.
5. Smt. Sunil Kumari, Assistant Employment Officer, Divisional Employment Exchange, Hisar.

Superintendent (L&E)
for Commissioner & Secretary to Govt. Haryana
Employment Department

INTERNAL DISTRIBUTION
1. PS/DPS CM
2. Secy/MLE
3. PS/C&S (E)

फतेहाबाद के गांव पारता के आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार ने की थी शिकायत, निदेशालय की जांच में खुला पूरा खेल।

10 मार्च 2021 को फतेहाबाद के गांव पारता के रहने वाले आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार की ओर से सी0 एम0 विण्डो पर शिकायत दी गई थी, तथा उसके बाद भी लगातार पत्राचार चलता रहा। आरटीआई कार्यकर्ता विनोद कुमार ने शिकायत एंप्लॉयमेंट डिपार्टमेंट हरियाणा में कार्यरत सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन आरोपी महिला श्रीमती सुनील कुमारी की मास्टर डिग्री पर सवाल उठाते हुए उसे फर्जी बताया था। इसके बाद रोजगार निदेशालय की ओर से इसकी जांच शुरू की गई। इसके लिए बाकायदा एक कमेटी का भी गठन किया गया था। डिपार्टमेंट की ओर से बनाई गई कमेटी ने सिक्किम में जाकर इंक्वायरी की। जिसके बाद साफ हो गया कि श्रीमती सुनील कुमारी की मार्कशीट पूर्णतयाः फर्जी है।

बड़ा सवाल... कैसे पास हुई सर्टिफिकेट? किसी भी सरकारी विभाग में नौकरी से पहले कागजातों की गहनता से जांच होती है। डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन के बगैर कॉलेजों में दाखिले तक नहीं होते। ऐसे में सवाल ये है किसी विवि में जो कोर्स करवाया ही नहीं जाता उसके नाम की सर्टिफिकेट पर नौकरी कैसे दी गई? हरियाणा लोक सेवा आयोग के जांच पैनल से ये सर्टिफिकेट पास होना अपने आप में हैरान करने वाला है। यदि जांच हों तो और भी फर्जी डिग्री खेल सामने आ सकता है।

संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर की जयन्ती के दिन जारी हुई प्रथम वर्ष की मार्कशीट

श्रीमती सुनील कुमारी द्वारा सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन के पद हेतु आवेदन तो दिनांकः- 06.03.2012 को किया गया था, लेकिन एमए मनोविज्ञान की मार्कशीट 20 अप्रैल 2012 को जारी की हुई हैं, जबकि प्रथम वर्ष की मार्कशीट तो 14 अप्रैल 2012 को संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर की जयन्ती को छुट्टी के दिन जारी की हुई हैं, दोनों वर्ष की मार्कशीट के अक्षरों में भी आपस में तालमेल नहीं हैं।

18 फरवरी 2014 में नियुक्ति, मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में ज्वाइन किया, अब भी यहीं है पोस्टेड

हरियाणा लोक सेवा आयोग (एचपीएससी) की ओर से सहायक रोजगार अधिकारी व्यावसायिक मार्गदर्शन की पोस्ट के लिए वैकेंसी निकाली थी। उस समय आरोपी महिला श्रीमती सुनील कुमारी ने भी इस पद के लिए दिनांकः- 06.03.2012 को आवेदन किया था। विभाग की ओर से उस दौरान मास्टर डिग्री की क्वालिफिकेशन मांगी गई थी। जिस पर श्रीमती सुनील कुमारी की ओर से यहां एमए (साईक्लॉजी) दूरवर्ती मोड की सत्र 2009-2011 की मार्कशीट को दिया गया था। इसके बाद श्रीमती सुनील कुमारी का सेलेक्शन हो गया। फरवरी 2014 को विभाग की तरफ से श्रीमती सुनील कुमारी का नियुक्ति पत्र जारी कर दिया गया तथा उसके बाद ही श्रीमती सुनील कुमारी ने 18 फरवरी 2014 में मण्डल रोजगार कार्यालय हिसार में ड्यूटी ज्वाइन की थी। वर्तमान में भी आरोपी महिला अधिकारी श्रीमती सुनील कुमारी हिसार में ही पोस्टेड है। **यूजीसी भी नकार चुकी है**

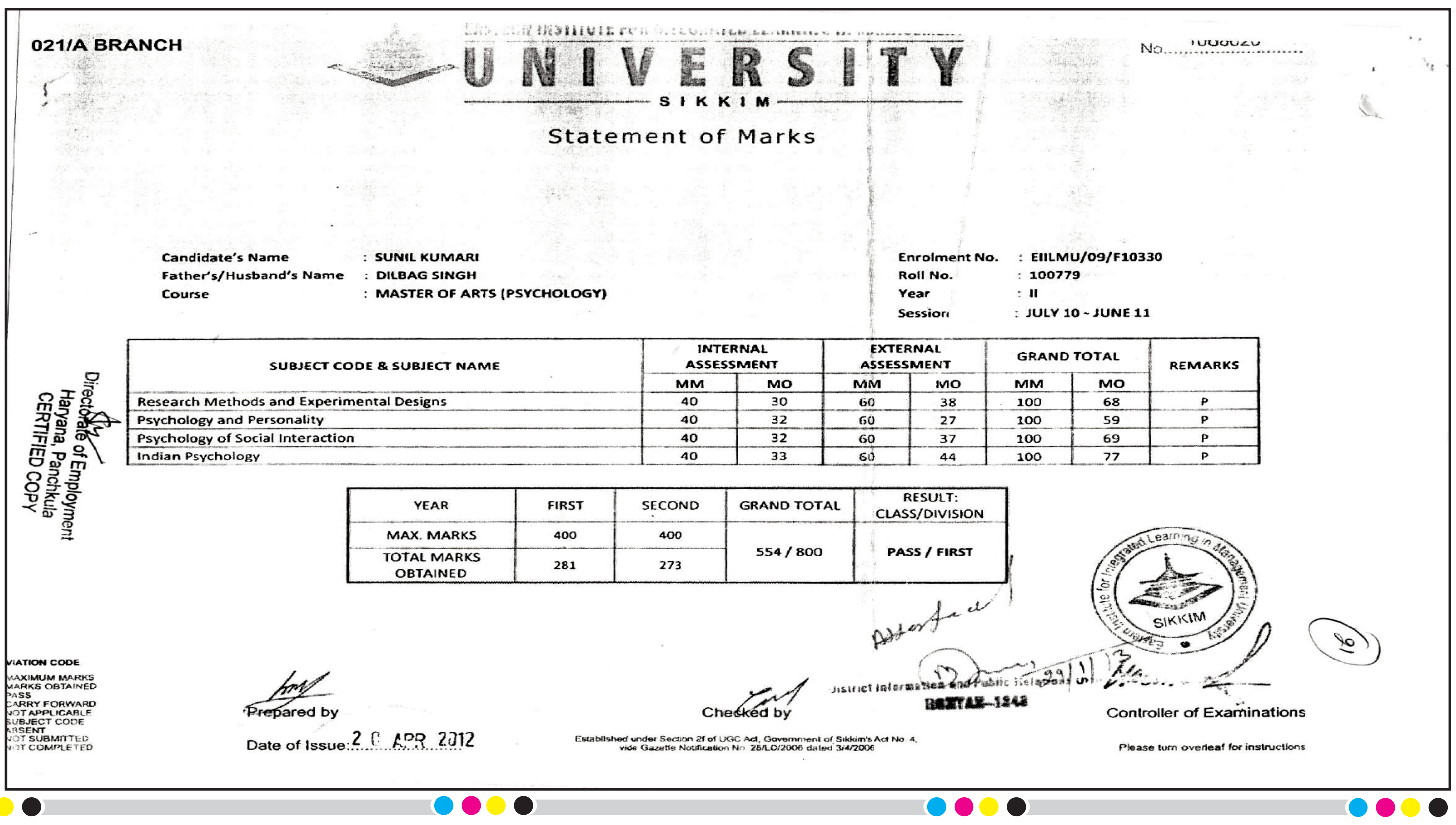

021/A BRANCH

UNIVERSITY
SIKKIM
Statement of Marks

No. 1068020

Candidate's Name : SUNIL KUMARI
Father's/Husband's Name : DILBAG SINGH
Course : MASTER OF ARTS (PSYCHOLOGY)
Enrolment No. : EIILMU/09/F10330
Roll No. : 100779
Year : II
Session : JULY 10 - JUNE 11

SUBJECT CODE & SUBJECT NAME	INTERNAL ASSESSMENT		EXTERNAL ASSESSMENT		GRAND TOTAL		REMARKS
	MM	MO	MM	MO	MM	MO	
Research Methods and Experimental Designs	40	30	60	38	100	68	P
Psychology and Personality	40	32	60	27	100	59	P
Psychology of Social Interaction	40	32	60	37	100	69	P
Indian Psychology	40	33	60	44	100	77	P

YEAR	FIRST	SECOND	GRAND TOTAL	RESULT: CLASS/DIVISION
MAX. MARKS	400	400	554 / 800	PASS / FIRST
TOTAL MARKS OBTAINED	281	273		

Directorate of Employment Haryana, Panchkula CERTIFIED COPY

ABBREVIATION CODE: MAXIMUM MARKS, MARKS OBTAINED, PASS, CARRY FORWARD, NOT APPLICABLE, SUBJECT CODE, ABSENT, NOT SUBMITTED, NOT COMPLETED

Prepared by
Date of Issue: 20 APR 2012
Checked by
Established under Section 2f of UGC Act, Government of Sikkim's Act No. 4, vide Gazette Notification No. 28/LO/2006 dated 3/4/2006
District Information and Public Relations
Controller of Examinations
Please turn overleaf for instructions

संस्कारशाला: भावनात्मक बुद्धिमत्ता – परिवार के साथ बंधन और भावनात्मक मूर्खता से बचाव : डॉ. अंकुर शरण

(संस्कारशाला का यह विशेष सत्र डॉ. अंकुर शरण और उनकी नानी अम्मा के बीच एक दिलचस्प बातचीत पर आधारित है, जिसमें वे पारिवारिक मूल्यों, बुजुर्गों से सीखने और भावनाओं के सही प्रबंधन पर चर्चा करते हैं।)

नमस्कार नानी अम्मा! आज की हमारी संस्कारशाला में आपसे एक महत्वपूर्ण विषय पर बात करनी है – भावनात्मक बुद्धिमत्ता और पारिवारिक रिश्तों को मजबूत बनाए रखना। आजकल लोग भावनाओं को महत्व तो देते हैं, लेकिन कई बार वे इतने भावुक हो जाते हैं कि लोग उनका गलत फायदा उठा लेते हैं।

नानी अम्मा:

बिल्कुल बेटा! भावनाएँ तो इंसान की सबसे बड़ी शक्ति होती हैं, लेकिन अगर उन्हें सही तरीके से न संभाला जाए, तो यह कमजोरी भी बन सकती हैं। पहले के ज़माने में परिवार के बुजुर्ग बच्चों को धैर्य और समझदारी सिखाते थे, लेकिन आजकल लोग बुजुर्गों की सीख को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

अंकुर:

सही कह रही हैं नानी अम्मा। लेकिन क्या आप बता सकती हैं कि पहले के समय में परिवार में भावनात्मक बंधन को मजबूत कैसे रखा जाता था?

नानी अम्मा:

पहले परिवार में हर सदस्य का एक-दूसरे से आत्मीय संबंध होता था। हम अपने दुःख-सुख एक साथ बांटते थे। जब कोई परेशानी आती थी, तो पूरा परिवार साथ खड़ा होता था। आजकल लोग भावनाओं को सोशल मीडिया पर व्यक्त करते हैं, लेकिन अपने घरवालों से खुलकर बात नहीं करते। यही दूरी परिवारों को कमजोर बना रही है।

अंकुर:

बिल्कुल! इस डिजिटल युग में परिवारों में भावनात्मक जुड़ाव कम होता जा रहा है। बच्चे माता-पिता के साथ कम समय बिताते हैं, और बुजुर्गों से सीखने के बजाय गूगल और यूट्यूब पर समाधान ढूंढते हैं। इससे पारिवारिक मूल्यों की अनदेखी हो रही है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता: भावुक बनें, लेकिन भावनात्मक मूर्ख नहीं

अंकुर:

नानी अम्मा, कई लोग यह नहीं समझ पाते कि भावुक होने और भावनात्मक मूर्ख बनने में क्या अंतर है। क्या आप इसे थोड़ा स्पष्ट कर सकती हैं?

नानी अम्मा:

बिल्कुल बेटा!

भावुक व्यक्ति अपनी भावनाओं को पहचानता है और सही समय पर सही प्रतिक्रिया देता है।

भावनात्मक मूर्ख बिना सोचे-समझे निर्णय लेता है और अक्सर दूसरों के जाल में फँस जाता है।

भावुक व्यक्ति अपने परिवार और रिश्तों की कद्र करता है, लेकिन अपनी सीमाएँ भी समझता है।

भावनात्मक मूर्ख दूसरों की भावनाओं में इतना बह जाता है कि लोग उसका फायदा उठाने लगते हैं।

भावनात्मक मूर्खता से बचने के लिए 5 महत्वपूर्ण बातें

बुद्धिमानी से निर्णय लें: कोई भी निर्णय लेने से पहले ठंडे दिमाग से सोचें, भावनाओं में बहकर फैसले न लें।

सीमाएँ तय करें: हर रिश्ते में एक सीमा होनी चाहिए। जरूरत से ज्यादा समर्पण आपकी कमजोरी बन सकता है।

बुजुर्गों से सीखें: हमारे नाना-नानी, दादा-दादी के अनुभव अनमोल होते हैं। उनसे सीखकर जीवन को संतुलित बनाएं।

धैर्य और आत्मनियंत्रण: गुस्सा या अधिक खुशी में बहकर कोई भी निर्णय न लें। आत्मनियंत्रण सबसे बड़ी ताकत है।

परिवार के साथ समय बिताएं: परिवार के साथ जितना अधिक समय बिताएंगे, उतना ही भावनात्मक रूप से मजबूत रहेंगे।

संस्कारशाला की सीख:

भावनाएँ हमारी ताकत हैं, कमजोरी नहीं। उन्हें सही दिशा में इस्तेमाल करें। बुजुर्गों के अनुभवों से सीखें और अपने रिश्तों को मजबूती से निभाएं, लेकिन बिना भावनात्मक मूर्ख बने।

नानी अम्मा का आशीर्वाद:

"बेटा, जीवन में प्रेम, करुणा और सहानुभूति जरूरी हैं, लेकिन साथ ही विवेक और आत्मसम्मान भी। भावनाओं को अपनी शक्ति बनाओ, कमजोरी नहीं।"

डॉ. अंकुर का निष्कर्ष:

"संस्कारशाला में हमें नानी अम्मा से एक अनमोल सीख मिली – रिश्तों की कद्र करें, लेकिन अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना सीखें। तभी हम एक संतुलित और खुशहाल जीवन जी सकते हैं।"

(यह संवाद परिवारों को मजबूत करने और भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। आइए, हम सब अपनी संस्कारशाला में बुजुर्गों से सीखने की परंपरा को फिर से जीवंत करें!)

मेडिकल के क्षेत्र में भी AI करेगा कमाल, पांच बूंद खून से उम्र का लगेगा अनुमान; विकसित हुआ नया मॉडल

तकनीक की दुनिया में AI लगातार कमाल कर रहा है। इस बीच वैज्ञानिकों ने अलग मॉडल विकसित किया है। जिसको स्वास्थ्य प्रबंधन की दिशा में बड़ी उपलब्धि के तौर पर देखा जा रहा है। आने वाले समय में एआई की मदद से केवल पांच बूंद खून से उम्र का अनुमान लगाया जा सकेगा। इसकी मदद से इससे आयु-संबंधी स्वास्थ्य जोखिमों का पहले ही पता लगाया जा सकेगा।

नई दिल्ली। अब केवल पांच बूंद खून से पता चल जाएगा कि किसी व्यक्ति की उम्र कितनी है। जापान के ओसाका विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने उम्र का अनुमान लगाने के लिए नया एआई मॉडल विकसित किया है।

यह मॉडल जन्म से लेकर अब तक के वर्षों की गिनती करने के बजाय यह मापता है कि समय के साथ शरीर में क्या बदलाव हुए हैं। इस नए तरीके में खून की सिर्फ पांच बूंदों का उपयोग करके 22 प्रमुख स्टेरायड और उनके असर का विश्लेषण किया जाता है।

स्वास्थ्य प्रबंधन की दिशा में बड़ी उपलब्धि

साइंस एडवांसेज में प्रकाशित यह अध्ययन स्वास्थ्य प्रबंधन की दिशा में बड़ी उपलब्धि है। इससे आयु-संबंधी स्वास्थ्य जोखिमों का पहले ही पता लगाया जा सकेगा और उनके अनुरूप इलाज संभव हो सकेगा।

अध्ययन के लेखक डॉ. कियुई वांग ने कहा कि हमारा शरीर होमियोस्टेसिस बनाए रखने के लिए हार्मोनों पर निर्भर करता है, इसलिए हमने सोचा कि क्यों न इन्हें उम्र बढ़ने के प्रमुख संकेतकों के रूप में उपयोग किया जाए? टीम ने स्टेरायड हार्मोन पर गौर किया, जो मेटाबोलिज्म, इम्यून सिस्टम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

रिसर्च में मिले चौंकाने वाले निष्कर्ष

होमियोस्टेसिस का मतलब है शरीर में संतुलित अवस्था को बनाए रखना। यह जीवित रहने और सही ढंग से काम करने के लिए जरूरी है। टीम ने डीप न्यूरल नेटवर्क (डीएनएन) माडल विकसित किया है। अध्ययन के सबसे चौंकाने वाले निष्कर्षों में से एक कार्टिसोल है, जो एक स्टेरायड हार्मोन है जो आमतौर पर तनाव से जुड़ा होता है।

शोधकर्ताओं ने पाया कि जब जैविक आयु लगभग 1.5 गुना बढ़ती है तो कार्टिसोल का स्तर दोगुना हो जाता है। इससे पता चलता है कि दीर्घकालिक तनाव जैव-रासायनिक स्तर पर उम्र बढ़ने को तेज कर सकता है।

रिश्तो की अहमियत...!

रिश्ते इंसान को एक-दूसरे से जोड़कर रखते हैं,
ईंट की तरह ही सुख-दुख में साथ खड़े रहते है।
गढ़ को बनाने में प्रेमरूपी सीमेंट आता हैं काम,
तब जाकर परिवार का होता हैं दुनिया में नाम।
अपनापन, स्नेह व एक-दूसरे के प्रति जिम्मेदारी,
यहां पर ही रिश्तो में काम में आती है वफादारी।

रिश्ते इंसान को एक-दूसरे से जोड़कर रखते हैं,
ईंट की तरह ही सुख-दुख में साथ खड़े रहते है।
माता-पिता बच्चों के प्रति निस्वार्थ रखते हैं प्रेम,
इस भाईचारे में नहीं होता किसी प्रकार का गेम।
भाई-बहन एक-दूजे के लिए हमेशा रहते हैं खड़े,
पति-पत्नी के रिश्ते में विश्वास,समर्पण चाहे लड़े।

रिश्ते इंसान को एक-दूसरे से जोड़कर रखते हैं,
ईंट की तरह ही सुख-दुख में साथ खड़े रहते है।
बस रिश्ते 'मैं' एवं 'मेरा' के इर्द-गिर्द न घूमने लगे,
ऐसा ही रहें तो स्नेह के प्यालों में ही झूमने लगे।
भावनात्मक होकर उन पत्थरों को भी चिरने लगे,
ज़ब इन बंधनों को जोड़ने वाले तत्व खिलने लगे!
समझती है रिश्तो की अहमियत साफ़ हो नीयत।

संजय एम तराणेकर

श्री आईजी गौशाला में रंगारंग गेर नृत्य व होली महोत्सव सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

कापरा मंडल बालाजी नगर स्थित श्री आईजी गौशाला में होली दहन एवं चंग की थाप पर रंगारंग फाल्गुणी राजस्थानी गेर नृत्य कार्यक्रम भव्य रूप से गौभक्तों व विभिन्न क्षेत्रों की गेर टीमों के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

आज यहाँ जारी जगदीश सीरवी प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष मंगलाराम पंवार, सचिव हुक्माराम सानपरा ने बताया कि श्री आईजी गौशाला प्रांगण में होली महोत्सव पर प्रवासी बंधुओं व विभिन्न क्षेत्रों की गैर टीमो द्वारा रंगारंग फाल्गुणी गैर नृत्य कार्यक्रम का राधा-कृष्णा मंदिर में दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारम्भ किया गया। मंगलाराम पंवार ने स्वागत भाषण में सभी पधारे गौभक्तों व गेर टीमों का आभार प्रकट करते हुए होली की शुभकामनाएँ दीं। होली कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जावहर नगर पुलिस स्टेशन एस. एच.ओ. एस. सैदाय्या, रामलु नायक, लक्ष्मण, गौशाला के अध्यक्ष द्वारा राजस्थानी साफा पहनाकर सम्मान किया। इस अवसर पर पधारे सम्मानित अतिथियों, विभिन्न संस्थाओं के अध्यक्षों, गेर टीमों व गौभक्तों का गौशाला के पदाधिकारियों ने पुष्प वर्षा से सम्मान किया। महोत्सव में विभिन्न क्षेत्रों की गेर टीमों ने राजस्थानी वेष-भूषा में भाग लिया। प्रमुख रूप से गडीमैसम्मा, जीडिमेटला, श्री आईजी सेवा संघ, बालाजीनगर, कोरेमुला, बालाजी नगर, दम्माईगुड़ा, रामपल्ली, मिरजालगुड़ा, एल. बी. नगर, अलवाल, रामंतापुर, करमनघाट, मल्लापुर की टीमें ने फाल्गुणी गीतों पर रंगारंग गेर नृत्य प्रस्तुत कर मनोरंजन किया।

सभी गेर टीमो के कप्तानों का मिठाई, व पुष्प वर्षा से स्वागत किया गया। अवसर पर गेरियो ने गौमाता के लिये नकद राशि की घोषणा की। गौभक्तो ने दान-पुण्य कर सपरिवार भोजन प्रसादी का लाभ लिया।

जल की व्यवस्था अनाराम राठौड़ नागाराम की तरफ से रखी। कार्यक्रम में मंगलाराम पंवार, कालूराम काग, हुक्माराम सानपुरा, नारायणलाल परिहार, ढगलाराम सेपटा, एन.आर. पटेल, डायाराम लचेटा, चोलाराम हाम्बड़, ओंकारलाल हाम्बड़, भगाराम मुलेवा, भंवरलाल मुलैवा, मोतीलाल काग, गणेशराम बर्फा, मोहनलाल हाम्बड़, भंवरलाल बर्फा, किशनलाल पंवार, माधुराम चोयल, कालुराम काग चितल, नारायणलाल आगलेचा, शंकरलाल बर्फा, पारसमल शर्मा, गिरधारीलाल चोयल, नेमीचन्द्र काग, कालुराम राठौड़, मांगीलाल परिहार, कालकार्यकारिणी समिति के सदस्यों व गौभक्तों ने सहयोग प्रदान किया। गौभक्त ओमप्रकाश पंवार, गौतम पंवार, चन्द्रप्रकाश गेहलोत, ओमप्रकाश काग, किशनलाल परिहार, बगदाराम काग, महेन्द्र सानपुरा, सोहनलाल परिहार, सोहनलाल, प्रकाश चोयल मनोहर आगलेचा, हरिओम बाबूलाल कैलाश सानपुरा गेनाराम काग, सुरेश, अनिल परिहार गौशाला में सेवा दिया। श्री श्री 1008 श्री गुल्लाराम महराज सेवा संघ मंडल हैदराबाद व्यवस्था में सहयोग किया। भोजन प्रसादी बनाने वाले रमेश का भी सहयोग रहा। मंच संचालन कालूराम काग, हुकमाराम सानपुरा ने किया। कार्यक्रम का विशेष कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। साउंड व यू-ट्यूब की व्यवस्था भगवानराम राठौड़, बबलू ने की। कार्यक्रम के आयोजन पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए पधारे सभी गौभक्तो का आभार प्रकट करते हुए अध्यक्ष मंगलाराम पंवार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

ठीक नहीं है रूपए के प्रतीक चिह्न पर विवाद (सम-सामयिक मुद्दा)

क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग विषय पर विवाद के बीच अब तमिलनाडु के सीएम एमके स्टालिन ने भारतीय रुपये के चिह्न में बदलाव करते हुए इसे भी राजनीतिक विवाद का विषय बना दिया है, वास्तव में यह बहुत ही दुखद है। कहना ग़लत नहीं होगा कि राष्ट्रीय प्रतीक को बदलना अव्यावहारिक है। सच तो यह है कि यह कदम अनावश्यक और विभाजनकारी ही कहा जा सकता है। उल्लेखनीय है कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी इस कदम को लेकर तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन पर निशाना साधा है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में तमिलनाडु सरकार ने राज्य के अपने बजट 'लोगो' में आधिकारिक भारतीय रुपये के चिह्न ' ' की जगह तमिल अक्षर ' ' का इस्तेमाल किया है। यह पहली बार हुआ है, जब किसी राज्य ने भारतीय मुद्रा रुपये के चिह्न में यह बदलाव किया है। वास्तव में, इससे पहले किसी भी राज्य की तरफ से इस तरह का कोई भी कदम नहीं उठाया गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि तमिलनाडु सीएम एमके स्टालिन के इस कदम को लेकर अब अनेक तरह के सवाल भी उठने लगे हैं। क्या यह दुखद नहीं है कि आज आधिकारिक कम्युनिकेशन(संचार) और डाक्यूमेंटेशन (दस्तावेजीकरण) में क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग एक विवाद का विषय बन गया है। भाषा को लेकर राजनीति की जानी, किसी भी लिहाज से ठीक नहीं कही जा सकती है। आखिर इससे बड़ी बात भला और क्या हो सकती है कि आज डीएमके स्थानीय भाषाओं पर हिंदी थोपने का आह्वान कर रहा है? अब सवाल यह उठता है कि क्या तमिलनाडु सीएम ने भारतीय मुद्रा के प्रतीक चिह्न को लेकर जो कदम उठाए हैं, वे ठीक और जायज हैं अथवा क्या राज्य के पास(तमिलनाडु के पास) इस तरह रुपये के चिह्न में बदलाव करने का कोई अधिकार है? सवाल है कि क्या देश भर में पिछले कई सालों से मान्य इस रुपये के चिह्न को राज्य सरकार बदल सकती है? हालांकि, यहां पाठकों को बताता चलूं कि केंद्र की तरफ से रुपये के चिह्न में बदलाव को लेकर कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश उपलब्ध नहीं हैं। ऐसे में साफतौर पर यह नहीं कहा जा सकता है कि तमिलनाडु सरकार की तरफ से यह कदम कानून का उल्लंघन है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार राष्ट्रीय चिह्न की सूची में रुपये का चिह्न नहीं है। गौरतलब है कि राष्ट्रीय चिह्न में बदलाव के संबंध में भारतीय राष्ट्रीय चिह्न (दुरुपयोग की रोकथाम) एक्ट 2005 का निर्माण किया गया है। पाठकों को यहां बताता चलूं कि इस कानून को वर्ष 2007 में अपडेट या अद्यतन भी किया जा चुका है। एक्ट के सेक्शन 6(2)(एफ) में इस बात का भी जिक्र किया गया है कि सरकार राष्ट्रीय प्रतीकों की डिजाइन में बदलाव कर सकती है। दूसरे शब्दों में कहें तो आवश्यकता समझे जाने की स्थिति में केंद्र सरकार के पास राष्ट्रीय चिह्न में कोई भी बदलाव किए जाने की शक्तियां निहित हैं। एक्ट के तहत सिर्फ राष्ट्रीय चिह्न के डिजाइन में ही बदलाव किया जा सकता है, लेकिन इसका पूरा डिजाइन नहीं बदला जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार केंद्र सरकार यदि चाहें तो वह पूरा का पूरा राष्ट्रीय प्रतीक भी बदल सकती है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारतीय राष्ट्रीय चिह्न (दुरुपयोग की रोकथाम) एक्ट 2005 में ऐसा कोई भी प्रावधान नहीं है, जो सरकार को ऐसे बदलाव करने से रोकता है। इस स्थिति में संबंधित कानून में संशोधन के बाद दोनों सदनों से पारित करवाकर पूरे राष्ट्रीय प्रतीक को भी बदला जा सकता है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 आधिकारिक भाषाओं को मान्यता प्रदान की गई है और तमिल उनमें से एक है। भारतीय मुद्रा रूपए में केवल एक प्रतीक है, जो देवनागरी अक्षर 'र' है और रोमन अक्षर की बात करें, तो वह 'आर' है। वास्तव में, भारतीय मुद्रा रुपए का यह प्रतीक देवनागरी लिपि के 'र' और रोमन लिपि के अक्षर 'आर' को मिलाकर बनाया गया है और इसमें एक क्षैतिज रेखा बनाकर इसे ' ' के रूप में स्वीकार किया गया है। यह क्षैतिज रेखा(होरीजेंटल लाइन) हमारे 'राष्ट्रध्वज' तथा 'बराबर' के चिह्न को प्रतिबिंबित करती है। गौरतलब है कि भारत सरकार ने 15 जुलाई 2010 को इस चिह्न को स्वीकार किया था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस चिह्न को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आइआइटी-बी), बॉम्बे के पोस्ट ग्रेजुएट डिजाइन डी. उदय कुमार ने बनाया था तथा डी.उदय कुमार तमिलनाडु में डीएमके के पूर्व विधायक के बेटे हैं। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि तमिलनाडु सरकार की ओर से रुपये के सिंबल पर जारी विवाद पर ' ' को डिजाइन करने वाले शख्स उदय कुमार धर्मलिंगम का बयान भी सामने आया है। उन्होंने कहा है कि- 'मुझे इस सिंबल चेंज के पीछे के कारणों के बारे में पूरी जानकारी नहीं है, संभवतः राज्य सरकार के पास परिवर्तन करने के अपने तरीके, विचार और कारण हैं। मैंने इसे 15 साल पहले डिज़ाइन किया था जब तत्कालीन केंद्र सरकार ने एक प्रतियोगिता आयोजित की थी और मैंने इसे जीता था, जिसके बाद उन्होंने इसे लागू किया और इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जा रहा है।' उन्होंने इस पर आगे यह भी कहा कि- 'मैं रुपये के प्रतीक चिह्न का डिजाइनर होने के कारण वास्तव में खुश हूँ, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि कभी इस तरह की बहस होगी। इसने बस किसी तरह ऐसा मोड़ ले लिया और अब प्रतीक चिह्न को लेकर बहुत सारी चिंताएँ चल रही हैं।' यहां यह भी गौरतलब है कि तमिलनाडु राज्य योजना आयोग के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ. जे. जयरंजन ने भी तमिलनाडु सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 के तमिलनाडु बजट में रुपये के प्रतीक चिह्न ( ) को तमिल भाषा में बदलने पर यह बात कही है कि-'हम देवनागरी का उपयोग नहीं करना चाहते। बस इतना ही।' बहरहाल, यह बहुत ही दुखद है कि अब इस सिंबल पर भाषाई राजनीति के बजाय भाषाई घृणा हो रही है। इससे बड़ी बात और भला क्या हो सकती है कि अब भाषा विवाद को बढ़ाते हुए डीएमके सरकार ने राज्य के बजट से इस सिंबल को गायब कर दिया है। इस सिंबल यानी कि चिह्न के स्थान पर अब तमिल अक्षर ' ' का इस्तेमाल किया गया है। हालांकि, यह भी एक तथ्य है कि दोनों सिंबलों का अर्थ एक ही है, लेकिन ये एक 'तमिल' शब्द है। कहना ग़लत नहीं होगा कि ये सारा का सारा मामला कहीं न कहीं भाषा विवाद से ही जुड़ा हुआ है। डीएमके यह आरोप लगा रही है कि केंद्र सरकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत राज्य पर हिंदी थोपने की कोशिश कर रही है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि केंद्र ने बार-बार यह स्पष्ट किया है कि एनईपी(राष्ट्रीय शिक्षा नीति) हमेशा भाषाई विविधता का सम्मान करती है और किसी भी राज्य पर वह कोई भी भाषा लादने का इरादा नहीं रखती है। यह विडंबना ही कही जा सकती है कि आज इस मुद्दे को लगातार सियासी रंग दिए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। वास्तव में, डीएमके और अन्य राजनीतिक दलों को, जो भारतीय मुद्रा रूपए के सिंबल को लेकर सियासत सियासत का खेल, खेल रहे हैं, उन्हें यह बात समझनी चाहिए कि भाषा-विवाद को आगे बढ़ाकर कोई भी राजनीतिक दल कभी भी अपना जनाधार मजबूत नहीं कर सकता है। यदि कोई भी राजनीतिक दल अपने राजनीतिक फायदे के लिए भाषा और क्षेत्रीय अस्मिता को लेकर आक्रामक रणनीति अपनाता है तो उसे किसी भी हाल और परिस्थितियों में जायज़ नहीं ठहराया जा सकता है। भाषा को कभी भी विवाद का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020(एनईपी-2020) में बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिये 'त्रि-भाषा सूत्र' पर बल देने का निर्णय लिया गया है तथा 'त्रि-भाषा सूत्र' तीन भाषाएँ हिंदी, अंग्रेजी और संबंधित राज्यों की क्षेत्रीय भाषा से संबंधित है। वास्तव में 'त्रि-भाषा सूत्र' में पहली भाषा मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा रखी गई है। वहीं पर यदि हम दूसरी भाषा की बात करें तो हिंदी भाषी राज्यों में यह अन्य आधुनिक भारतीय भाषा या अंग्रेज़ी होगी तथा गैर-हिंदी भाषी राज्यों में यह हिंदी या अंग्रेज़ी होगी। बहरहाल, यहां यदि हम तीसरी भाषा की बात करें तो यह हिंदी भाषी राज्यों में यह अंग्रेज़ी या एक आधुनिक भारतीय भाषा होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्य में यह अंग्रेज़ी या एक आधुनिक भारतीय भाषा होगी। वास्तव में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार भाषा सीखना बच्चे के संज्ञानात्मक विकास(कोगनेटिव डेवलपमेंट) का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य(प्राइमरी ओबजेक्टिव) बहुउद्देश्यीयता(मल्टीलिंग्वलिज्म) और राष्ट्रीय सद्भाव (नेशनल हार्मनी) को बढ़ावा देना है। सच तो यह है कि त्रि-भाषा सूत्र का उद्देश्य हिंदी व गैर-हिंदी भाषी राज्यों में भाषा के अंतर को समाप्त करना है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि यदि देश का कोई भी राजनीतिक दल या उसका नेता विशेष भाषा जैसे भावनात्मक मुद्दों को भुनाकर यदि अपने वोट बैंक को और सुदृढ़ करना चाहते हैं तो यह उनकी बहुत बड़ी भूल ही कहीं जा सकती है। अंत में, यही कहूंगा कि यह ठीक है कि भारत दुनिया में सबसे अधिक भाषाई रूप से विविध आबादी वाला देश है तथा भारतीय राजनीतिक पहचान के लिए भाषा बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व होती है, लेकिन भाषा की राजनीति करके, भाषाई मतभेद उत्पन्न कर उसका राजनीतिक लाभ उठाना ठीक नहीं ठहराया जा सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह भाषा ही होती है जो किसी भी देश की राष्ट्रीय एकता और स्वायत्तता दोनों को ही प्रभावित करती है। अतः हमें यह चाहिए कि भाषा के नाम पर राजनीति नहीं करें और अपने स्वार्थों को त्यागते हुए देश के उन्नयन और प्रगति, विकास के लिए सामूहिकता से देश हित में काम करें।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

सरायकेला उपायुक्त कार्यालय समीप प्राचीन कृष्ण मंदिर आज भी उपेक्षित ?

डी0एम0आफिस गोचर जमीन पर ? ओडिया पत्रकार/जानकार नदारद क्यो !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला। पूर्व में झारखंड स्थित यह जिला ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा जहां के मूल निवासी ओड़िया और उसके भगवान सोलह कला युक्त कृष्ण / जगन्नाथ रहें हैं। जिनकी उन सोलह कलाऐं, ओडिया भाषा में वही नाम - सढैंयकला अपभ्रंश स्वरूप सरायकेला हुआ। पर यहां कृष्ण किस कदर उपेक्षित है देखें इस प्राचीन राधा कृष्ण मंदिर की एक झलक। आजाद मुल्क में केंद्र के साफ निर्देश के बाबजूद अगर होली के पूजन उत्सव पर उसके भगवान कृष्ण उपेक्षित रखे जाते हों तो साजिश कितनी भयावह चली आजादी के बाद सरायकेला, खरसावां, सिंहभूम ओडिया भाषी इलाके में सहज अंदाजा लगाया जा सकता। यह स्थिति वयां करती है सरायकेला उपायुक्त कार्यालय ठीक पीछे कांकडा गांव का प्राचीन व ऐतिहासिक राधाकृष्ण की उपेक्षित एक प्राचीन मंदिर। बताया जाता है कि उस मंदिर को लेकर उपायुक्त कार्यालय समीप तलाब का नामकरण यमुना बांध, उनके गायों की गोचर जमीनें जहां उपायुक्त कार्यालय खड़ा है वह मंदिर की कभी अंचल संपत्ति रही। अगर यही बात वृन्दावन या जगन्नाथ धाम पुरी मे होती तो संभवतः हंगामा मचना तय था। पर यहां तो ओडिया भाषा, धार्मिक सांस्कृतिक उनके रिवाज नेस्तनाबूद कर बना आधुनिक सरायकेला है। यह सबूत है जहां ईमानदारी पूर्वक आवाज उठाने वाले नेता कम और चम्मच, दलाल ज्यादा है।

अतीत में दूसरी सदी में यह इलाका उत्तर कलिंग भू प्रदेश रहा जब कलिंग के सम्राट खारवेल हुआ करते थे। फिर इधर आजसे 77 वरष पहले तक ओड़िशा का एक देशी ओडिया रियासत रहा। फिर केंद्र मे ओडिशा में रखे जाने हेतु विलय के बाद ओडिशा का एक राजस्व जिला बना। आजाद भारत में सर्वप्रथम बड़े पैमाने पर षड्यंत्र के तहत ओडिशा से बिहार में लाकर ओडिया भाषा संस्कृति उन्मूलन करने वाला इलाका के रूप में लम्बी इतिहास अटा पड़ा है। कमोवेश पुनः 2000ई से अबतक झारखंड में भी वही हो तो किसे दोषी मानेंगे आप।

हम अगर मूलवासी ओड़िया लोगों की जमीन हड़प, जमीन के बदले उद्योग धंधा के नाम रोजी रोजगार दिलाने की दिखावे की मुहिम छोड़ भी दें तो अब उनके पहचान तक को मिटाने की कार्यक्रम बड़े चालाकी से जारी है। अब उस लावारिस पड़ा राधा कृष्ण देवता की ज़मीनें, अचल संपत्तियां, यहां तक की मंदिर व देवता तक को तत्कालीन बिहार अब झारखंड सरकार ने नहीं छोड़ा है। बताया जाता है कि आजादी के पहले यहां उत्कलीय परंपरा अनुसार होली के अवसर पर दोलयात्रा होते थे, आजादी के बाद सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। इतना तो जरूर है कि जब झारखंड गठन के बाद प्रथम उपायुक्त बंदना डाडेल मौजूदा उपायुक्त कार्यालय के जमीन पर नये कार्यालय का निर्माण करवा रही थी तब उसका जोरदार विरोध इस बात के लिए

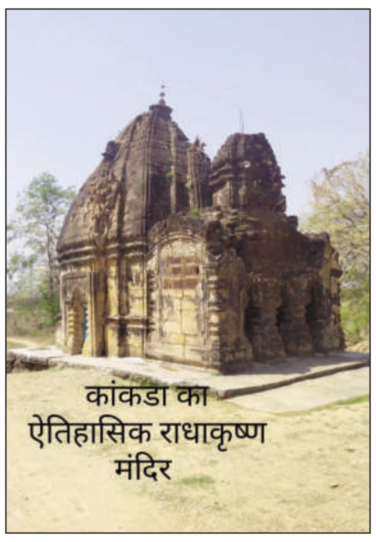

कांकडा का ऐतिहासिक राधाकृष्ण मंदिर

की गयी थीं कि यह गौचर जमीन रही। जी हां बिल्कुल राजवाड़े काल खंड तक उस कन्हैया का था जिनके ग्वाल वाल यहां गायें चराते थे, नाम यमुना बांध। जी हां जम की वहन व कृष्ण की बाल सहचरी की पानी से कृष्ण का जो संबंध उत्तर भारत की आध्यात्मिक भावना से जूडी है वहीं दिखती थी कभी याहां।

इधर सभी संस्कृति का संरक्षण देने हेतु 1948 के बाद अनेक पत्र सरदार पटेल के निर्देश में उस मार्जार एग्रीमेंट के आलोक में तत्कालीन राज्य सरकार को दिये गये है जहां सरायकेला रहा। उन निर्देशों को बिहार व झारखंड ने रद्दी टोकरी में डाल दिया है। स्थिति का भयावह चेहरा है सरायकेला की ओड़िआ जन मानस की समस्या व भगवान से है। वैसे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को संभवत यह मालुम नहीं पर वे स्थानीय मुलवासी ओडिया पत्रकारों, लेखको, जानकारों को कितना जानते उन्हें कितना तरहीज देते आज आत्म निरीक्षण का वक्त है। जिन्हें उनके पिता पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन एवं झारखंड मुक्ति मोर्चा के 80 दशक के नेताओं से भली भाती अवगत होना चाहिए, अन्य कांग्रेसी नेताओं से भी। वे लोग भली भाती तब तक सुने जब बिहार विभाजन विल पर केंद्र ने झारखंड में ओड़िया उत्थान, भाषा, संस्कृति संरक्षण आदि पर लोकसभा राज्यसभा में निर्देश दिये, उसके कार्यवाही में आज भी अवलोकन किया जा सकता है।

और तो और उत्कलीय परंपरा को अक्षुण्ण रखना जिन अधिकारियों के कंधे पर भार है वे ही स्थानीय ओडिया पत्रकारों, लेखकों, जानकारों को दरकिनार कर सरकार व प्रशासन को बड़ी चालाकी से चलाते हैं आज। उसमें अधिकांश अब्बल दर्जे के भ्रष्ट अभियंता, अधिकारी ही है जो सरकार को गुमराह कर बड़े कांड तक करवा चुके हैं। भला यह कौन सा लोक तंत्र का स्वरूप है? जहां भारतीय अधिराज्य विलय दस्तावेज भी शर्मशार हो जाय? इसपर भारत सरकार, ओड़िशा सरकार को झारखंड में रह रहे अल्पसंख्यक ओडिया भाषियों के हित में 1947 मे हस्ताक्षरित इंस्ट्रूमेंट ऑफ़ एक्सेशन के आलोक में अविलम्ब कदम उठाने चाहिए।।

रंगों के त्योहार होली पर ओडिशा में व्यापक हिंसा देखी गई; राज्य में पांच लोगों की मौत हो गई

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: खुशी के रंग फैलाने के बजाय, होली का त्योहार ओडिशा में अंधकारमय हो गया है। क्योंकि शनिवार को राज्य के विभिन्न हिस्सों से पांच हत्याएं हुईं, जिनमें राजधानी भुवनेश्वर में दो हत्याएं शामिल हैं। होली समारोह के दौरान कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस द्वारा कई कदम उठाए जाने के बावजूद, इस नृशंस हत्या ने पुलिस की प्रभावशीलता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। स्मार्ट सिटी भुवनेश्वर में होली समारोह के दौरान दो हत्या के मामले सामने आए हैं। शहीद नगर के पास शांतिपाली बस्ती में एक युवक की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई। जानकारी के अनुसार, उक्त युवक का चार अन्य युवकों से झगड़ा हुआ था। मौखिक लड़ाई ने जल्द ही खतरनाक रूप ले लिया और बदमाशों ने युवक की चाकू घोंपकर हत्या कर दी। हमले में मृतक की पत्नी भी गंभीर

रूप से घायल हो गई और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। एक अन्य घटना में शहर के मंचेश्वर थाना अंतर्गत समीगड़िया इलाके में एक व्यक्ति की हत्या कर दी गई। मृतक का नाम अंशुमान पति है। रिपोर्ट के अनुसार, पति का बदमाशों ने पीछा किया और सड़क पर चाकू घोंपकर उसकी हत्या कर दी।

संबलपुर में हत्या। इसी तरह, होली समारोह के दौरान संबलपुर के साहू कॉलोनी में एक अन्य युवक की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई। मृतक का नाम आदित्य सलमा है। रिपोर्ट के अनुसार, साहुल सिंह नामक व्यक्ति ने सलमा को होली खेलने के लिए अपने घर बुलाया और उसकी चाकू घोंपकर हत्या कर दी। परिणामस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। हत्या के पीछे पुरानी दुश्मनी का कारण होने का संदेह है। संबलपुर के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अजय मिश्रा ने कहा, सिंह द्वारा चाकू मारे जाने से सलमा गंभीर रूप से घायल हो गई। उन्हें तुरंत जिला मुख्यालय अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। हमने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है और हत्या में प्रयुक्त हथियार भी बरामद कर लिया है। इस घटना की आगे की जांच जारी है।

ब्रह्मपुर में ठेकेदार की हत्या

इसी तरह ब्रह्मपुर के लांजीपाली चाणक्यनगर में एक ठेकेदार को पूर्व रंजिश के चलते चाकू मार दिया गया। उन्हें तुरंत एमकेसीजी मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल ले जाया गया लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। होली समारोह के दौरान अंगुल में युवक की हत्या। अंगुल के नखरा साही में एक युवक पर बेरहमी से हमला कर उसकी हत्या कर दी गई, जिससे ओडिशा में होली समारोह के दौरान हिंसक घटनाओं की संख्या बढ़ गई।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023